Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

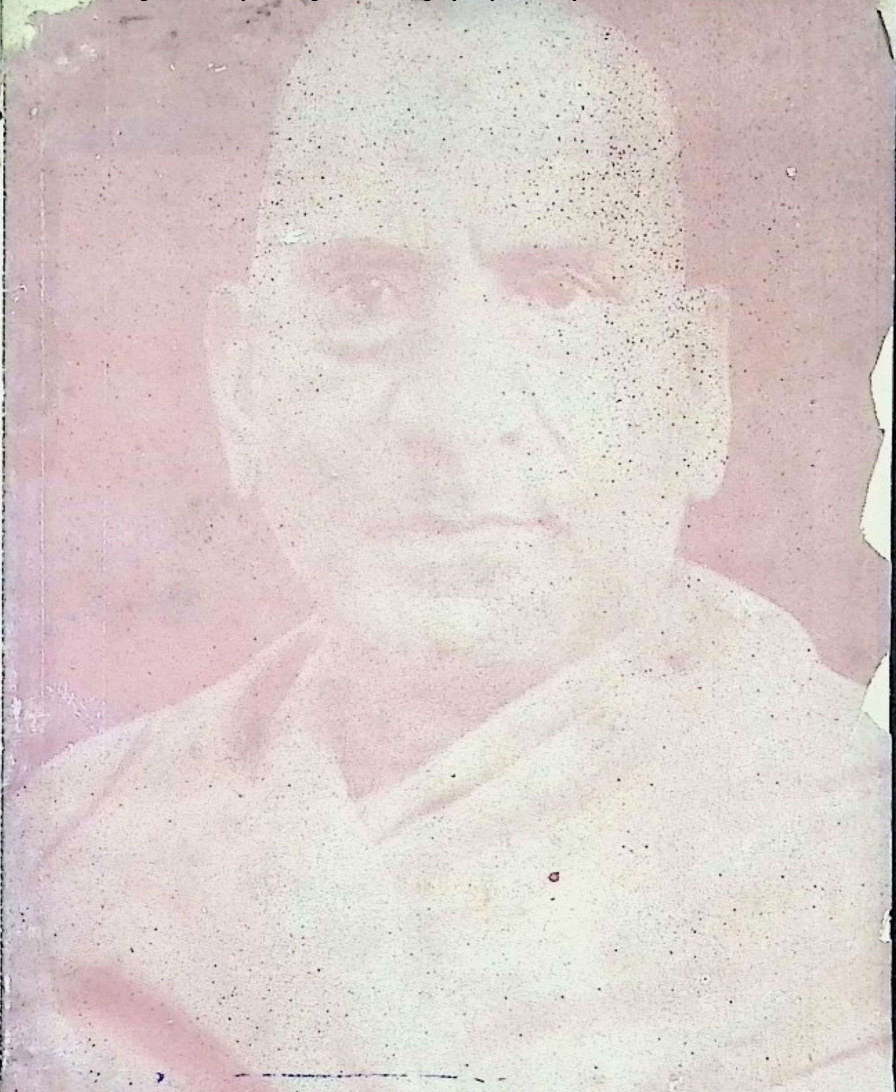

जन ज्ञान

(मासिक)

दिसम्बर १९७१
पौष संवत् २०२८
मूल्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

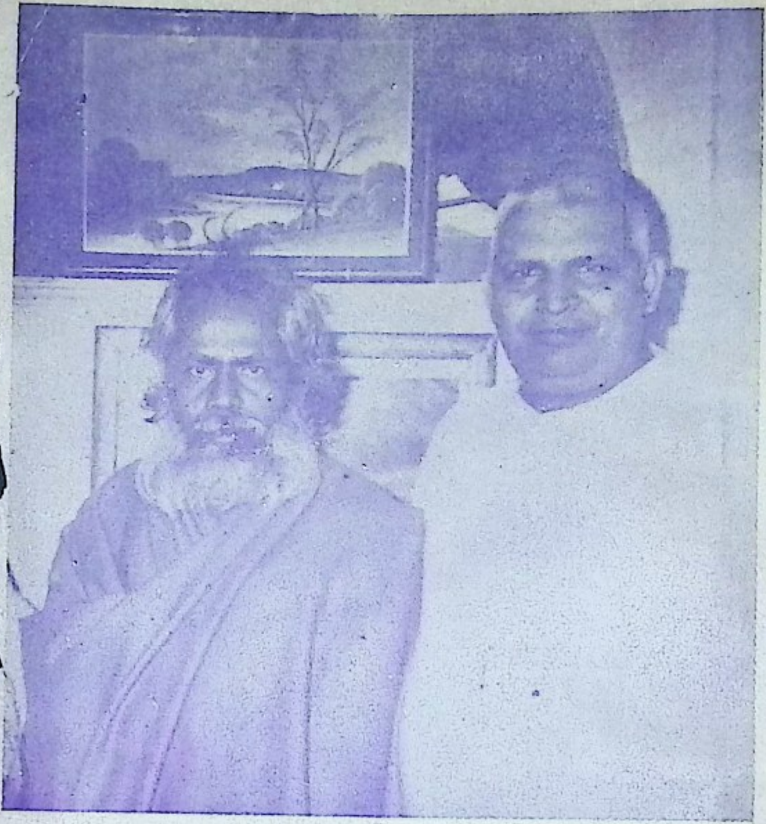

आर्य समाज के सर्वाधिक लोकप्रिय वक्ता

श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी

[भू. पू. श्री रामजीप्रसाद गुप्त मुगलसराय]

१६ वर्ष के पश्चात् मिले। दयानन्द-संस्थान के कार्यों को देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। आप ने संस्थान के कार्यों की सफलता के लिए सहयोग का आश्वासन भी दिया। संप्रति १०१) वार्षिक देकर सचालक सदस्य बनना स्वीकार किया। चित्र में वे संस्थान के संचालक पं० भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार के साथ खड़े हैं। संस्थान उनका आभारी है।

—संपादक

Dr. Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द-संस्थान
नई दिल्ली का
मुख-पत्र

महर्षि दयानन्द
के महान् लंक्ष्य
की पूर्ति हेतु
कृत-संकल्प

संरक्षक
चौ० प्रतापसिंह

संपादक
राकेश रानी
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाई वाला
करौल बाग] नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६६६३९

मूल्य	१)
वार्षिक	१०)
विदेश में	१ पौंड
आजीवन	२०१)

वर्ष ४ : अंक ८

क्रान्ति के लिए 'अग्नि' का आवाहन

संसार में इतना कूड़ा करकट जमा हो चुका है, मतभेद की इतनी दीवारें बन गई हैं कि अब क्रांति का विगुल बजाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग है ही नहीं —

जाति-मत-मजहब की ज्वालाओं ने, देश-देश के मध्य खड़े राष्ट्र वाद की नागफरिगयों ने, मनुष्य को क्रूर पशु के रूप में बदल दिया है। ज्ञान और विज्ञान का प्रयोग या तो मनुष्य को पंगु बनाने के लिए हो रहा है या उस के विनाश हेतु।

मानव जाति के इस महानाश को रोकने के लिए आर्य समाज की स्थापना हुई थी और आर्य समाज के इस कार्य की पूर्ति के लिए ही 'दयानन्द-संस्थान' स्थापित हुआ है।

हम 'अग्नि' का आवाहन करते हैं, क्रांति के लिए। वीरों को बुलाते हैं संघर्ष के लिए। क्रांति का आरम्भ बलिदान से होगा। कोई क्रांति कभी भाषण, प्रदर्शन और मालाओं से नहीं होती। क्रांतियों के इतिहास उठा कर देखो, बिस्मिल, भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के जीवन पढ़ो, उन्होंने भाषण नहीं दिए, मालाएं नहीं पहनीं, वे तिल-तिल कर जले और पहना तो केवल फांसी का फंदा।

ऋषि दयानन्द के लक्ष्य, विश्व में वैदिक विचारधारा का साम्राज्य स्थापित करने के लिए, ऐसे वीर शिष्य चाहिए जो नींवके पत्थर बन सकें, जला सकें धरती का सारा कूड़ा और इसके लिए स्वयं भी जल सकें।

'दयानन्द की जय' के लिए 'दयानन्द-संस्थान' दयानन्द के सच्चे शिष्यों को जीवन भर जलने और मृत्यु के स्वागत के मार्ग पर चलने का निमन्त्रण देता है। कौन स्वीकार करेगा......यह निमन्त्रण ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"सत्यार्थ-प्रकाश" शताब्दी के उपलक्ष्य में

दयानन्द-संस्थान भेंट करता है :

सत्यार्थ-प्रकाश

—उपहार-संस्करण—

जैसा पिछले सौ वर्षों में नहीं छपा

इसमें सर्वश्रेष्ठ कागज लगेगा, बढ़िया पूरी कपड़े की जिल्द होगी

उत्तमोत्तम छपायी : सर्वशुद्ध प्रकाशन

१८×२३/८ साइज में

और यह उपहार संस्करण आप सभी को भेंट में दे सकेंगे

प्रत्येक आर्य इसे देखकर गौरव अनुभव करेगा

इसकी लागत ५) होगी किन्तु प्रचार की दृष्टि से हम इसे केवल ३)२५ में भेंट करेंगे

कृपया अंकित कर लें ३)२५ में उन्हें ही दिया जायेगा, जिन का आदेश **३१ दिसम्बर १९७१ तक** जन-ज्ञान कार्यालय में आ-जाएगा। ३१ दिसम्बर के बाद मूल्य ५) होगा।

सत्यार्थ प्रकाश शिवरात्रि १९७२ तक आप को मिल जाएगा

जो उत्साह ऋषि जीवन में दिखाया है वह और भी उभरना चाहिए

आज ही अपना आदेश धन सहित भेजिए

—व्यवस्थापक

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

शैतान को मारो !

शैतान चारों ओर अपना राज्य स्थापित कर चुका है। हम जहां भी जाते हैं उस की छाया स्पष्ट या अस्पष्ट दिखाई पड़ती है। वह धर्म स्थानों में भी विद्यमान है और विद्या मंदिरों में भी। घर में भी, बाहर भी, हमारे मन में भी। शैतान के प्रभाव से अधर्म ही 'धर्म' के रूप में सर्वत्र विचरण कर रहा है।

१९७२ के स्वागत की तैयारी संसार कर रहा है। ७१ जा रहा है, जाते हुए वर्ष की घटनाएँ आते हुए वर्ष के लिए यही संदेश दे रही हैं कि मारो शैतान को। शैतान का अर्थ है अधर्म। अधर्म का रूप है, झूठ, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ और भोगवाद।

इस शैतान ने मनुष्य को अंधा ही नहीं बहरा भी बना दिया है। हमारा विवेक और देखने-समझने की शक्ति नष्ट हो चुकी है। यह स्थिति मनुष्य के पतन की पराकाष्ठा बन कर हमें पीड़ा दे रही है।

इसी पीड़ा ने देव दयानन्द को समाधिसुख त्याग जन मानस को झकझोरने की प्रेरणा की थी। इसी शैतान की समाप्ति के लिए आर्य समाज भी स्थापित हुआ था और आज हम भी आप के द्वार पर इसी शैतान को समाप्त करने की प्रार्थना लेकर उपस्थित हैं।

समय की मांग है 'युद्ध', पर युद्ध किस से, व्यक्ति या वर्ग विशेष से नहीं, उन भावों से, जिन्होंने मनुष्य को पशु बना दिया है। मानव मात्र को आर्य बनाने के प्रभु आदेश का सीधा अर्थ भी यही है कि सब ईश्वर के पुत्र बनें, उसी की राह पर चलें। हम में असुर भाव न आएं, हम 'देव' बनें।

दूसरों की उन्नति देख कर प्रसन्न होना देवता का और द्वेष करना असुरों का काम है। झूठ-पाखंड और मत-वादों में उलझना मनुष्य का कार्य नहीं। मनुष्य तो "आत्मवत् सर्व भूतेषु" की भावना के अनुसार कार्य करता है। किन्तु आज तो स्थिति बिगड़ चुकी है। चारों ओर ऐसा अन्धेरा छाया है कि 'ज्ञान' लुप्त हो रहा है। अज्ञान के विषधर फन फुंकार कर सर्वत्र विष प्रभाव फैला रहे हैं।

किन्तु आर्य, प्रभु का पुत्र निराश कभी नहीं होता। वह निर्भय और अपने पथ पर सदा अडिग रहने वाला, तूफानों से टकराने का साहस रखता है। हमारा निमंत्रण तो 'आर्य' बन्धुओं को है, वे जागें, प्रभु के विश्वास और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बल पर युद्ध घोषणा करें—शैतान के विरुद्ध। जहां भी अधर्म हो, पाखंड हो, अज्ञान और अंधेरा हो वहीं युद्ध करें, सत्य के लिए, धर्म के लिए।

युग का प्रहरी सो रहा है किन्तु यह नींद सर्वनाश का निमंत्रण है। हम ऋषि दयानन्द के अनुयायियों को गहरी नींद से जगाना चाहते हैं। राम-के कृष्ण वंशजों के हाथ में फिर से धनुष-चक्र देखना चाहते हैं। असुरों के संहार के लिए प्रत्येक आर्य राम-कृष्ण बने, यह हमारी इच्छा है।

भावना में शक्ति है। संकल्प ही प्राण हैं। मेरे भाई! इन पंक्तियों को पढ़कर छोड़ना नहीं, सोचना एक बार, क्या है कर्त्तव्य तुम्हारा......हमारी प्रार्थना में, कामना में यदि बल होगा तो ऋषि के अनुयायी जागेंगे, अपना कर्त्तव्य पहचानेंगे और विजयी होंगे।

आशा और विश्वास से शैतान की समाप्ति हेतु कर्म का निमंत्रण दे रही हूँ—

देवी जागरण का चक्र

देश के अधिकांश भागों में विशेषकर, उत्तर भारत में 'देवी जागरण' की धूम है। रात्रि जागरण के इस प्रवाह ने एक ऐसी लहर धर्म के नाम पर पैदा कर दी है जिसे यदि समय रहते न रोका गया तो भीषण परिणाम होंगे।

वाममार्ग में जिस भ्रष्ट आचरण की गंध आती थी उस का कुछ रूप "देवी-जागरण" की पद्धति में भी प्रगट हो रहा है। शोर मचाकर भगवान को रिझाने की बात सस्ती मुक्ति की भावना से सर्वत्र जड़ पकड़ रही है। हर पाप का नाश देवी दर्शन से होने के भाव ने पाप मार्ग पर चलने का लाइसेंस ही दे दिया प्रतीत होता है।

हमारा सभी आर्य समाजों से सानुरोध निवेदन है कि वे अपने प्रचार द्वारा 'देवी-जागरण' के प्रवाह को रोकें। इसके विरुद्ध ट्रैक्ट बांटें और पत्थर की माता की पूजा के स्थान पर अपने माता-पिता की सेवा का, प्रभु भक्ति का सीधा मार्ग दिखा जनता का पथ प्रदर्शन करें :—

—राकेश रानी

वी. पी. न मंगाएं

यदि हमारे सदस्य गण वी. पी. मंगाने की आदत छोड़ दें तो प्रतिवर्ष हजारों रुपया बच सकता है। अनेक बार प्रार्थना करने पर भी इधर ध्यान कम दिया जाता है। क्या आशा करें कि आर्य भाई इस ओर ध्यान देंगे—

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"दयानन्द संस्थान" के नाम पट्ट को लगाते हुए आर्य समाज के तपस्वी संन्यासी श्री **स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती**

पीछे खड़े हैं संस्थान के कार्यकर्ता अशोक कुमार, दूसरी ओर संस्थान के संचालक पं० भारतेन्द्रनाथ व श्रीमती राकेश रानी संपादक 'जन-ज्ञान' हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

दयानन्द - संस्थान

१५६७
हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

—:अपने मान्य सदस्यों से:—

मान्यवर !

सादर नमस्ते ।

'दयानन्द-संस्थान' की स्थापना का समाचार आप नवंबर अंक में पढ़ चुके हैं। महर्षि दयानन्द के महान कार्यों की पूर्ति के लिए कृत-संकल्प यह संस्थान अब आप का आशीर्वाद चाहता है। गुरुदेव के लक्ष्य विस्तार के लिए उदारता पूर्वक उत्साह से, इसे शक्तिशाली बनाइए।

आप की जैसी भी स्थिति हो उस के अनुसार आप संस्थान के सदस्य बनिए—

१००१) प्रतिवर्ष देकर "संरक्षक-सदस्य",
१०१) प्रतिवर्ष देकर "संचालक-सदस्य",
५१) प्रतिवर्ष देकर "सहायक-सदस्य",
२५) प्रतिवर्ष देकर "सहायक-सदस्य" बनें।

हम इस समय इतना ही कह सकते हैं कि आप जितना भी सहयोग देंगे कार्य उतना ही होता चला जाएगा।

आशा और विश्वास के साथ शुभकामनाओं सहित

आपका
भारतेन्द्र नाथ
संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र नाथ

हृदय में उठती तरंगें जीवन की गति का आधार हैं। मन रूपी कमल में भौंरा बन्द है और संभवतः संज्ञा शून्य भी। चेतना उस से दूर है, इस लिए मन निर्मल नहीं, तरंगें प्राणवान नहीं, अन्यथा विश्व की सब से बड़ी शक्ति 'मन' ही तो है।

मन के शिवसंकल्पों के लिए वेद की ऋचाओं का संदेश आपने भी तो सुना होगा, किन्तु संकल्प भले ही उठते हों पर वे 'शिव' नहीं हो पाते, क्योंकि भौंरा संगीत नहीं गुनगुना रहा। 'प्राण' सुप्त हैं, उन का उत्थान जागरण से ही संभव है।

मन-मन्दिर स्वच्छ नहीं है। वहां बैठने का स्थान नहीं है। इसलिए "मैं" उलझ चुका हूं। क्योंकि वही तो एक मात्र ऐसा स्थान है, जहां बैठकर "मैं" अपने "प्रिय" से मिल सकता हूं। मन-मन्दिर में झाड़ू लगाने की बात मैंने भजनों में भले ही सुनी हो पर व्यवहार में ला नहीं सका, इसीलिए मैं 'सत्य' से दूर हूं।

मन में बैठूं कैसे ? वहां तो ज्वार उठा है। कभी शांत ही नहीं होता। मन से अधिक चंचल और क्या है ? मैं सदा उस से परेशान हूं, पर क्या करूँ, उसके वश में हूं, उसे वश में कर सकूं, यह सामर्थ्य "मैं" अपने में उत्पन्न नहीं कर सका।

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्ककरम्॥

योगीराज कृष्ण के शब्दों में भी मन चंचल है, मनुष्य को मथ डालता है, अतः बहुत बलवान है। जैसे वायु को दबाना बहुत कठिन है वैसे ही मन को वश में करना भी बड़ा कठिन है।

तो क्या करें ? हम मन से हार जाएं, पतवार उस के हाथ में छोड़ दें··· ·········नहीं ऐसा करने पर तो वह हमें पता नहीं किस अग्निकुंड में पटक देगा। मन को जीते बिना तो हम मनुष्य नहीं बन सकते। किसी ने कहा भी है।

मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्वं जगद्वशे।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वं जगतो वशे॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस ने मन को वश में कर लिया उसने संसार भर को वश में कर लिया, किन्तु जो मनुष्य मन को न जीतकर स्वयं उसके वश में हो जाता है, उसने सारे संसार की गुलामी स्वीकार कर ली······

कवि मन से कहता है—

पतितः पशुरपि कूपे निःसर्तुं चरणचालनंकुरुते ।
धिक त्वां चित्त, भवाब्धेरिच्छामपिनोबिभर्षिनिःसर्तुं म ।।

कुंए में गिरा हुआ पशु भी उसमें से निकलने के लिए पैर चलाता है किन्तु हे मन तुझे धिक्कार है कि तू भवसागर से निकलने की इच्छा भी नहीं करता ।

तो फिर कैसे जीतें इस मन को—इन्द्रिय निग्रह से । इन्द्रिय निग्रह कैसे हो ?—स्वाध्याय से । स्वाध्याय का अर्थ सत्य ज्ञान ।

सत्य ज्ञान से तात्पर्य है जीवन का रहस्य जानना । यह शरीर सदा नहीं रहेगा । नष्ट होगा, कब, एक पल का भी तो भरोसा नहीं । अतः रे मन, तू इस सत्य को समझ और भोग के स्थान पर अपने से नाता जोड़ । रे मन ! तू यह जान कि तू तब तक ही है जब तक 'मैं' हूं । मैं गया तो तू कहां रहेगा, इसलिए भटकना छोड़ और मुझे जान ।

'मैं' शरीर का स्वामी हूं, तू नहीं । इसलिए तू शान्त हो जा और मेरे लिए आसन बिछा । मैं तुझ में बैठूंगा तो तेरा भी कल्याण होगा और मुझे भी तेरा लक्ष्य मिल जायगा ।

उत्ताल तरंगों पर कुलांचे मारते हुए मन ! अब शान्त हो जा । मैं तुझे अशान्ति से मुक्ति दिलाऊँगा । मैं तेरी उद्दाम लालसा को समाप्त कर तुझे पवित्र कर वह प्रकाश दूंगा कि तू सदा मेरे लिए अपना आसन रिक्त रखेगा ।

प्यार-दुलार और श्रद्धा से मन को जीतो । मन-मन्दिर में आसन लगा कर तुम्हें फिर और कुछ पाने को नहीं रहेगा । अपने प्रभु से मिल तुम वह सब कुछ पालोगे जिसे पाने के लिए तुम जन्म जन्मान्तरों तक भटकते रहे हो ।

नारों की राजनीति

भारत नारों का भक्त बन चुका है । यहां की नीति-रीति नारों से ही चलती है । नारों का अर्थ है झूठे वायदे, कभी न पूरे होने वाले आश्वासन, कल्पित इन्द्रजाल ।

पिछले दिनों भारत की प्रधान मंत्री ने "गरीबी-हटाओ" का जोरदार नारा लगाया । गरीबी तो नहीं हटी पर चमत्कार देखिए नारे का कि इन्दिरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जी जम गयीं, ऐसी जमीं कि उखड़ने का प्रश्न ही नहीं। देखा कमाल नारे का अब सच बोलने वाले देश भक्त भाड़ झोंकें, नारे का जादू तो चल गया।

नारे बाजी के प्रभाव प्रवाह से आर्य समाज भी नहीं बचा। दो पैसे के गेरु से कपड़े रंग कर कुछ व्यक्तियों ने नारा लगाया, 'आर्य राज्य का' और आर्य जनता बहक गयी। किसी ने न जांचा-परखा, न सोचा कि 'आर्य राज्य' कहते किसे हैं? उसकी परिभाषा क्या है? वह स्थापित कैसे होगा·········जो स्थापित कर रहे हैं वे स्वयं भी आर्य हैं या नहीं······इन बातों से किसी को क्या मतलब······मतलब है सिर्फ नारे से······नेतागिरी से······जयकारों से।

'धर्म' का आधार नारा नहीं, व्यवहार है। राजनीति का आधार धर्म हो तो "आर्य-राज्य" की आधारशिला रखी जा सकती है पर नारों के बल पर 'आर्य-राज्य' का स्वप्न वैसा ही है जैसा इन्दिरा जी का 'गरीबी हटाओ' का नारा। 'वेद', सत्यार्थप्रकाश और धर्म के आधार भूत तत्वों को भुलाकर कहां पहुंचेंगे, यह तो समय ही बताएगा, किन्तु ऋषि दयानन्द के अनुयायियों को नारों के चक्कर में फंसे देख कर हमारा मन कहता है कि आज आर्य समाज में और सब कुछ है सिवाय 'आर्यत्व" और 'ऋषि भक्ति' के। सबको अपनी जय की पड़ी है, कोई भी ऋषि दयानन्द की जय के लिए कुछ करने को तैयार नहीं।

आंखें होते हुए भी हम देखने की शक्ति खो चुके हैं। हमारा विवेक नारों के हवाले, हमारी बुद्धि पदों के लिए, हमारी शक्ति प्रदर्शनों में। 'वेद' शास्त्र, धर्म और क्रान्ति जाएं भाड़ में, हम तो नारे लगा कर मौज उड़ाएंगे, काम कोई क्यों करे, जब बिना काम के ही लीडरी मिलती है।

आर्य समाज संगठन फूट, द्वेष और नारे बाजी का शिकार होकर बिखर चुका है। कोई अनुशासन है न मर्यादा, न श्रद्धा है न विश्वास······बस नारे बाजी जिन्दाबाद।

अभी हाल में राजधानी की तीन घटनाएं हमारे सामने हैं। ऋषि दयानन्द को श्रंद्धाजलि हेतु विराट सभा, वहां उपस्थित थे हमारे सर्वोच्च संगठन के सर्वोच्च नेता, वे बैठे रहे। ऐरे गैरे श्रंद्धाजलि देते रहे पर उन्हें किसी ने पूछा ही नहीं। एक और उत्सव में भी लगभग यही क्रम रहा—भाषण किसी का, बोल गया कोई और······

तात्पर्य कि जीवन भर आर्य समाज की सेवा करना व्यर्थ·········आर्य समाज के सर्वोच्च पद का कोई सम्मान नहीं······सम्मान मिल सकता है नारे लगाने वालों को······जो जितना बड़ा झूठ उपस्थित कर सके वह उतना बड़ा नेता······

एक घटना और, एक महान् संन्यासी की कथा······कथा के अन्त में एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
प्रसंग-प्रसंग में समाज के प्रधान बोले—स्वामी जी भी तो झूठ बोल सकते हैं··· जिनकी स्टेज पर प्रशंसा, उनके प्रति हृदय में यह भाव······आखिर क्या होगा हमारा······

हमें ज्ञात है कि आज कोई भी हमारी बात नहीं सुनेगा, फिर भी हम अपनी बात इसलिए कह रहे हैं कि रक्षा का और कोई मार्ग नहीं। बावू पंथी व्यक्तियों के नेतृत्व ने हमें वहां ले जा कर पटक दिया है, जहां से उठने के लिए हमें कई ऋषि दयानन्द और श्रद्धानन्द पैदा करने होंगे।

झूठ और सच का अन्तर समझने की शक्ति जब तक हम में नहीं आती तब तक नारे बाजी चलती रहेगी, और आर्य समाज मिटता रहेगा·········

श्रद्धा का अभाव

'धर्म' का आधार यदि 'ज्ञान' है तो उसकी संचारिणी शक्ति निहित है 'श्रद्धा' में—ज्ञान और श्रद्धा को हम धर्म के दो पैर कह सकते हैं। एक के भी कट जाने पर धर्म पंगु, श्री विहीन हो जाता है।

तर्क 'ज्ञान' प्राप्ति का साधन है किन्तु ज्ञान प्राप्ति में 'श्रद्धा' का मिश्रण न हो तो ज्ञान अधूरा है, वह 'धर्म' की प्रसार प्रेरणा नहीं बन सकता। प्रभु भक्ति और आस्तिकता का नाम लेने वाले प्रायः एकांगी पाए जाते हैं, य तो उन्हें ज्ञान नहीं होता या उनमें श्रद्धा नहीं होती।

महर्षि दयानन्द 'धर्म' के दोनों अंगों से पूर्ण थे। उन में ज्ञान और श्रद्धा का, सत्य और आस्तिकता का ऐसा मिश्रण था कि जिसकी उपमा नहीं। किन्तु उनके पश्चात् आर्य समाज केवल ज्ञान का प्रसार रह गया, श्रद्धा भाव का धीरे-धीरे लोप होता गया। आरम्भ में ऋषि के जिन अनुयायियों में श्रद्धा और ज्ञान दोनों का बल रहा, वे अपने-अपने कार्यों में अत्यन्त सफल हुए, किन्तु धीरे-धीरे 'श्रद्धा' विदा होती गयी और हम सिकुड़ते गए।

आर्य समाज के पास वह महान् सत्य ज्ञान था, जिस से संसार के सब रोगों का सारी समस्याओं का हल हो सकता था किन्तु श्रद्धा के अभाव में यह अमृत व्यर्थ जा रहा है। प्रश्न उठ सकता है कि श्रद्धा किस के प्रति······ उत्तर सीधा और सरल है, अपने प्रति। अपने पर विश्वास तब होगा, जब अपने पर 'श्रद्धा' होगी, अपने प्रभु पर श्रद्धा होगी।

प्रभु का नाम लेते हुए भी हम उससे दूर हैं, प्रभु के प्रति श्रद्धा भी हम से दूर है। हम भटक रहे हैं 'श्रद्धा' के बिना। श्रद्धा का अर्थ है ज्ञान पर विश्वास जानते हुए भी जो अपने जानने पर विश्वास नहीं कर पाता वह 'श्रद्धा' से दूर है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'श्रद्धा' वह ज्योति है जो ज्ञान से मिलकर अमोघ अस्त्र का कार्य करती है। 'श्रद्धा' विजय की मेरुदंड और निर्माण का ब्रह्मास्त्र है। इस तथ्य को हम समझें और श्रद्धा करें अपने पर, प्रभु पर, 'वेद' ज्ञान पर और अपने गुरु देव दयानन्द पर—

सब जाए तो जाए,
पर 'श्रद्धा' बस रह जाए।

फिर देखें कौन संसार में हमारे सामने टिकता है?

औरतों की लड़ायी

आज भारत और पाक का युद्ध अनपढ़ महिलाओं की तरह वाक् युद्ध हो गया है। कहते हैं जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। पर यहां ये गरजते भी हैं, बरसते भी हैं। सेनाएं जमी खड़ी हैं, धमकियां जारी हैं और गोला बारी भी। युद्ध की तैयारी भी है और बचने की चिन्ता भी।

पाकिस्तान का जन्म ही कुटिलताओं की कहानी है। उसका विकास विनाश के सर्जन के लिए ही हुआ है। इसलिए न उसे अपनी चिन्ता है, न किसी और की। न कोई मर्यादा जानता है, न नीति। गुंडा राज्य कैसा हो सकता है, इस का प्रत्यक्ष रूप है पाकिस्तान।

किन्तु हम, समस्या पहचानने के स्थान पर हवा में उड़ते हैं। हमारे पास न आत्म-बोध है न कर्त्तव्य पालन। स्वार्थ की राजनीति ने स्वतंत्रता के बाद भारत के गौरव का विकास अवरुद्ध कर दिया है। राष्ट्र की चेतना को उभारा नहीं, सुलाया गया है।

हमारी दृष्टि में रक्षा का कार्य, विजय की राह केवल एक है कि हम धरती पर सर्वोच्च महाशक्ति के रूप में प्रगट होने का व्रत लें। भाषण कम और काम अधिक करें। राष्ट्र की सोयी आत्मा को, राष्ट्रीयता के, एकता के स्वरों को उभारें और उस दिन के लिए अपना सब कुछ स्वाहा कर दें जब भारत की एक भृकुटि देख कर संसार थर्राए। शान्ति के लिए शक्तिशाली बनना ही होगा। कायरों का उपदेश कोई नहीं सुनता।

भारत में भारत रहे, भारतीयता रहे, भारत की आत्मा में राम-कृष्ण जागें, शिवा-प्रताप फहरें तो फिर देखें देश क्या बनता है। विलासिता, कामुकता, भ्रष्टाचार, हिजड़ापन फैल रहा है। शराब और गुंडागर्दी विकसित है। यह सब पाकिस्तान के पाप के साथी हैं।

हम घर-घर से उठती वीरता की स्वर लहरी सुनना चाहते हैं। सिनेमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हों या नाट्य शालाएं, उपन्यास हों या पत्रिकाएं सब में भारत का पावन रूप' अमृत रूप, कृष्ण-राम मय होकर उभरना चाहिए।

यह युद्ध देवता और असुरों का है। हमें जीतना है तो "देव" बनना होगा। वीरता का पाठ भारत की ललनाएं जिस दिन बच्चों को घुट्टी में पिलाएंगी उस दिन पाकिस्तान मिटेगा—कटा सिर जुड़ेगा और हम अपनी मां की आरती उतार सकेंगे।

संकट की काल घड़ी समक्ष है। इस के लिए उपाय है 'शौर्य' धर्म, सत्य और राष्ट्र प्रेम का मन्त्र। औरतों की लड़ायी में हम पिटेंगे और घाटे में रहेंगे।

राम-कृष्ण का बल जागे, जागे चेतक की टापों का स्वर। पाप और पापी, दोनों का अस्तित्व मिटाने का संकल्प हम लें। यह समय की मांग है—

उन्नति की राह

आर्य समाज का संगठन प्रबल होना चाहिए। इस सम्बन्ध में कतिपय स्थानों से हमें जो मार्ग-दर्शन मिला, उसका सार है कि—

१—उत्साह का दुरुपयोग २—सही निर्देशन का अभाव
३—विकास के प्रति अनुत्साह ४—लाल फीताशाही

यदि इस संगठन में न रहें तो हमारा प्रभाव देश पर पड़ सकता है। अनुभव की व्याख्या न आवश्यक है न अपेक्षित, फिर भी इतना लेखन पर्याप्त है कि हम एक होकर,—एक लक्ष्य की ओर बढ़ें। सिद्धान्त प्रचार हमारा चरम लक्ष्य हो, शेष सब गौण। धर्म के नाम पर देश में जो कुछ हो रहा है उस सब से टकराने का साहस आर्य समाज के अतिरिक्त और कौन कर सकता है। राजनीति के नाम पर जो भ्रष्टता छायी है उस का सुधार भी तो आर्य समाज ही कर सकता है।

जागरण का शंख केन्द्र फूंकें और सर्वत्र उत्साह का प्रचार में योग हो। निर्देशन के आभाव में श्रद्धा भटके नहीं और विकास दूरगामी हों। नियमों की आड़ में प्रचार को न रोका जाए, यह समय की मांग है।

सत्यार्थ प्रकाश : आपकी परीक्षा

सत्यार्थ प्रकाश भी गीता की तरह जन-जन में फैले और एक ऐसी निधि बने जिस से सत्यार्थ प्रकाश १)५० में सजिल्द दिया जाए। यह हमारी इच्छा थी और इस लक्ष्य को जैसे भी हो हम पूरा कर डालते, पर १३ नवम्बर की रात्रि को सूरत में अचानक स्वास्थ्य इतना बिगड़ा, कि दिल्ली पहुँचना कठिन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो गया। आर्य समाज सूरत के पुरोहित श्री डाह्याभाई ने जो सेवा रात भर की, उसे हम जीवन भर भुला न सकेंगे। अभी तक भी दुर्बलता इतनी है कि कोई कड़ा श्रम करना सम्भव नहीं।

फिर भी इच्छा है कि हम जनवरी अंक में घोषणा कर सकें १)५० में प्रचार-संस्करण सत्यार्थ प्रकाश देने की। इच्छा की पूर्ति आप, इन पंक्तियों को पढ़ने वाले कर सकते हैं। चाहता हूं कि आप इस पवित्र कार्य में अपना भाग भेजें, १) या १०००) आप की इच्छा पर यज्ञ में आपकी आहुति डलनी चाहिए। उपहार संस्करण की तैयारी हो चुकी है, उसे भी मंगाइए, छपाइए, और एक बार मेरी प्रार्थना स्वीकार कर देखिए तो सही कितना बल आता है आप के महान् संगठन में—आप का आशीर्वाद "सत्यार्थ-प्रकाश-प्रकाशन" को भी मिलेगा, यह विश्वास ही हमारी शक्ति है।

मतों की आंधी और हम

हमें समझ नहीं आता कि आर्य समाज अपना कर्तव्य धर्म क्यों भूल रहा है ? इस समय देश में मत वादों की बाढ़ आ गयी है। इसका नंगा रूप समय-समय पर प्रगट भी होता रहता है किन्तु इन पर प्रहार करने वाला आर्यसमाज सो रहा है।

अभी १८ नवम्बर को तथा कथित बाल योगेश्वर के अनुयायियों ने नव-भारत टाइम्स के कार्यालय पर जो अभद्र प्रदर्शन किया यह प्रत्येक दृष्टि से निन्दनीय है। किन्तु इस सम्बन्ध में जो रवैया धर्म और सत्य के संरक्षक आर्य-समाज के कर्णधारों ने अपनाया हुआ है वह भी चिन्तनीय है। जैसे पहरेदार के सो जाने पर चोर-उचक्कों की बात आती है उसी भांति आर्य समाज के सो जाने पर, आज मत-मतान्तरों की बाढ़ आ गयी है। इस बाढ़ को रोकने का उपाय है केवल एक कि आर्य समाज अपनी नींद खोले और इनसे कह दे कि भागो............अब ऋषि दयानन्द के अनुयायी जाग गए हैं।

पाखंडों के गढ़ों पर प्रहार करने की बेला आ चुकी है। देरी का समय नहीं है। —भारतेन्द्रनाथ

कृपया धन 'जन-ज्ञान' के नाम भेजें। "Jan-Gyan" ड्राफ्ट सादी डाक से न भेज कर रजिस्ट्री से ही भेजें। शुल्क समाप्त होने पर मनिआर्डर भेजिए। वी. पी. की प्रतीक्षा न करें—यह आपका भारी सहयोग होगा—

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्य परिवार में चारों मूल वेद तो
होने ही चाहिएं।

'जन-ज्ञान' ने ५०० मूल 'वेद' (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद
और अथर्ववेद) बिना मूल्य भेंट में देने का
निश्चय किया है—

आप केवल यह करें कि—

जन-ज्ञान (मासिक) के ५ सदस्य बना कर

उन का शुल्क ५०) हमें भेज दें।
हम रजिस्ट्री से चारों 'वेद' सजिल्द आप को

उपहार में भेज देंगे।
शीघ्रता कीजिए और आज ही अपना उपहार
प्राप्त कीजिए।

—व्यवस्थापक
जन-ज्ञान (मासिक)
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन—ज्ञान—प्रकाशन की पांच अपूर्व भेंट

अमृत क्या है ?
स्वर्ग कैसे मिले ?
जीवन की सफलता के ११ व्रत क्या हैं ?

इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए—पढ़िए

अमृत-पथ

सजिल्द, १७६ पृष्ठ। बढ़िया कागज—मूल्य १२५) सैकड़ा ७०) के ५०।
२०) की१० प्रतियां

हिन्दी में ऋषि जीवन का दूसरा संस्करण समाप्त हो रहा है

स्वामी दयानन्द

२६० पृष्ठ : रंगीन आवरण बढ़िया कागज और मूल्य १)

तीसरे संस्करण की तैयारी आरंभ है

वैदिक-संध्या

१६ पृष्ठ : १०) सैकड़ा बांटने के लिए अपूर्व—
भारी संख्या में मंगाए

महान् वैदिक सिद्धान्तों का परिचयात्मक ग्रंथ
(अंग्रेजी में)

The Vedic Fundamenteles

मूल्य २॥) पर अभी १२) ५० की १० प्रतियां दी जा रही हैं

वैदिक सत्संग-पद्धति

तीसरा संस्करण—५०) सैकड़ा

जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० पं० हरिशंकर शर्मा

भारत के जिन पत्रकारों को आर्यसमाज अपना कह सकता है उनमें से एक थे स्व० पं० हरिशंकर शर्मा। पत्रकार होने के साथ-साथ वे कवि भी थे, विशेष रूप से हास्य के।

उन का स्वभाव सरल था, सादगी उनका आभूषण थी। झुकना उन्होंने सीखा ही न था। अपनी धुन के धुनी, काव्य प्रतिभा के धनी, हास्य रस के सिद्धहस्त लेखक थे शर्मा जी।

दैनिक आर्यमित्र को लेकर उनसे हमारा परिचय हुआ, विरोध भी रहा। फिर भी उनके स्नेह सौहार्द्र में कभी कोई कमी नहीं आई। जब भी मिलते, बड़े प्यार से। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान भी रहे।

आर्य जगत् धीरे-धीरे अपने महापुरुषों को भुलाता जा रहा है। किन्तु यह अच्छे लक्षण नहीं हैं। जो चले जाते हैं उन का स्थान कभी पूरा हो नहीं पाता। हम पूर्व पुरुषों का स्मरण कर उनके गुण धारण कर अपनी प्रगति का मार्ग निर्मित कर सकते हैं।

'जन-ज्ञान' अपने पाठकों की ओर से स्व० पंडित जी के प्रति सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

—भारतेन्द्र नाथ

चारों वेद संहिता बिना मूल्य मंगाने के लिए
आप जन-ज्ञान के ५ सदस्य बनाकर
५० रुपये हमें भेज दें--
हम आपको रजिस्ट्री से चारों वेद भेज देंगे
शीघ्रता करें।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

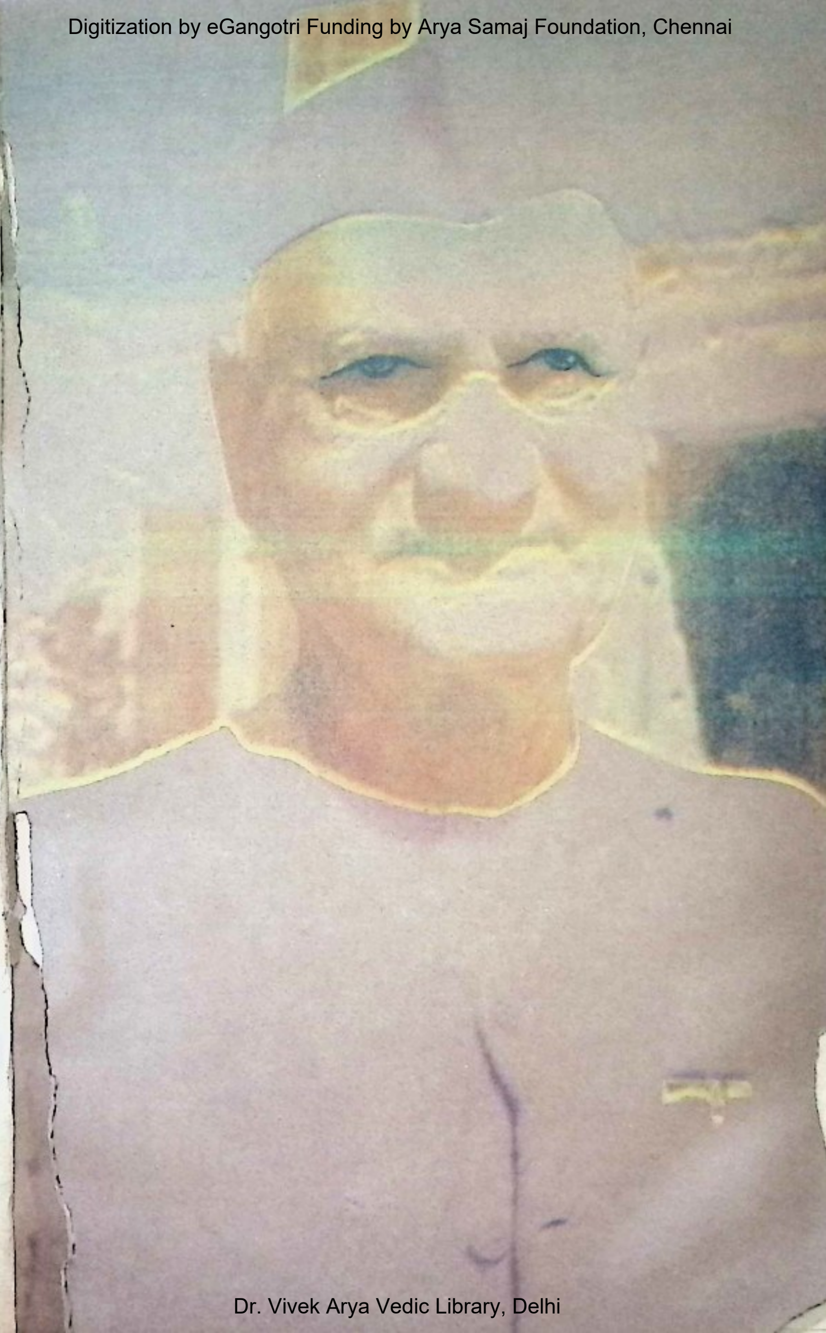

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गालियां : बिच्छू : आर्य

एक महात्मा जी नदी में स्नान कर रहे थे, अचानक उनकी दृष्टि पास ही धारा में बहते हुए एक बिच्छू पर पड़ी, वे दयार्द्र हो गए और बिच्छू को बचाने हेतु अपनी हथेली बढ़ाए और बिच्छू को धारा से निकालना चाहा कि तत्काल बिच्छू ने स्वभाववश डंक मार दी, पीड़ा से थोड़ी उद्विग्नता आई फलस्वरूप हथेली कांप उठी और बिच्छू पुनः धारा में गिर पड़ा और बहने लगा। महात्मा जी पुनः हथेली बढ़ाये, और बिच्छू को उठाये, बिच्छू ने इस बार भी डंक मार दी। कई बार इसी प्रकार की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप महात्मा जी बिच्छू को जल से निकालने में सफल हुए।

इसी दृष्टिकोण की परिपुष्टी महर्षि दयानन्द ने अपने एक वाक्य में की है कि यदि छोटे व्यक्ति अपनी क्षुद्रता नहीं त्यागते, तो हम बड़े एवं आर्य होकर क्यों अपनी श्रेष्ठता, बड़प्पन और आर्यत्व छोड़ दें?

इन पंक्तियों को उद्धृत करने का मुख्यतः प्रयोजन "गालियों के पत्र" शीर्षक में छपे पत्रों का उत्तर देना है। हमारे अज़ीज हिन्दुस्तानी भाई! आपके प्रेषित पत्र, उदारता पूर्वक 'जन-ज्ञान' के सम्पादक महोदया ने प्रकाशित कर, आपकी ललकार आर्य जनता तक पहुँचा दी है, जिसे पढ़कर कुछ लिखने को मुझे भी तत्पर होना पड़ा। आपकी आंखों एवं हृदय पर पक्षपात का पर्दा सा पड़ा हुआ है, उसी पर्दे ने आपको उलूल-जलूल लिखने को विवश किया, यदि आप उस पर्दे को थोड़ी देर के लिए हटाकर 'जन ज्ञान' या आर्य समाज पर दृष्टि-पात करते तो मुझे विश्वास है आप ऐसा लिखने की कल्पना भी न किये होते।

Time is precious but truth is more precious than time.

समय मूल्यवान है परन्तु 'सत्य' समय की अपेक्षा अत्यधिक मूल्यवान है। इसी 'सत्य' के प्रचार एवं प्रसार के लिए स्वामी दयानन्द आर्य समाज रूपी वृक्ष लगाए और 'सत्यार्थ-प्रकाश' रूपी पल्लव से सुशोभित किये, आप यदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि से अन्त तक सिर्फ इसी का पूर्ण मनोयोग से मनन किये होते तो बायबिल को स्वयं उठाकर फेंक दिये होते और प्रचार करते कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।"

आप हमें अपना दुश्मन समझते हैं, क्योंकि एक आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जिसे वैदिक संस्कृति की सुरक्षा एवं सत्य का प्रसारण अपना मुख्य ध्येय बनाने का श्रेय प्राप्त है, परन्तु समय के थपेड़े खाकर यह सुषुप्त सा होता जा रहा था, आप जैसे महानुभावों को कोटिशः धन्यवाद कि जिसने हमें जगा कर शुद्धि को तीव्र गति से चलाने का आह्वान सा कर दिया, क्योंकि आप में अभी भी भारतीयता शेष है, जिसका प्रमाण आपने स्वयं दिया है कि आपका एक भारतीय भाई। हम प्रतिदिन परम पिता परमात्मा से आप जैसों के लिये ही मनसा परिक्रमा के अन्दर, सन्ध्या करते समय प्रार्थना करते हैं **"योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः"**—जो हमसे द्वेष करता हम जिससे द्वेष करते हैं, सब आपके न्याय के समर्पित हैं, साथ ही स्वस्तिवाचन के मन्त्रों में **"स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।"**

जिस भांति सूर्य और चन्द्रमा सबके कल्याण के लिये विचरते हैं, हे सर्व शक्तिमान प्रभो! हम भी जीवन मार्ग में कल्याण की भावना से विचरें। पुनः पुनः प्राणिमात्र के प्रति सहायक, और किसी को दुःख न देते हुए तथा ज्ञान सम्पन्न मनुष्यों के साथ हम सब मिलकर चलें।

हमारा शाश्वत दृष्टिकोण निम्न मन्त्र से ज्ञात होता है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्॥

आर्य समाज जो प्रशस्त पथ दुनियां के सामने वेद प्रतिपादित रखता है वह वर्णन से परे है। वेद के द्वारा परमात्मा ने अपनी सन्तान को ज्ञान दिया, यह अंग्रेजी विद्वानों ने भी स्वीकार किया है, उन्हीं आदेशों का पालन करने की आकांक्षा प्रत्येक मनुष्य से अपेक्षित है। महर्षि दयानन्द ने न तो अपना कोई मत या सम्प्रदाय चलाया, न अपना कोई मठ या मंदिर बनवाया, हाँ उन्होंने आप जैसे पथ भ्रष्ट पथिकों के लिए सत्यार्थ का प्रकाश लेकर वेद के प्रशस्त मार्ग को दिखलाने हेतु पथ-प्रदर्शक के रूप में आर्य समाज रूपी सजग प्रहरी छोड़ गये। हम भारतीय अपने प्रण में कितने जीवट हैं इसका उदाहरण द्वितीय महायुद्ध की एक घटना से मिलता है—सुनिए, जिसे प्रो० रामचरण महेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'महकते जीवन फूल' में लिखा है। एक भारतीय सैनिक एवं एक जापानी सैनिक रणखेत में असहाय घायल हो पड़े थे, जापानी सैनिक प्यास से कराह रहा था, भारतीय सैनिक के हृदय में दया की भावना आई वह सरकते हुए जापानी सनिक के निकट जाकर अपने थरमस से चाय ढालकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैनिक को देते हुए बोला—यार ! तुमने हमारा बुद्ध के अनुयायी का अभीतक झगड़ा देखा है, अब प्रेम और वात्सल्य देखो इतना कह उसके होटों से प्याला लगाने लगा कि अचानक जापानी ने अपने छुरे से उसपर आक्रमण कर दिया, भारतीय को साधारण सी चोट लगी। फौजी सेवा दल आकर दोनों को शिविर अस्पताल ले गया, चिकित्सा हुई, स्वस्थ होने के उपरान्त तत्काल भारतीय कुल्हड़ में चाय लेकर जापानी के नजदीक गया और पिलाया तो लज्जित हो जापानी ने कहा—अब पता चला कि बुद्ध तुम्हारे ही देश में क्यों पैदा हुआ था ?

हमने भय से भयभीत होना नहीं सीखा, मृत्यु हमारी इच्छा पर ही हमें ले जाने का साहस करती है, फिर आपकी गीदड़ भभकियों से होना क्या कुछ सम्भव है इसे तो आप स्वयं विचार कर सकते हैं, हाँ आप जैसों के लिये ही कवि ने लिखा है—

वह नादान फिर भी है बचने के काबिल,
जो अपनी खता को खता मानता है ॥
मगर ऐसे नादान का क्या ठिकाना,
जो खुद मर्ज ही को दवा मानता है ॥

भगवान आपको सद्ज्ञान दे, प्रकाश की ओर प्रेरित करे यही मेरी प्रार्थना है। आपका ही मित्रवत्—

—सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'
नेमदार गंज (बिहार)

गालियों के उत्तर : सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी द्वारा

श्रीयुत भाई इमानु एल० गनेशलाल जी,

सप्रेम नमस्ते।

मेरी पुस्तिका "और पादरी भाग गया" में लिखित प्रश्नों के उत्तर न देकर आप ने मेरे विरुद्ध गालियों व अपशब्दों का सहारा लिया, इससे ही स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि उक्त पादरी ही नहीं भागा अपितु आप का भी बिस्तर गोल हो गया है।

आप की गालियों व अपशब्दों को मैंने अपनी प्रतियों की सफलता का प्रतीक माना है। जब एक डाक्टर किसी मरीज के फोड़े का आपरेशन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कर उसकी गन्द निकालता है, तो वह आप की भांति ही चिल्लाता है, और अपने शुभचिन्तक डाक्टर को गालियां तक दे डालता है। डाक्टर उसकी गालियों का बुरा न मानकर मरीज से प्यार ही करता है। उसी प्रकार मैंने आप के क्रोध भरे शब्दों को अपना सम्मान समझा ही है।

आप नये एवं नाम मात्र के ईसाई प्रतीत होते हैं। एक सच्चा ईसाई जिसका ईशु प्रभु पर विश्वास होता है, वह अपने विरोधी के प्रति इस प्रकार की भाषा का कदापि प्रयोग नहीं करता है। आप ने स्वयं प्रभु यीशु ख्रीष्ट के उपदेश को इस प्रकार लिखा है-—"जो तुम से शत्रुता रखें उनके हित के लिये प्रार्थना करो व उन्हें आशीष दो।" अन्य स्थान पर उन्होंने यह भी उपदेश दिया है कि जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसके सन्मुख अपना दूसरा गाल कर दो।" क्या आप ने ईसा मसीह के उक्त उपदेश के अनुसार आचरण किया है? यदि नहीं तो उनका शत्रु कौन है, मैं या आप?

आप ने अपने पत्र में लिखा है—कृपया वाइबल धर्मशास्त्र में पढ़ें, तीतुस ३-१०, ११—"

"परन्तु फिर भी स्वर्गीय पिता ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे तो नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पावे।" वाइबिल के इसी उपदेश पर मैं आप से नीचे लिखे कुछ प्रश्न करता हूँ। कृपया उत्तर देने का कष्ट करें। यदि आप के पास गालियों व अपशब्दों के अतिरिक्त उत्तर न हों तो किसी अन्य समझदार पादरी से उत्तर दिला दें तो आभारी हूँगा—

प्रश्न १—यदि कोई व्यक्ति स्वर्गीय पिता के इकलौते पुत्र (ईसा मसीह) पर विश्वास न रखकर उसके पिता (स्वर्गीय पिता) पर विश्वास रखे तो उसका नाश होगा या नहीं। और वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा या नहीं?

प्रश्न २—यदि कोई व्यक्ति स्वर्गीय पिता के इकलौते पुत्र पर विश्वास रखे, परन्तु वह पापाचार अथवा अधर्माचरण में रत रहता हो, तो उसका नाश होगा या नहीं?

३—जब ईश्वर सर्वशक्तिमान है तो फिर उसे अपने इकलौते बेटे को संसार में क्यों भेजना पड़ा? जब बेटे के बिना वह दुनियां की रचना कर सकता हो तो फिर उसमें कौन कमी आ गई कि संसार के कल्याणार्थ उसे बेटे को भेजना पड़ा?

४—क्या ईसा मसीह मरीयम के पेट में आने के पश्चात् स्वर्गीय पिता का इकलौता पुत्र बना या उसके पेट में आने से पूर्व भी उपस्थित था? यदि पहले भी था तो उसकी पैदाइश कब और कैसे हुई? यदि वह पैदा नहीं हुआ तो पिता का इकलौता पुत्र कैसे कहलाया गया?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५—यदि ईशु स्वर्गीय पिता का इकलौता पुत्र था तो वह फांसी पर चढ़ते समय रोया व चिल्लाया क्यों था ? क्या फांसी के कष्ट से वह भयभीत हो गया था।

भाई गनेशलाल जी ! यह वैज्ञानिक युग है। इसमें बुद्धि विरोधी मतों के लिये कोई स्थान नहीं है। भगवान ने आपको बुद्धि इसी लिये दी है कि आप सत्य-असत्य को विचार कर बातों को अपनायें, यदि व्यक्ति अपनी बुद्धि पर अन्ध विश्वास का ताला लगाकर भेड़ों की भांति चलने लगे, तो इससे ईश्वर द्वारा दी गई बुद्धि का अपमान है। यदि आपने ईमानदारी से अपनी बुद्धि का प्रयोग किया तो फिर आपको वैदिक धर्म की शरण में आकर इस तथ्य को ही स्वीकार करना पड़ेगा—

"ईशु ही नहीं अपितु प्राणी मात्र ईश्वर की सन्तान है। प्राणि मात्र से ही प्यार करना, और उन्हें मित्रवत समझना ही ईश्वर भक्ति है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मानुसार ही फल की प्राप्ति करेगा। कर्म-फल की प्राप्ति में किसी भी व्यक्ति पर विश्वास या उसकी सिफारिश सहायक नहीं होगी।

आशा है इस छोटे से प्रत्युत्तर से आप की संतुष्टि हो जायगी, परन्तु संसार में सोने वालों को जगाना सरल होता है, परन्तु जो व्यक्ति जागता हुआ सोने का बहाना कर रहा हो उसे जगाना बड़ा कठिन होता है।

आपका शुभेच्छु

—ओम्प्रकाश त्यागी

आर्य हवन सामग्री

महर्षियों की प्राचीन पद्धति से निर्मित

आर्य नेताओं द्वारा प्रमाणित शास्त्रोक्त-विधि से निर्मित

सर्व रोग नाशक हवन सामग्री से ही नित्य हवन करें।

१—मेवायुक्त हवन सामग्री का भाव २.२५ किलो है।

२—सुगन्धित हवन सामग्री का भाव १.५० किलो है।

आज ही आप अपना आर्डर भेजें

वेदपथिक पं० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी

अध्यक्ष—आर्य हवन सामग्री

सराय रुहेला, नई देहली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी का, संन्यास लेने से पूर्व का, नाम 'मुंशीराम' था। उनका प्रारंभिक चरित अद्भुत, परस्पर-विरुद्ध घटनाओं से भरा हुआ था। जिन के पिता गदर के जमाने में ब्रिटिश सरकार के सेवक और सहायक की हैसियत से बागियों से लड़े, और सहारनपुर जिले को निःशस्त्र बनाने का कारण हुए, वही भारत को स्वाधीनता दिलाने के लिए झगड़ने वाले सब से बड़े वकीलों में से एक हुए। कमाई के जगत् में जिन के जीवन का प्रवेश नायब-तहसीलदारी से हुआ, वह किसी समय अहिंसा-प्रिय, असहयोगी देश-सेवकों के मुखिया समझे गये। जिन के यौवन का बहुत-सा भाग भोग और विलास की सेवा में व्यतीत हुआ, उन के जीवन का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मचर्य और तपस्या का प्रचार करना बन गया। जो एक दिन युवक नास्तिकों के अगुआ थे, ईश्वर तथा धर्म को एक खिलौना समझते थे, उन का सब कुछ घर-बार तक धर्म पर न्यौछावर हो गया। ऐसे जीवन धर्म-शास्त्र और मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिये बहुत मनोरंजक और शिक्षा-प्रद होते हैं। कारण; वे उन से क्रमशः प्रकट होती हुई धर्मभावना का अनुशीलन कर सकते हैं। ऐसे जीवन सर्व-साधारण की आंख खोलने वाले कहे जा सकते हैं। एक ही जीवन में, अपराध और उसका पूरा प्रायश्चित भी, यह बात बहुत कम दिखाई देती है, और जहां कहीं दिखाई देती है, वह जीवन शिक्षादायक होता है। फिर यदि प्रायश्चित्त अपराध से कई गुना अधिक हो जाए, तो फिर उस का क्या कहना है? वह जीवन तो जनता के लिए बहुत ही उपयोगी होगा।

वंश

स्वामी जी के परदादा सुखानन्द जी आनन्द की मूर्ति थे। आप के दादा गुलाबराय, महाराज नौनिहालसिंह की रानी श्रीमती हीरादेवी की डेवढ़ी के मुंशी थे। आप बड़े धार्मिक, व्यवहार में खरे और सच्चे थे। स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध थे। डेवढ़ी के मुंशी होने पर भी आप की प्रतिष्ठा बहुत थी, क्योंकि खरे आदमी से सभी डरते हैं। जब रानी हीरादेवी अपने पुत्र सरदार विक्रमाजीत और कुंअर सुचेतसिंह सहित कपूरथले से निर्वासित होकर जालन्धर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

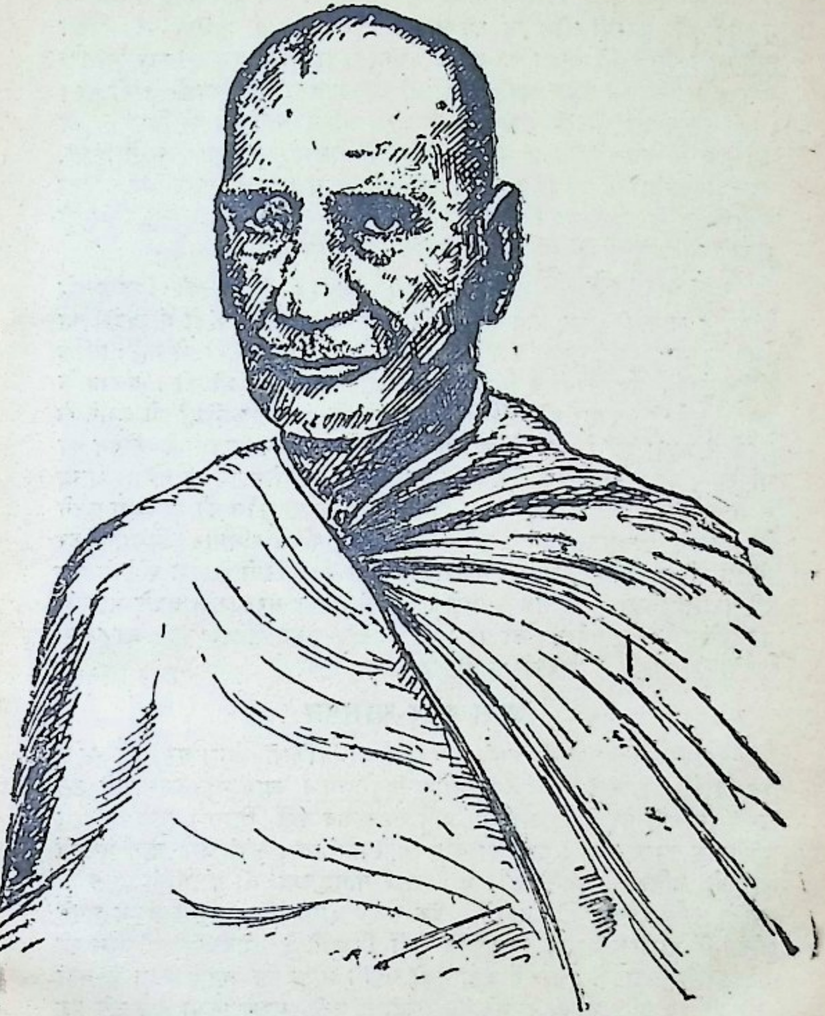

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आई, तो गुलाबराय जी भी उनके साथ ही आये। स्वामी जी के पिता का नाम नानकचन्द था। आप छ: भाइयों में सब से बड़े थे। आप ने छोटी अवस्था में थोड़ी-सी फारसी और उर्दू की शिक्षा के सिवा कुछ विशेष पढ़ा-लिखा नहीं था। उन दिनों शिक्षा का आदर्श इतना ऊंचा नहीं था। सरकारी नौकरी में जाने के लिए भी बहुत ऊंची शिक्षा की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। ला० नानकचन्द जी की अवस्था अभी बहुत अधिक नहीं हुई थी कि आप को कपूरथले में 'काला' गाँव की थानेदारी दी गई। काम आपने परिश्रम से किया, परन्तु स्पष्ट-वादियों के लिए कहीं स्थान नहीं होता। उसी स्पष्ट-वादिता का प्रभाव था कि आप अपने कार्य में तो कामयाब समझे गये, परन्तु शीघ्र ही अफसर के नाराज हो जाने के कारण स्तीफा दे कर अलग हो गये।

इतने में देश-भर में विद्रोह की आग भड़की। १८५७ का विद्रोह,सूखे ईंधन में आग की तरह, धांय-धांय करके जल उठा। अन्य प्रांतो में विद्रोह का जितना असर हुआ, उतना पंजाब में नहीं हुआ। केवल इतना ही नहीं, बल्कि पंजाब ने विप्लवकारियों के विरुद्ध, सरकार की सहायता भी की। पंजाब के जवान अंग्रेजी सरकार की नौकरी स्वीकार करके क्रांति-कारियों को दबाने के कार्य में प्रवृत्त हुए। ला० नानकचन्द जी भी पुन: एकान्तवास के जीवन का परित्याग कर भाग्य-परीक्षा के लिये युक्त-प्रान्त की ओर रवाना हुये। भाग्य ने साथ दिया, अवसर मिल गया। हिसार में सरकारी फौज की सहायता करने के बदले में कोतवाल बनाये गये। सहारनपुर को बे-हथियार किया, फिर नैपाल की तराई से मेलाघाट की लड़ाई में क्रांतिकारियों के एक छोटे-से दल को परास्त किया। इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर सरकार ने बदले में आप को पुलिस के इन्सपैक्टर का पद दिया। इस समय से जब तक आप सेवा करते रहे, पुलिस के महकमे में ही रहे।

जन्म और बालपन

स्वामी जी का जन्म अपने गांव तलवन (जिला जालन्धर) में संवत् १९१३ की फाल्गुन-बदी त्रयोदशी के दिन हुआ। ला० नानकचन्द जी उस समय नौकरी पर थे। उन्हें पुत्र होने का संवाद वहीं मिला। पुत्र का नाम मुंशीराम रक्खा गया। रास का नाम 'बृहस्पति' था। मुंशीराम चार भाइयों और दो बहिनों में सबसे छोटे थे। ला० नानकचन्द जी की पत्नी बहुत ही सुशील धर्म-परायणा और बच्चों से प्रेम करने वाली थीं। स्वामी जी ने अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग का वृत्तांत 'मेरी जिन्दगी के नशेबो-फराज' नाम की पुस्तिका में लिखा है। उस में जहां कहीं अपनी माता का वर्णन किया है, वहां बहुत ही प्रेम और भक्ति से भरे हुए शब्दों में उन्हें स्मरण किया है। उसे पढ़ कर ज्ञात होता है कि माता का पुत्रों से अगाध प्रेम था, जिसे वह बड़े धैर्य और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विवेक से निभाती थीं। माता का जैसा आदर्श-प्रेम होना चाहिए वैसा ही चारों भाइयों को प्राप्त था।

ला० नानक चन्द जी की नौकरी का समय युक्त प्रांत में ही व्यतीत हुआ। वह बरेली, बदायूं, बनारस, बाँदा. मिर्जापुर, बलिया. आदि में पुलिस के महकमे के अधिकारी रहें। आप बहुत अधिक समय तक बनारस में शहर-कोतवाल रहे। पुलिस में आपने खूब प्रसिद्धि पाई। आप बडे-बडे डाकुओं को पकड़ेने में बड़े प्रवीण थे इस के लिये आप खास तौर पर मशहूर थे। ला० नानकचन्द जी बडे ईश्वर-भक्त और तुलसी कृत रामायण के बहुत प्रेमी थे। प्रतिदिन नियमित पूजा पाठ होता था। दौरे में भी कभी पूजा-पाठ नहीं छूटता था। पुलिस का महकमा. उस में भी ऊंचा पद, फिर १९ वीं सदी का अन्तिम भाग, रिश्वत के लिये इस से बढ़ कर अनुकूल परिस्थिति और कौन सी हो सकती थी ? तो भी ला० नानकचन्द अपने सहयोगियो में अधिक ईमानदार और कम रिश्वत लेने वाले समझे जाते थे।

चारो भाइयो में से इस चरित्र के नायक की ही शिक्षा की ओर विशेष प्रवृति थी। मुंशीराम जी अपने माता-पिता के लाडले और पढ़ने-लिखने में प्रवीण पुत्र थे। उन्हें प्राय: अपने पिता के साथ ही रहना पड़ता था। जहां-जहां बदली होती थी, या जाना पड़ता था, वहीं-वहीं पिता जी के साथ जाते और नये-नये अनुभवों को प्राप्त करते। बाद में आपकी शिक्षा प्रारम्भ हुयी। शिक्षा का अधिक समय आपने बनारस में बिताया। क्वीन्स कालेज के स्कूल से आपने एंट्रेंस की परीक्षा दी थी। उस समय बनारस में प्रसिद्ध हैडमास्टर पं० मथुराप्रसाद जी की योग्यता की धूम थी। आपने उन्हीं के निरीक्षण में स्कूल की शिक्षा समाप्त कीं। जिस वर्ष आपने स्कूल की शिक्षा समाप्त की उसी वर्ष माता का देहान्त हो गया। प्रेममयी माता के देहान्त से लाडले पुत्र को कितना दुख: हुआ करता है इसे वे ही जानते हैं, जिन्हें ऐसी दुर्घटना देखने का अवसर मिला हो। इस दु:खदायी घटना के कुछ समय बाद ही मुंशीराम जी ने बड़ी उत्तमता से एंट्रेंस पास किया।

हवा के झोंके

स्कूल का जीवन समाप्त करके मुंशीराम जी ने बनारस के क्वीन्स कालेज में प्रवेश किया, उस समय बनारस कालेज में बड़े-बड़े योग्य व्यक्ति कार्य करते थे। कालेज के प्रिन्सिपल ग्रिफिथ साहब थे, जिनके किये हुए ऋग्वेद और रामायण के अनुवाद उस समय बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। अंग्रेजी के प्रोफ़ेसर पं० लक्ष्मीशंकर एम० ए० थे। उनकी प्रतिष्ठा भी खूब थी। मुंशीराम जी का कॉलिज का जीवन विचित्र था कभी पढ़ाई का शौक, कभी कविता की धुन, कभी उपन्यास लिखने की लटक और कभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आवारगी। घर में धन बहुत था। शहर-कोतवाल के पुत्र होने से बहुत से ऐसे अधिकार प्राप्त थे, जो सबको प्राप्त नहीं होते। इस कारण मुंशीराम जी का विद्यार्थी-जीवन समान नहीं रहा। उस में बहुत से उतार चढ़ाव रहे।

बनारस में रहते समय की दो-एक घटनाएं विशेषरूप से वर्णन करने योग्य हैं। उन्हीं घटनाओं से चरित्र नायक के चरित्र पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। १८७८ में प्रिंस आफ वेल्ज़ भारत भ्रमण करने आये थे। वे बनारस कालेज को भी देखने गए। आस पास के राजे-महाराजे भी सलाम करने के लिये बनारस में जमा हुए। उस समय कोमल हृदय युवक ने जो दृश्य देखा उस का उन पर गहरा असर पड़ा। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जैसे छोटी हैसियत के कर्मचारी देसी राजों को इस तरह धमकाते और आंख दिखाते थे, जैसे वे साधरण अपराधी हैं। इस से नवयुवकों को अंग्रेजी अफसरों के अनुचित असभ्य व्यवहार और राजाओं की अशक्त दशा का पूरा पता लग गया।

ला० नानकचन्द जी मूर्ति-पूजक, अत्यन्त श्रद्धालु और धार्मिक प्रकृति के भक्त थे। कुल-क्रम से उनके सब पुत्र भी मूर्ति-पूजक ही थे। मुंशीराम जी पहले ही से धुन के पक्के थे। जो धुन सवार हुई, तन्मय हो गए। बनारस में मूर्ति-पूजा की धुन सवार हुई। प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल पांचों देवताओं की पूजा करने का नियम पालन करते थे तब मुँह में अन्न-जल डालते थे, उससे पहले नहीं। महीनों तक यही नियम रहा। एक दिन आप नियत समय पर विश्वनाथ जी के मन्दिर के द्वार पर पहुंचे। अन्दर घुसना ही चाहते थे कि सिपाही ने रोक दिया। पूछने पर बताया कि अन्दर रीवां-नरेश की महारानी गई हुई हैं, जब यह बाहिर आयेंगी,—तब प्रवेश की आज्ञा होगी। भक्त के भक्ति-पूर्ण हृदय पर आघात पहुँचा। क्या भगवान् का द्वार भी बन्द किया जा सकता है? क्या एक रानी विश्वनाथ जी की दृष्टि में दूसरे लोगों से अधिक आदरणीय है। यह विचार उन में उत्पन्न हुआ, और "भक्तवर मुंशीराम विश्वनाथ के द्वार से नास्तिक-वर" मुंशीराम बन कर लौटे।

बनारस में मुंशीराम जी का उठना-बैठना बहुधा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की मंडली में रहता था, आप प्रायः भारतेन्दु जी के वस्त्र, आभूषण और रहन सहन के हाल सुना करते थे। जरी के गोटे वाले कपड़े, तिलाई टोपी, घुंघराले बाल, नौकर के हाथ में छाता, आशु कविता भारतेन्दु की ये सब बातें आप की आंखों देखी हुई थीं। उनकी निर्भयता के भी कई दृष्टान्त आप को याद थे। बनारस में आप आमोद-प्रमोद के लिये जिस युवक-मण्डली के बीच में बैठते थे, उसके एक सभ्य 'भारत-जीवन-प्रेस के स्वामी बा० राम-कृष्ण वर्मा भी थे। मुंशीराम जी के पुराने कालेज साथियों में स्वनाम-धन्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० मोतीलाल नेहरु जी भी थे। कालेज में दोनों साथ-साथ की श्रेणियों में पढ़ते थे। फिर देर तक दोनों एक-दूसरे को भूले रहे। बहुत पीछे दोनों पुराने परिचित मित्र, पंजाब के मार्शल-ला के पीछे, तब मिले, जब दोनों ही महा-पुरुष जख्मी पंजाब के अंगों की मरहम-पट्टी कर रहे थे। उस समय दोनों ने अपने पुराने नोट मिलाये, और आधी शताब्दी भर के जीवन की तुलना की।

इन दिनों आप को मूर्ति-पूजा के प्रति अश्रद्धा हो गई थी। एक रोज घूमते हुये आपने रोमन कैथलिक गिर्जे का घण्टा सुना। इस स्वर की मधुरता से आकृष्ट होकर मुंशीराम जी गिर्जे में चले गये और प्रार्थना सुनने लगे। फादर जकरिया, जो वहीं के बड़े पादरी थे, एक नया शिकार देखकर बड़ी उत्सुकता से लपके और उन्होंने नवयुवक को फांसने के लिये अनेक ढंग रचे। कुछ दिनों तक नवयुवक का हृदय भी उधर झुका रहा परन्तु कुछ दिनों बाद ही, फादर की अनुपस्थिति में उस के घर पर एक नन नाविस से ऐसा अनुचित सम्बन्ध देखा कि हृदय जिस वेग से गिर्जे की ओर बढ़ा था, उसी वेग से पीछे को लौट पड़ा। उस दिन से असन्तुष्ट नवयुवक के हृदय-द्वार ईसाइयत के लिये सदा को बन्द हो गये।

विवाह और शिक्षा

१८७७ में आपका विवाह हो गया। यह विवाह बहुत ही महत्वपूर्ण था। जालन्धर के प्रसिद्ध रईस ला० शालिग्राम जी का परिवार जिन की पुत्री शिवदेवी से इनका विवाह हुआ, द्वावे में मशहूर और प्रतिष्ठित है। कन्या महाविद्यालय जालन्धर के संचालक ला० देवराज जी, जालन्धर के प्रसिद्ध बैरिस्टर रायजादा ला० भगतराम जी उन्हीं के सुपुत्र थे और पंजाब के होन-हार कांग्रेस के कार्यकता ला० हंसराज जी एम. पी. उन्हीं के सुपुत्र हैं। इन तीनों से बड़े भाई ला० बालकराम जी थे। मुंशीराम जी का सब भाइयों से अधिक प्रेम बालकराम जी से ही था।

१८७८ में मुंशीराम जी इलाहाबाद के म्योर सेण्ट्रल कालेज के एफ. ए. क्लास में भर्ती हुये। यह समय उमंग का था 'यौवनं धन सपत्तिः प्रभुत्वम-विवेकता' यह चारों बातें एकत्र हो गई थीं। यौवन था ही, पिता जी की ओर से खर्च के लिये कोई बड़ा बन्धन नहीं था। कोतवाल का लड़का अपने को प्रभु मानता ही है, बस इन बातों से जितनी अविवेकता उत्पन्न हो जानी चाहिये, वह पूरी मात्रा में विद्यमान थी। शराब खूब उड़ती थी, नास्तिकता जोरों पर थी। नाटक-मंडली आदि चलाने का शौक था। शराब पीने की आदत सीमा को लांघती जाती थी। इस कारण स्वास्थ्य नष्ट होने लगा। स्वभाव से ही आप का शरीर लम्बा-चौड़ा और हृष्ट-पुष्ट था। शरीर की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनावट को बताना व्यर्थ है, क्योंकि स्वामी श्रद्धानन्द जी के लम्बे कद और अनेक बीमारियों से घिरे होने पर भी गरांडील शरीर से देश-भर परिचित हो चुका था। आप की खुराक उस समय दो व्यक्तियों जितनी थी। जब पूरे वेग से चलते थे, तब साधारण आदमियों को दौड़ना पड़ता था। इतना हृष्ट-पुष्ट शरीर भी अधिक व्यतिक्रमों के प्रभाव से रोगी होने लगा। दो एक बार बहुत ही भयानक दशा हो गई। आखिरकार डाक्टर और वैद्य हार गये। एक जुएबाज 'लल्ला जी' हकीम थे, उन के इलाज से आराम हुआ। उस समय तो स्वास्थ्य ठीक हो गया परन्तु परीक्षा पर बुरा असर पड़े बिना न रहा। ठीक परीक्षा के समय आप रोगी हो गये और रसायन के पर्चे में फेल हुये। फेल होकर आपने कालेज छोड़ दिया, और अपने पिता जी के पास बरेली में आ गये। यहां आपको पहले-पहल ऋषि दयानन्द के दर्शन हुये। इस समय आप कट्टर नास्तिक थे। योरोप के नास्तिकों के ग्रन्थों ने सन्देह शील हृदय को पूरा-पूरा अविश्वासी बना दिया था। नास्तिक मुंशी-राम ऋषि के पास पहुंचे और ईश्वर के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे। ऋषि के युक्ति-युक्त उत्तर सुनकर योरोप के नास्तिकों की युक्तियाँ निर्मल, और असार प्रतीत होने लगीं। युक्तियों का खण्डन हो गया, परन्तु हृदय सन्तुष्ट नहीं हुआ। आपने ऋषि से कहा—'महाराज, आपने मुझे निरुत्तर तो कर दिया, परन्तु ईश्वर पर विश्वास नहीं कराया।' ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया—'भाई, मैंने कब दावा किया था कि मैं तुम्हें विश्वास करा दूंगा? मैं तो केवल प्रश्नों का उत्तर दे सकता था। विश्वास तो तभी होगा, जब ईश्वर की कृपा होगी।' वही हुआ भी। एक दिन ईश्वर की कृपा हुई, नास्तिक मुंशीराम ने अपनी जीवन-नौका को विशाल संसार-सागर में ईश्वर-विश्वास के भरोसे पर छोड़ दिया।

पेशे की तलाश

१८८०ई. में पहले-पहल नौकरी में प्रवेश हुआ। वही नौकरी अन्तिम भी थी। बरेली के कमिश्नर मि० एडवर्डस् ला० नानकचन्द जी पर बड़े मेहरबान थे। आपने मेहरबानी का परिचय देते हुए कोतवाल साहब के लड़के को बिना विशेष प्रस्तावना के ही नायब तहसीलदार बना दिया। तहसीलदार छुट्टी पर गया तो मुंशीराम जी को तहसीलदार का भी कार्य करना पड़ा। परन्तु आपका स्वतन्त्र हृदय अधिक समय तक नौकरी के बन्धन को न सह सका, कारण यह हुआ कि आप कमिश्नर से मिलने गये। चपरासी ने आपको बिठा कर अन्दर खबर दी। हुक्म हुआ कि थोड़ी देर ठहरो। इतने में एक अंग्रेज सौदागर आया और चट-पट अन्दर चला गया। मुंशीराम जी ने उसी समय नायब तहसीलदारी से स्तीफ़ा दे दिया और सदा के लिये दासता से छुट्टी पाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब नौकरी छोड़ कर वकालत करने का विचार किया। लाहौर जाकर मुख्त्यारी में भर्ती हुए। पहले वर्ष परीक्षा नहीं दी। दूसरे वर्ष पिता जी की पेंशन हो गई। इस खुशी में बहुत-सा समय अपने गांव में बिता दिया इस कारण परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहे। १८८३ में तीसरी बार परीक्षा का अवसर आया। इस बार भी साल-भर मौज में बीता। खाना-पीना और मौज उड़ाना बस यही स्वाध्याय था। जब परीक्षा को केवल २७ दिन रह गए तब मन में विचार उठा कि अब तो मुख्त्यार बन ही जाना चाहिये। २७ दिनों तक लगातार घोर परिश्रम किया, रात-दिन एक कर दिये, साल-भर की कसर निकाल दी और परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए। मुख्त्यार बन कर पहले फिल्लौर में वकालत शुरू की और कुछ समय पीछे जालन्धर में आ गए।

उस समय वकील बनने से पहले मुख्त्यारी पास करना आवश्यक था। कुछ रोज मुख्त्यारी कर के आप वकालत पास करने के लिये लाहौर गए। वहां जाकर आप के जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ। आपने नियत समय पर वकालत पास कर ली और वकील बन कर जालन्धर में कार्य आरम्भ कर दिया। यह तो आनुषंगिक फल था। मुख्य फल यह हुआ कि हृदय में परिवर्तन हो गया। जीवन में नये परिच्छेद का प्रारम्भ हुआ। विद्यार्थी-जीवन में बरेली, बनारस और इलाहाबाद में जो जीवन बिताया था, वह क्या विचारों की और क्या कार्यों की दृष्टि से, मौज-बहार का जीवन था। जो किया वह भर-पेट किया। गिनाने की आवश्यकता नहीं। पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि यथेष्ट धन और मद्य-सेवा के आगे-पीछे कितनी बुराइयां लग सकती हैं। माता का रक्षा करने वाला हाथ सिर से उठ ही चुका था। मित्र मिले वे भी जैसे के तैसे। इस प्रकार कुप्रवत्तियां प्रतिदिन बढ़ती ही गयीं। बीच-बीच में कई धक्के लगे। एक बार शराब की मस्ती में चूर एक अपने साथी को अपनी आंखों के सन्मुख अबला का सतीत्व नष्ट करने की चेष्टा करते देखा। यद्यपि आपने भी शराब पी रखी थी, पर वह अत्याचार सहा नहीं गया। मुंशीराम जी ने अपने अंतरङ्ग मित्र को धक्का देकर गिरा दिया। यह घटना वकालत के लिये लाहौर को रवाना होने से पहले हुई। बस-यहां से जल प्रवाह पलट गया। उमंगी हृदय की बढ़ी हुई उमंग टकरा कर उलटी ओर को चली। लाहौर में जाकर घटनाएं ऐसी उपस्थित हुईं कि परिवर्तन की ओर होने वाला झुकाव सबल ही होता गया। लाहौर में एक ओर आर्य-समाज के उस समय के प्रधान ला० सांईदास का प्रेम-भरा संभाषण, दूसरी ओर मुनिवर गुरुदत्त के योग्यता भरे व्याख्यान, इन्हीं सब बातों ने मिल कर केवल नास्तिक मुंशीराम को परम आस्तिक ही नहीं बना दिया, बल्कि हृदय पर लगे हुए धक्के को सहायता देकर आचरणों में भी क्रांति उत्पन्न कर दी। एक-एक कर के सब व्यसन छूटने लगे। व्यसनों का विनाश शराब से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शुरू हुआ। धीरे-धीरे मांस, हुक्का और पान तक छूट गए। परिवर्तन धीरे-धीरे हुआ, परन्तु यहां तक हुआ कि आप के भोजन में रोटी, शाक और दूध के साथ नमक, मीठा और हल्दी ही बस रह गए। भोजन के शेष सब सहायक छूट गये।

समाज-सेवा का प्रारम्भ

वकालत में और आर्यसमाज में एक साथ प्रवेश हुआ। वकील बन कर जालन्धर आने से पहले ही आप के सम्बन्धी लाला देवराज जी के उद्योग से आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। पहले आप आर्यसमाज की हंसी उड़ाया करते थे। लाहौर से लौट कर आप उस में शामिल होगये। इस समय से आपने आर्यसमाज की सेवा प्रारम्भ की। यह आपका स्वभाव था और हमेशा रहा कि जो कुछ करना खूब करना और पेट-भर के करना। बुद्धि के खुले घोड़े दौड़ाए, तो ईश्वर तक को जवाब दे दिया। आचरणों की बाग ढीली की, तो सभी आमोद कर लिये। जब धर्म का रास्ता पकड़ा तो दिल से जान से, आत्मा से उसे निभाने का यत्न किया। ऋषि दयानन्द का वह वाक्य कि "ईश्वर पर विश्वास तभी होगा, जब तुम पर उस की कृपा होगी" अब पूरा होगया। ईश्वर की कृपा हुई और १८८५ ई० में आपने आर्यसमाज में प्रवेश किया।

आप का १८८५ से १९२६ तक का जीवन धर्मसेवा के ही अर्पण हुआ है। यहां इतना स्थान नहीं कि हम इन ४१ सालों के घटनापूर्ण कर्म-जीवन का संक्षेप में भी वर्णन कर सकें। इन वर्षों के कार्य-वृत्तान्त के लिये एक ग्रन्थ की आवश्यकता है। हम यहां इन वर्षों के कार्यों को कुछ पृथक्-पृथक् भागों में बांटकर प्रत्येक के सम्बन्ध में थोड़ा-थोड़ा वर्णन करेंगे।

जब जालन्धर में आपने वकालत शुरू की, तब आप की अभिलाषा यह थी कि एक कामयाब वकील बन कर चीफकोर्ट की जजी तक पहुँचना चाहिये। इसलिये Jurisprudcene तथा अन्य कानून शास्त्र के सम्बन्ध में आपने खूब परिश्रम किया। वकालत खूब चली। इधर पारिवारिक सुख भी प्राप्त होने लगे। दो कन्याएं और दो पुत्र हुए। अब तक आप किराए के मकान में रह कर वकालत का काम करते थे, अब आपने अपनी कोठी बनवानी शुरू की। जालन्धर में आप की कोठी प्रसिद्ध हो गई थी। बड़े चाव से यह कोठी बनवाई गई। १८९१ में, आप के जीवन में वह दुःखदायक घटना उपस्थित हुई, जो प्रायः मनुष्यों के जीवनों में क्रांति उत्पन्न कर दिया करती है। आप की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया। उस समय आपका सब से छोटा पुत्र केवल दो वर्ष का था। चारों बच्चे अभी नासमझ ही थे। चारों ओर से दबाव पड़ने लगा कि बच्चों के पालन-पोषण व रक्षा के लिये दूसरा विवाह कर लें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
परन्तु आप ने एक की भी न मानी, दूसरे विवाह का नाम तक न लिया। तब आप के बड़े भाई ला० आत्माराम जी अपनी धर्मपत्नी सहित जालन्धर में आ गए, दोनों भाई एक साथ रहने लगे। बच्चों के पालन-पोषण का भार बच्चों की ताई पर पड़ा, जिसे उन्होने बड़ी तत्परता से निभाया। सार्वजनिक कार्य की ओर रुचि होने पर भी लगभग सात साल तक वकालत का कार्य किया और प्रमुख वकील हो गये। परन्तु १८९२ में जब आप आर्य प्रतिनिध सभा पंजाब के प्रधान बने, तब आप का समय बंटने लगा, और समय का एक बड़ा भाग आर्यसमाज के अर्पण होने लगा। 'अर्थ' और 'धर्म' में यह युद्ध देर तक जारी रहा। इधर वकालत, उधर आर्यसमाज की सेवा, दोनों ओर की खींच हृदय में हलचल मचाने लगी। यह खींचतान लगभग आठ वर्षों तक जारी रही। अन्त में समाज-सेवा कार्य की ही जीत और वकालत की हार हुई। मित्रों हितैषियों और बन्धुओं के सभी दूर-दर्शितापूर्ण परामश व्यर्थ हुये और महात्मा मुंशीराम जी ने कचहरी में जाना बिलकुल बन्द कर दिया।

आर्यसमाज में प्रवेश करने के कुछ समय बाद ही आप जालन्धर आर्य-समाज के प्रतिनिधि चुने गये और जालन्धर आर्यसमाज के प्रतिनिधि बन कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) में भी सम्मिलित होते थे। इस समय लाहौर में डी.ए.वी. कालेज की स्थापना की धूम थी। पं० गुरुदत्त जी का प्रभाव सर्वोपरि था। महात्मा मुंशीराम जी भी पं० गुरुदत्त के विशेष भक्तों में सम्मिलित हो कर अष्टाध्यायी और संस्कृत के अन्य ग्रन्थों के पठन-पठान में लग गये। शीघ्र ही डी. ए. वी. कालेज के संचालक आर्य-पुरुषों में मत-भेद पैदा हो गया। पं० गुरुदत्त जी वेद, अष्टाध्यायी और निरुक्त के भक्त थे। वह समझते थे कि जो दयानन्द की यादगार में बनाया गया है उस में वेद और वेदांग की पढ़ाई होनी आवश्यक है। दूसरा पक्ष मानता था कि यह आवश्यक नहीं और शिक्षा समय के अनुसार ही होनी चाहिये। अष्टाध्यायी आदि का बोझ डालना ठीक नहीं। इस मत भेद ने धीरे-धीरे उग्र रूप धारण किया। अष्टाध्यायी के विरोधी दल में भी आर्यसमाज के बड़े बड़े नेता थे। महात्मा मुंशीराम जी की सम्मति पं० गुरुदत्त जी से मिलती थी। वह भी यही मानते थे कि जिस संस्था को आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द की स्मृति में स्थापित किया है, उस में वेद-वेदांग की पढ़ाई न हो, तो फिर संस्था की आवश्यकता ही क्या है? यह झगड़ा देर तक चला, और अन्दर ही अन्दर बढ़ता हुआ पीछे से बड़े विशाल रूप में परिणत हो गया।

पार्टी के नेता

१८९० में पं० गुरुदत्त जी अकाल मृत्यु के ग्रास हुये। तब उस समूह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का नेतृत्व आप पर आ गया, जो डी. ए. वी. कालेज पाठविधि में संस्कृत का अधिक प्रवेश कराना चाहता था। १६१२ में आप आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चुने गये। इस के अनन्तर घटना-चक्र शीघ्र-शीघ्र बदलने लगा। उसी वर्ष आर्यसमाज लाहौर के उत्सव के समय मांस-भक्षण का झगड़ा भी चल पड़ा। आर्यसमाज के कुछ सभ्यों ने भरी सभा में यह उद्घोषित कर दिया कि वे मांसभक्षण को वेद के या धर्म के विरुद्ध नहीं समझते। ये सज्जन वे ही थे, जो पाठविधि सम्बन्धी झगड़े में पं० गुरुदत्त जी के प्रतिपक्षी थे। जहां पहले आर्यसमाज का आन्तरिक मतभेद एक विषय में था, वहाँ अब दो विषयों में हो गया। दो दलों में से एक दल का नेतृत्व धीरे-धीरे महात्मा मुंशीराम जी के कन्धों पर पड़ा।

आर्यसमाज के आन्तरिक झगड़े की दुःखजनक कथा का वर्णन आवश्यक नहीं है। उसके लिये न तो यह उपयुक्त स्थान ही है, न अवसर ही। यहां तो इतना ही बता देना पर्याप्त है कि झगड़ा धीरे-धीरे उग्र रूप धारण करता गया। १८६१ में मांस-भक्षण का झगड़ा शुरू हुआ। १८६३ में आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव पर उसी दलबन्दी को लक्ष्य में रख कर भारी प्रतिद्वन्द्विता हुई। १८६४ में झगड़ा चरम सीमा को पहुँच गया। डी. ए. वी. कालेज की कमेटी के अधिवेशन में बल-प्रयोग तक की नौबत आ गई। इन वर्षों में उस दल के नेता जिसे अब हम महात्मा पार्टी कह सकते हैं, महात्मा मुंशीराम जी रहे। आपने १८६० में आर्यसमाज की लेखबद्ध सेवा के लिये 'सद्धर्म-प्रचारक' पत्र निकाला। उस ने उन दिनों बड़ा काम किया। उन दिनों आप को कितना कार्य करना पड़ा, इस का अनुमान शायद इस बात से लग सके कि आप के प्रतिपक्षियों में राय मूलराज एम. ए., महात्मा हंसराज ला० लाजपतराय और ला० लालचन्द्र एम. ए. आदि धुरन्धर प्रभावशाली सज्जन थे १८६४ में दोनों दल पृथक्-पृथक् हो गये। डी.ए.वी. कालेज राय मूलचन्द्र जी की पार्टी के हाथों में रहा। वह पार्टी 'कालेज-पार्टी' या 'कल्चर्ड-पार्टी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। 'महात्मा-पार्टी' के हाथ में आर्य प्रतिनिधि सभा रही, और वेद-प्रचार के नाम से आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रचार का कार्य प्रारम्भ हुआ। १८६५ में आर्य प्रतिनिधि सभा की रजिस्ट्री हो गई। इस समय पार्टियों की प्रतिद्वन्द्विता एक ओर, और आर्यसमाज के कार्य का उत्साह दूसरी ओर, इन दोनों ने मिल कर वकालत को पट कर दिया। सारा समय 'सद्धर्म-प्रचारक' के सम्पादन और प्रचार के दौरों के अर्पण होने लगा। घर का काम-काज गौण हो गया। महीने के तीस दिन घर के बाहर ही बीतने लगे। इन दौरों में आप के प्रमुख साथी पं० लेखराम जी थे।

पं० लेखराम जी

यहां पर कुछ घटनाओं की ओर निर्देशमात्र ही किया जा सकता है, इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटी-सी जीवनी में विस्तार से वर्णन नहीं हो सकता। अत्यन्त परिश्रम और रात-दिन कार्य करने से १८६६ में आप को उन्निद्र रोग हो गया। १६ रातों तक बिलकुल नींद नहीं आई। अनेक उपाय किये गये, पर कुछ भी फल न हुआ। अन्त को पहाड़ पर जा कुछ समय विश्राम करने से नींद फिर आने लगी। १८६७ में धर्मवीर पं० लेखराम जी का एक मुसलमान के हाथ से वध हुआ। महात्मा जी और पं० लेखराम जी का भाई-भाई का-सा प्रेम था। पं० लेखराम जी का मृत्यु के समय महात्मा जी भी उपस्थित थे। पं० लेखराम जी का अन्तिम सन्देश यही था कि "लेख का कार्य बन्द न होने पावे।" उसी सन्देश को सिर आंखों पर रख कर महात्मा जी ने बहुत-सा समय और बहुत-सा द्रव्य पंडित लेखराम जी के और कुछ अपने लिखे हुये ग्रन्थों के छपाने में खर्च किया। १८६७ में पं० गोपीनाथ के साथ आपके वे प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुये, जिन का आर्यसमाज के इतिहास में विशेष स्थान है। जालन्धर के कन्या महाविद्यालय के संस्थापन में आप का विशेष हाथ था। आप उसके जन्मदाताओं में से एक थे। आप और ला० देवराज जी दोनों ने मिल कर बहुत वर्षों तक विद्यालय को चलाया। जब आप गुरुकुल के कार्य में लग गये, तब महाविद्यालय के कार्य का सारा बोझ ला० देवराज जी पर ही पड़ा। आज उस कन्या महाविद्यालय की जो उन्नत दशा है, वह आप के और ला० देवराज जी के परिश्रम का फल है।

गुरुकुल का स्वप्न

डी. ए. वी. कालेज को असफल समझ कर महात्मा जी के हृदय में यह भावना दृढ़ हो गई थी कि जब तक ब्रह्मचर्याश्रम की रक्षा के लिये गुरुकुल की स्थापना न होगी, तब तक ऋषि दयानन्द का अभिप्राय या उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता, न भारतवर्ष की शिक्षा का प्रश्न हल हो सकता है। आप को विश्वास हो गया था कि आर्यसमाज के लिये गुरुकुल की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है।

गुरुकुल की आवश्यकता का अनुभव करके आपने अपना विचार प्रस्ताव रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सामने उपस्थित किया। २५ नवम्बर १८९८ के अधिवेशन में यह स्वीकृत हुआ। सभा ने निश्चय किया कि प्रारम्भिक खर्च के लिये ८०००) रुपया इकट्ठा हो जाने पर उक्त, संस्था खोल दी जाय। कुछ समय तक नियम आदि बनते रहे। १८९९ में यह देख कर कि गुरुकुल की स्थापना का कार्य बहुत सुस्त चल रहा है आप घर से निकल खड़े हुये और 'सद्धर्म प्रचारक' में यह घोषणा कर दी कि जब तक गुरुकुल के लिये ३०,०००) रु० एकत्र न कर लेंगे घर में पांव न रखेंगे। सात महीने तक आप भारत में भ्रमण करते रहे। उस समय गुरुकुल का नाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक कोई नहीं जानता था। आप जहां कहीं जाते थे, तो लोग गर्दन हिला हिला कर कहते थे कि "बेचारा था तो कभी अच्छा, अब इसे क्या हो गया ?' क्योंकि वे गुरुकुल की स्थापना के विचार को एक पागलपन समझते थे। देश में दुर्भिक्ष था, ऐसे समय में ३०,०००) रुपये एकत्र कर लेना कोई साधारण बात नहीं थी। वकालत समाप्त हो गई, प्रेस का काम अस्त-व्यस्त हो गया, घर के धन्धों से पहले ही जुदा रहते थे, अब तो एक दम सम्बन्ध ही टूट गया। अस्तु, अभीष्ट द्रव्य एकत्र हो गया। आर्य समाज ने आप को अपूर्व प्रतिष्ठा दी। उसी समय से सेवा का आदर करने वाले समाज ने आपको 'महात्मा' की पदवी से अलंकृत किया, जो कि आप के सर्वथा योग्य थी।

स्वप्न सच्चा हुआ

हरिद्वार के समीप स्थान चुना गया, जो दान-रूप में ही प्राप्त हो गया। २ मार्च १९०२ को नीलगिरी और नील-धारा के बीच, विशाल जंगल में कुछ झोपड़ियां बना कर ६० के लगभग ब्रह्मचारियों को साथ ले आप वहाँ पहुंचे। आप उस के पहले मुख्याधिष्ठाता बने। वकालत पहले ही छूट गई थी, प्रेस का काम भी दूसरों पर डालना पड़ा। सब कुछ छोड़ कर आप गुरुकुल की धुन में मस्त हो गये। धीरे-धीरे सब कुछ गुरुकुल के अर्पण कर दिया। गुरुकुल में सब से पहले आपने अपने दोनों पुत्र भर्ती किये। कुछ साल पीछे अपना प्रसिद्ध "सद्धर्म प्रचारक प्रेस' गुरुकुल को दान दे दिया। जालन्धर वाली कोठी बाकी थी। उस में हजारों का सामान था। कोठी खाली पड़ी रहती थी, इस कारण जिस के हाथ जो लगा, वह उसे ले गया। अन्त में वह कोठी भी गुरुकुल को दान देकर आपने सर्वमेध-यज्ञ को पूर्ण किया। १९०९ से १९१७ तक आप एक मात्र गुरुकुल की धुन में मस्त रहे। आज गुरुकुल जिस उन्नत दशा में है, उसे देश भर जानता है। वह आप के बलिदान का साक्षी और आर्य समाज के धर्म-प्रेम का फल है। वह देश-भर का एक प्रधान राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, इस में कोई सन्देह नहीं।

आर्य समाज की रक्षा

आर्य समाज के जन्म काल से ही ईसाई पादरियों और मुसलमानों ने अपने धर्म की हानि देख कर आर्यसमाज का विरोध आरम्भ कर दिया था। अन्त में उन्होंने आर्यसमाज को वृटिश गवर्नमेंट का कोप-भाजन बनाने के उद्देश्य से उसे विशुद्ध राजनैतिक संगठन सिद्ध करने का यत्न किया। भारत में राजनैतिक जागृति हो ही रही थी। सन १९०७-१९१० में लण्डन के टाइम्स अखबार के संवाददाता सर वैलनटाइन शिरोल भारत में पधारे और उन्होंने कुछ विशेष लेख आर्यसमाज के खिलाफ भी लिखे। प्रसङ्ग से १९०७ई०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में आर्य समाज के प्रमुख कार्य-कर्ता ला० लाजपतराय, भाई परमानन्द जी भी राजनैतिक आन्दोलन में लपेट लिये गये। चारों तरफ आन्दोलन हुआ कि आर्य समाज एक विशुद्ध राजनैतिक संस्था है और उस को दबाया जाय। सरकारी सेवाओं में जहाँ आर्य लोग थे उन पर नजर रखी जाने लगी। सन् १९०९ ई० के अक्टूबर में, मिस्टर वारवर्टन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट पटियाला ने वहां के सब आर्य पुरुषों को इस बिना पर गिरफ्तार कर लिया कि आर्य समाज एक राजद्रोही संस्था है और विभिन्न सम्प्रदायों में विद्वेष फैलाता है। ऐसी दशा में जबकि चारों ओर अन्धकार दिखाई देता था—महात्मा मुंशी-राम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने मुकदमे की पैरवी का उत्तर दायित्व अपने ऊपर लिया। उस समय लाहौर आर्य समाज के ३१ वें वार्षिकोत्सव पर उन्होंने जो अपना सुप्रसिद्ध व्याख्यान दिया उस से आर्य पुरुषों में उत्साह की लहर दौड़ गई। उस व्याख्यान में उन्होंने ला० लाजपत राय तथा भाई परमा-नन्द जी को बड़ा उच्च-श्रेणी का देश-भक्त बताया और उन को निर्दोष भी सिद्ध किया। जब कभी भी आर्यसमाज पर आँच आई महात्मा जी सदैव उस की रक्षा करते रहे। इस प्रकार आर्यसमाज पर आये हुये काले बादल महात्मा जी के साहसपूर्ण और बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य संचालन से विच्छिन्न होते गये।

राष्ट्रीयता के संग्राम में

१९१७ में आपने संन्यास ले लिया। उस समय हरद्वार में आर्यसमाज एकत्र हुआ और सर्वमेघ यज्ञ का साक्षी बना। श्रद्धा से प्रेरित हो कर ही आप जन्म-भर कार्य करते रहे, इस कारण आपने अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखा। संन्यास ले कर आपने विस्तृत कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया। आप आर्यसमाज की सार्वदेशिक सभा के पहले ही से प्रधान थे। यह सभा आप के ही प्रयत्न का फल थी। संन्यास ले कर एक तो आपने इस के कार्य की ओर अधिक ध्यान दिया, और दूसरा कार्य जिस में आपने योग दिया, वह देश का धर्म-युद्ध था। आप स्वभाव से ही सरल, और इसलिये कुटिल-नीति के विरुद्ध थे। साथ ही विलायती फैशन और विदेशी ढङ्ग आप को कभी पसन्द नहीं थे। 'सत्य' और 'ब्रह्मचर्य', ये दो सिद्धान्त आप के संचालक थे, इस कारण आप १९१९ से पूर्व कांग्रेस की राजनीति के कड़े समालोचक रहे। माँगकर या परावलंबन से स्वराज्य पाने की चेष्टा आप के सिद्धान्तों के विरुद्ध थी। दिल्ली के सत्याग्रह में आपने राजा और प्रजा की भलाई की दृष्टि से जो कार्य किया, उसे संपूर्ण देश जानता हैं। गोरखों की ग्यारह किर्चें छाती पर लगीं हुई थीं, उस समय भी आप निर्भय, शांत रहे, जनता से शांत रहने का उपदेश करते रहे। वह भारत के इतिहास में एक स्वर्णिम दिन था, जब जामा-मस्जिद के मिम्बर पर खड़े हो कर एक संन्यासी (श्रद्धानन्द) ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दु-मुसलमानों की एकता पर धर्म की छाप लगा दी, और शहीदों के लिये मंगल-कामना कर के देश-भक्ति और धर्म के अच्छेद्य सम्बन्ध की घोषणा की।

मार्शल ला के शासन से पीड़ित पंजाब के अंगों के घाव पर मरहम लगाने के लिये पं० मदन मोहन मालवीय, पं० मोतीलाल नेहरू आदि जो महानुभाव पंजाब में पहुंचे, स्वामी श्रद्धानन्द जी उन में मुख्य थे। अनाथों और विधवाओं को सहायता देने का काम आपने अपने जिम्मे लिया, और सेवा-समिति के उपप्रधान की हैसियत से प्रांत-भर में भ्रमण कर के उस समय जागृति उत्पन्न की, जिस समय की अचिन्तित आपत्ति के आतंक से प्रांत का शरीर मूर्छित दशा में पड़ा हुआ था। उस वर्ष के अन्त में कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में होने को था। दुःखित पंजाब, उस पर भी वह अमृतसर, जिस के अंग-प्रत्यंग छिदे पड़े थे— कांग्रेस का अधिवेशन कर सकेगा, यह किसी को आशा नहीं थी। यह प्रस्ताव किया कि अमृतसर में कांग्रेस न की जाय। आपने इस प्रस्ताव का भारी विरोध किया। तब कांग्रेस करने का बोझ आप ही पर आ पड़ा। आप स्वागतकारिणी समिति के सभापति बनाये गये। कांग्रेस का अधिवेशन किस खूबी से हुआ और कैसे सुन्दर ढ़ंग से समाप्त हुआ, यह बताने की आवश्यकता नहीं। उस अचिन्तित कृतकार्यता में आप का सब से अधिक हाथ था।

हिन्दी-प्रेम

हिन्दी भाषा से आप को गहरा प्रेम था। जब 'सद्धर्म-प्रचारक' उर्दू में था, तब भी उस की भाषा आधी हिन्दी होती थी। सद्धर्म-प्रचारक अपने जीवन के १७ वर्ष उर्दू के कलेवर में काट कर १९९७ में नागरी अक्षरों में निकलने लगा। उस समय सद्धर्म-प्रचारक को हिन्दी लिपि व भाषा में परिवर्तन कर देने से आप को बहुत आर्थिक हानि उठानी पड़ी। पंजाब में हिन्दी पढ़ने वाले बहुत कम हैं। परन्तु आदर्श-प्रियता की लगन में आर्थिक हानि-लाभ का दृष्टि-कोण आप के सिद्धान्तों के बहिर्गत है। आप उर्दू के ओजस्वी लेखक थे। 'उपदेश-मंजरी' "सुबह उम्मीद" आदि कई ग्रन्थ आप ने उर्दू में लिखे हैं। हिन्दी में आप ने धर्मवीर पंडित लेखराम का जीवन-चरित्र, 'आदिम सत्यार्थ-प्रकाश' आदि कई ग्रन्थों के अतिरिक्त धर्म-विषय पर बहुत से छोटे-छोटे ट्रैक्ट भी लिखे हैं। उर्दू-प्रधान पंजाब में नागरी अक्षर और हिन्दी के प्रचार का प्रधान श्रेय आप को ही है। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के भागलपुर के अधिवेशन में, इन्हीं सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप, हिन्दी-भाषी-जनता ने आप को सभापति चुना। अपने प्रारम्भिक भाषण में आपने हिन्दी के स्थान पर 'मातृभाषा शब्द' का प्रयोग किया था। सन् १९२४ में दिल्ली में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का जो अधिवेशन हुआ उस में आप स्वागतकारिणी सभा के अध्यक्ष बनाये गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल

१९१७ में संन्यास ले कर स्वामी जी गुरुकुल से चले गये, और दिल्ली में आसन जमाया। १९१९ के अन्त में अमृतसर कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। अभी आप अमृतसर में ही थे, जब गुरुकुल के संचालकों की ओर से आप से यह प्रार्थना की जाने लगी कि आप गुरुकुल को पुनः संभालें। यद्यपि राष्ट्र-सम्बन्धी कार्य में स्वामी जी के पांव बहुत उलझ चुके थे, तो भी गुरुकुल की रक्षा का आकर्षण भी कुछ कम न था। गुरुकुल स्वामी जी के धार्मिक, सामाजिक और नैतिक आदर्शों का केन्द्र था। हृदय के प्रिय सब आदर्शों को आप गुरुकुल में कार्य-परिणत करना चाहते थे। जब गुरुकुल की रक्षा के नाम पर आग्रह पूर्वक बुलाया गया तो समाज-सेवा के सब बाह्य बन्धनों को तोड़ कर आप गुरुकुल में वापिस चले गये।

असहयोग के मैदान में

लगभग दो वर्ष तक स्वामी जी दुबारा गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य बनकर राष्ट्रीय शिक्षा के विचार को क्रियारूप में परिणत करने का उद्योग करते रहे, परन्तु इस का यह तात्पर्य नहीं कि बाहिर के विस्तृत कार्य-क्षेत्र से पृथक् हो गये। राष्ट्रीय जीवन में उन का जो स्थान बना था, उसे वह बराबर पूर्ण करते रहे।

१९२१ में भारत का राजनैतिक वायु-मण्डल फिर गर्म हो गया। असहयोग और सत्याग्रह की दुन्दुभि चारों ओर बजने लगी। देश-भक्तों को जेल में ठूंसा जाने लगा। महात्मा गांधी के रणाह्वान को सुनकर देश के युवक-हृदय स्वाधीनता की वेदी पर आहुति देने के लिए 'मैं पहले' 'मैं पहले' की पुकार मचाते हुए आगे बढ़ने लगे। मातृ-भूमि का हृदय उच्छ्वासित हो उठा। संसार सोये हुये भारत रूपी अजदहे को आश्चर्य चकित नेत्रों से जागने और हिलने की चेष्टा करते हुए देखने लगा। जब रण की भेरी बज रही हो, तब बांका क्षत्रिय पहाड़ की तलैटी में बैठ कर क्या करता? १९२० के अन्त में स्वामी जी बहुत रोगी हुये। नागपुर की कांग्रेस से लौटे तो इन्फ्लुएंजा ज्वर हो गया, और उस के पीछे बहुत समय तक ब्राईट्सडिजीज नाम की बिमारी से घिरे रहे। डा० अन्सारी की दवाओं, डा० सुखदेव की चिकित्सा से आप नीरोग तो हो गये, परन्तु पूरी तरह स्वस्थ न हो सके। इसी दशा में कई मास तक रहने पर भी कुछ सेहत अच्छी हुई थी कि असहयोग की लड़ाई गर्म हुई। रण-भेरी पर नाचने वाला हृदय शान्त न बैठ सका। गुरुकुल का बोझ दूसरे कन्धों पर डाल कर स्वामी जी फिर मैदान में उतरे और १९२१ के अन्त में भारत की राजधानी में आसन जमाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अहमदाबाद कांग्रेस

१९२१ के अन्त में कांग्रेस का अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ। वह अधिवेशन भारत की राष्ट्रीयता के इतिहास में स्मरणीय रहेगा। देश आशा के घोड़े पर सवार होकर सरपट भागा जा रहा था। रास्ते में कोई खाई या कुंआ भी आ सकता है इस का किसी को ध्यान तक न था। तिलकनगर में लगभग दो लाख आदमी एकत्र हुये। एक वेष था, एक भाव था, एक लगन थी। तिलक नगर में खद्दर ही खद्दर दिखाई देता था। एक विशेषता यह थी कि उस संपूर्ण स्वराज्य की बस्ती में एक भी पुलिस का सिपाही नहीं था। सारा प्रबन्ध जाति के अपने हाथों में था। स्वामी जी भी उस अधिवेशन में सम्मिलित हुये थे, और न्यायधीश का कार्य उन के सुपुर्द था। जो सन्दिग्ध वा अपराधी आदमी पकड़ा जाता था, स्वयं सेवक उसे स्वामी जी के पास पकड़ लाते। स्वामी जी उस से अपराध स्वीकार करा लेते और यह वायदा कर कि फिर ऐसा न करूंगा, छोड़ देते थे। स्वामी जी ने उस स्मरणाय कांग्रेस में पूरा सहयोग दिया, और महात्माजी को आश्वासन दिलाया कि स्वराज्य की लड़ाई में वह उन के साथ रहेंगे।

बारदोली और उसके पीछे

'उदय और अस्त के नियम' के अनुसार अहमदाबाद के पीछे बारदोली का नम्बर आना जरूरी था। अहमदाबाद में राष्ट्र की आशा जिस ऊंचाई पर चढ़ गई थी, उस पर देर तक रहना कठिन था। दो ही संभावनायें थीं। या तो असंभव संभव हो जाता और सदियों का गुलाम देश एक दम स्वाधीन हो जाता, अथवा ऐसी टक्कर लगती कि संभलना असम्भव हो जाता। भारत के ऐसे भाग्य कहाँ कि पहली संभावना पूरी होती। आशा के जोश ने जिस खाई को नहीं देखा था वह सामने आ गई। महात्मा गाँधी ने बारदोली के सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। देश का उत्साह पहाड़ के शिखर पर से उतरा तो गढ़े में जा गिरा।

स्वामी जी सत्याग्रह के संग्राम में महात्मा गांधी जी के साथ थे परन्तु एक-दो बातों में उन का सदा मत-भेद रहा। भेद की एक बात यह थी कि जहां महात्मा जी सार्वदेशिक अहिंसा को सत्याग्रह की आवश्यक शर्त मानते थे, वहां स्वामी जी की सम्मति थी कि सार्वदेशिक अहिंसा असंभव है। जो लोग सत्याग्रह करें उनका अहिंसाव्रती होना पर्याप्त है, यह आवश्यक नहीं कि देश-भर में कहीं भी हिंसा न हो। यदि सार्वदेशिक अहिंसा की शर्त रखी जायेगी तो कभी सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। चौरी-चौरा की घटना से प्रभावित होकर महात्मा जी ने बारदोली के सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। स्वामी जी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने पसन्द नहीं किया। उनकी सम्मति थी कि केवल एकदेशी हिंसा से सत्याग्रहियों का अपने प्रण से विचलित होना उचित नहीं है।

दलितोद्धार और कांग्रेस

सत्याग्रह को स्थगित करते हुए महात्मा गाँधी ने काँग्रेस के सम्मुख जो कार्यक्रम रखा था उसका एक विशेष अंग 'अछूतोद्धार' था। स्वामी जी अछूतोद्धार की आवश्यकता को देर से अनुभव कर रहे थे। गुरुकुल की स्थापना से पूर्व ही आर्यसमाज जालन्धर की ओर से रहतियों (चमारों) की शुद्धि कर के आप दलितोद्धार की बुनियाद डाल चुके थे। आप गुरुकुल कांगड़ी में भी उच्च कुल के छात्रों के साथ-साथ मेघ जाति के छात्रों को प्रविष्ट कर के यह भी दिखला चुके थे कि क्रियात्मक अछूतोद्धार किस तरह किया जा सकता है। दिल्ली में आप के सामने अछूत की समस्या जीवित-रूप में उपस्थित हुई। रुपये का प्रलोभन दे पादरी, और जूते की बिक्री का का दवाव डाल कर मुसलमान व्यापारी चमारों को अपने चंगुल में फंसाने का यत्न कर रहे थे। उन की रक्षा के लिए उन्हीं दिनों स्वामी जी की प्रेरणा से उन की संरक्षता में 'दलितोद्धार सभा' कायम हो चुकी थी। जब काँग्रेस ने अछूतोद्धार के कार्य को अपने हाथ में लेने का निश्चय किया तब स्वामी जी रचनात्मक कार्य के उस अंग में अपनी संपूर्ण शक्ति लगाने के लिए उद्यत हो गये। आप के प्रस्ताव पर अछूतोद्धार के कार्य के लिए कमेटी बनी और चन्दे की अपील भी तैयार की गई, परन्तु कई कारणों से कार्य आगे न चला। प्रतीत होता है कि मुसलमान मेम्बरों के भय से कांग्रेस के अधिकारी अछूतोद्धार के कार्य को हाथ में लेने से घबराते थे। स्वामी जी के बहुत बार प्रेरणा करने पर भी जब कुछ हल न निकला तब स्वामी जी ने निराश हो कर काँग्रेस से त्याग-पत्र दे दिया, और स्वतन्त्र रूप से दलितोद्धार के कार्य में लग गये। दिल्ली की दलितोद्धार सभा ने आप की संरक्षता में जो उपयोगी कार्य किया है, उस की जानने वालों ने शतमुख से प्रशंसा की है।

जेल में

१९२२ में सारा भारतवर्ष सिक्खों के सत्याग्रह के नाद से गूंज गया। अमृतसर में 'गुरु का बाग' पर अंग्रेजी सरकार अपने असली पाशविक-रूप में और सिक्ख-जाति सच्चे क्षत्रिय-रूप में प्रकट हुई। निहत्थे अकाली वीरों पर लाठियों के क्रूर प्रहार का शब्द देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सुनाई दिया। स्वामी जी दिल्ली में थे। वहाँ भी वह शब्द पहुँचा। दूसरे की आपत्ति को देख कर रक्षार्थ कूद पड़ना स्वामी जी के स्वभाव में था। अकाली वीरों के दुःख में हिस्सेदार बनने के लिए आप अमृतसर पहुँचे और अकाल तख्त के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पास खड़े हो कर सिक्ख-जाति को यह सन्देश सुनाया कि आप लोगों के धर्म-संग्राम में हिन्दू आप के साथ हैं। सरकार देर से ताक में बैठी थी। उसे अब-सर हाथ लगा। १० सितम्बर १९२२ को आप वहीं पर गिरफ्तार कर लिए गये और कुछ दिनों तक मुकदमे का ढोंग बनाने के पीछे जेल में भेज दिये गये। आपको १७ महीने की सादी कैद की सजा मिली। परन्तु कुछ समय पीछे अकालियों के साथ सरकार ने नर्मी का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। बहुत से कैंदी छोड़े गये। पहले तो सरकार स्वामी जी को छोड़ने को तैयार न हुई परन्तु जब पंजाब के अखबारों ने शोर मचाया तब २६ दिसम्बर को आप जेल से छोड़ दिये गये।

'शुद्धि सभा' की स्थापना

जेल से छूट कर कुछ दिनों तक स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी में विश्राम किया। प्रबन्ध से सम्बन्ध न रखते हुये भी अन्त तक स्वामी जी का आत्मिक घर और शांति का सदन गुरुकुल कांगड़ी ही था। १२ फरवरी को दिल्ली में सर हरिसिंह गौड़ के विवाह-सुधार-बिल के समर्थन में एक सभा हुई, जिस के आप सभापति बने। कई हज़ार की उपस्थिति में केवल १५ हाथ विरोध में उठे। शेष सब ने अनुकूल राय दी।

उसी रात को दिल्ली से चल कर २३ फरवरी को स्वामी जी आगरा पहुँचे। आगरा में राजपूत सभा की ओर से मुसलमान बने हुये जाटों तथा गूजरों को बिरादरी में वापिस लेने के सम्बन्ध में विचार हो रहा था। वे लोग नाम-मात्र के मुसलमान थे और 'मूले, तथा 'मलकाने' कहलाते थे। उन के रीति-रिवाज और वेश-भूषा सब हिन्दुओं के-से थे। अभी तक नाम भी हिन्दु-आने ही थे। राजपूत सभा देर से उन्हें अपनी बिरादरी में वापिस लेने का विचार कर रही थी। १३ फरवरी को राजपूत क्षत्रिय-सभा की ओर से मूले तथा मलकानों को बिरादरी में वापिस लेने के सम्बन्ध में विचारार्थ बहुत से महानुभाव आगरा में निमन्त्रित किये गये थे। उन में से स्वामी जी भी एक थे। बहुत से ऊहापोह और विचार के अनन्तर मूलों तथा मलकानों की शुद्धि के लिये 'हिन्दू-शुद्धि-सभा' की स्थापना की गई, और स्वामी श्रद्धानन्द जी उस के सभापति बनाये गये। क्या सरकारी रिपोर्टों और क्या मुसलमान प्रचारकों के लिखे हुये वृत्तान्तों में—जहां देखिये—यही लिखा मिलेगा कि मूले तथा मल-काने नाम-मात्र के मुसलमान हैं। उन्हें बिरादरी में वापिस लेने का नाम शुद्धि रखना भी भूल है।

स्वामी जी शुद्धि-सभा के प्रधान बने हैं, यह घोषणा समाचार-पत्रों में होते ही मुसलमानों में एक तरह की आग लग गई। हिन्दू हर रोज मुसलमान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बने, यह तो एक साधारण बात थी, परन्तु मुसलमानों को हिन्दू बनाया जाय यह कैसे सहन किया जा सकता था? समाचार-पत्रों और सभाओं में एक तूफान मच गया और मुसलमान स्वामी जी के जानी दुश्मन हो गये। उस दिन से ले कर अन्त समय तक बराबर मुसलमान समाचार-पत्र और प्रचारक स्वामी जी को गाली देते और कोसते रहे, जिस का परिणाम यह हुआ कि अनपढ़ और साधारण मुसलमान उन के जानी दुश्मन हो गये।

उस समय से ले कर अन्त समय तक स्वामी जी शुद्धि-सभा की आत्मा बन कर रहे। कभी प्रधान, कभी उपप्रधान और कभी कार्यकर्ता प्रधान की हैसियत से कार्य करते हुये वह सभा की उन्नति के लिये यत्नवान् रहे। हजारों मलकाने शुद्ध हो गये, हिन्दू-जाति की पाचन शक्ति बढ़ गई, एक प्रकार से मुर्दा हिन्दू जाति में जान पड़ गई। ज्यों-ज्यों हिन्दुओं में जागृति पैदा होती जाती थी, त्यों-त्यों मुसलमानों का स्वामी जी से द्वेष-भाव भी बढ़ता जाता था। धमकियों की चिट्ठयां तो प्रायः रोजाना ही आती रहती थीं।

'हिन्दू-सङ्गठन' के लिये दौरे

दलितोद्धार और शुद्धि के आन्दोलन में पड़ने पर स्वामी जी ने हिन्दू-जाति की निर्बल दशा का अनुभव किया। उन्होंने देखा कि हिन्दुओं में आत्माभिमान, आत्म-विश्वास और जीवन-शक्ति की बड़ी कमी है शरीर के एक अङ्ग से दूसरा अङ्ग अलग हो रहा है। हिन्दू-जाति में धन है, बल है, परन्तु एकता नहीं है, सङ्गठन नहीं है। तब आप ने हिन्दू-सङ्गठन की आवश्यकता को और अधिक अनुभव किया १९२३ के अन्त में बनारस में हिन्दू-महासभा का अधिवेशन था। उस से पूर्व स्वामी जी ने संयुक्तप्रांत (यू० पी०) और बिहार का दौरा किया। वह दौरा लगभग एक मास तक रहा। इस एक मास में स्वामी जी ने लगभग १०० से अधिक व्याख्यान दिये। ३० स्थानों पर अभिनन्दन-पत्र लिये और दो दजन से अधिक हिन्दू सभायें स्थापित कीं। इस दौरे की समाप्ति हिन्दू-महासभा के अधिवेशन पर हुई। उस अधिवेशन की सफलता का अधिकतर श्रेय स्वामी जी को ही था। महासभा के अधिवेशन में स्वामी जी उप-सभापति चुने गये। इस के अनन्तर भी स्वामी जी ने हिन्दू-सङ्गठन और अछूतोद्धार के लिये संयुक्तप्रांत, पंजाब, बिहार और मालाबार आदि में अनेक बड़े-बड़े दौरे किये। यद्यपि इस समय से ले कर अन्त तक स्वामी जी किसी-न-किसी हैसियत से सभा के साथ सम्बद्ध रहे परन्तु समाज-सुधार सम्बन्धी मतभेद बराबर बना ही रहा। विधवाओं के पुनर्विवाह और अछूतों को गायत्री का उपदेश करने के सम्बन्ध में सनातन-धर्मावलम्बी हिन्दुओं के साथ स्वामी जी का मतभेद था। स्वामी जी इन दोनों सुधारों को हिन्दू जाति के जीवन के लिए जरूरी समझते थे, परन्त महासभा इतनी दूर तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाने को तैयार नहीं थी, इस कारण स्वामी जी ने कई बार हिन्दु-महासभा से त्याग-पत्र भी दिया।

कन्या गुरुकुल की स्थापना

स्त्री-शिक्षा की ओर स्वामी जी का पहले से ही झुकाव था। जालन्धर के कन्या महाविद्यालय की स्थापना में आप का भी विशेष हाथ था। बालकों के लिए गुरुकुल बन जाने पर आप को बराबर यह ध्यान रहा कि कन्याओं के लिये गुरुकुल की स्थापना की जाय। कई वर्ष पूर्व दिल्ली के दानवीर सेठ रघुमल जी से आपने कन्या गुरुकुल के लिए एक लाख रुपये की सहायता का वायदा लिया हुआ था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जब आप प्रधान थे, तब सभा ने कन्या गुरुकुल की स्थापना करने का निश्चय किया था। भूमि ले ली गई थी, और पाठविधि आदि का निर्णय भी हो रहा था। पीछे से सार्वदेशिक सभा से यह कार्य पंजाब की प्रतिनिधि सभा ने ले लिया। ६ नवम्बर १९२३ को दिल्ली की दरियागंज कोठी में कन्या गुरुकुल का प्रारम्भोत्सव हुआ। उत्सव श्री स्वामी जी के हाथों से ही प्रारम्भ कराया गया। कन्या गुरुकुल स्वामी जी के संकल्प और चिन्तन का ही फल था, इसलिए यह उचित ही था कि उन्हीं के हाथ से यह कार्य सम्पादित हुआ।

दयानन्द जन्म-शताब्दी समारोह

१९२५ ई० के फरवरी मास में आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाई जाने वाली थी। शताब्दी मनाने का विचार कई वर्षों से चल रहा था। जो सभा संगठित की गई थी, उस के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। कुछ समय पीछे आप मद्रास, बंगाल आदि में शुद्धि सम्बन्धी दौरे पर चले गये। तब शताब्दी की कमेटी के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री नारायण स्वामीजी बनाये गये। बीच-बीच में स्वामी जी मथुरा आकर कार्य की देखभाल करते रहे। उत्सव के कुछ पूर्व आप मथुरा में जा बैठे। शताब्दी का समारोह अपूर्व रहा। वह केवल आर्यसमाजियों का समारोह नहीं था, वह संपूर्ण हिन्दू जाति का समारोह था। श्रीयुत नारायण स्वामी जी के परिश्रम और स्वामी श्रद्धानन्द जी की कल्पना ने एक ऐसा अपूर्व धार्मिक मेला कर दिखाया जो हिन्दू-जाति को वर्षों तक याद रहेगा।

एकता सम्मेलन

मलाबार में मोपलाओं ने १९२१ में जो उपद्रव किया, और उस में हिन्दू सहवासियों पर जो अत्याचार किये उसने जातीय उपद्रवों का दौर-दौरा आरम्भ कर दिया। मुलतान, सहारनपुर, अजमेर, गुलबर्गा और कोहाट में एक-दूसरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के पीछे उपद्रव व दंगे होते गये। मुसलमानों के गुरुओं ने उन्हें उल्टी शिक्षा पढ़ाकर हिन्दुओं की शुद्धि का जवाब दंगों और फिसादों से देने के लिए प्रेरित किया। महात्मा गांधी, जो अपने आप को एकता का सबसे बड़ा वकील समझते थे, जातीय विद्वेष के प्रवाह को रोकने का यत्न करते रहे। महात्मा जी ने यथाशक्ति सब कुछ किया। उन्होंने 'यङ्ग इण्डिया' में कई लेख लिखे, जिनमें आर्यसमाज को दोषी ठहरा कर मुसलमानों के क्रोध को शान्त करने का यत्न किया। इस्लाम की शिक्षा को शान्तिपूर्ण और अहिंसक सिद्ध करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी किन्तु 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।' मुसलमान जनता को जो खून चढ़ा वह अधिक-ही-अधिक गहरा होता गया। कोहाट पर वह सीमा की रेखा को पार कर गया। मुसलमानों के लिये अत्यन्त उदार महात्मा जी का हृदय भी खिन्न हो उठा। कोहाट के समाचारों ने उन्हें कम्पित कर दिया। उन्होंने २१ दिन के उपवास का व्रत किया। इस समाचार ने देश में हाहाकार मचा दिया। महात्मा जी दिल्ली में थे। दिल्ली निवासियों पर उपवास के व्रत का अधिक असर पड़ा। हकीम अजमल खां, स्वामी श्रद्धानन्द और मौ० मुहम्मद अली की ओर से दिल्ली में 'एकता कान्फ्रेन्स' का एक अधिवेशन बुलाया गया। अधिवेशन बड़ी धूमधाम से हुआ। पं० मोतीलाल जी ने सभापति पद को ग्रहण किया। तीन दिन तक उस कान्फ्रेन्स की कार्यवाही होती रही, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन तीन दिनों में जिस धार्मिक उदारता, एकता और प्रेम का परिचय दिया, उस के सिक्के को विरोधियों ने भी माना। बम्बई के मि० नरीमन ने स्पष्ट शब्दों में लिखा था कि इस सम्मेलन को जितनी सफलता (यद्यपि वह सफलता केवल शाब्दिक थी) प्राप्त हुई, उस का एक बड़ा कारण स्वामी जी की उदारता थी।

एक क्रियात्मक जीवन

इस संक्षिप्त विवरण में हमने स्वामी जी के जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओं की ही चर्चा की है। उन का संपूर्ण जीवन कर्मयोगमय था। १२ महीने और २४ घंटे कमर कस कर तैयार रहते थे। यों तो उन्हें कई रोगों ने घेर रखा था। बवासीर का रोग पुराना था। जुकाम और खांसी का कष्ट प्रायः सताया करता था, लगभग ४० वर्ष तक हरनिया के रोग ने भी दबाये रखा। अन्तिम दिनों में बुढ़ापे का रोग 'ब्राईट्स-डिजीज' भी शरीर में घर कर गया था। इतने रोगों के शिकार होते हुए भी देखने में स्वामीजी ७० वर्ष से अधिक आयु के नहीं मालूम होते थे। प्रतिदिन प्रातः काल ३ बजे उठ कर घण्टा-भर ध्यान में बैठते थे, फिर नित्य कर्म से निवृत्त होते थे। ७१ वर्ष का आयु तक भी उन्होंने व्यायाम में कभी नागा नहीं किया। थोड़ा बहुत व्यायाम नित्य करते थे। फिर ठण्डे जल से स्नान करते थे। शीतकाल में भी रात के रखे हुये जल का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयोग करते थे। भोजन और शयन के नियमों का यथा सम्भव बड़ी कड़ाई से पालन करते थे। भोजन में न मिर्च होती थी और न मसाला डाला जाता था। केवल नमक और हल्दी के प्रयोग से जो भोजन तैयार होता था, उसे आप बड़े प्रेम से खाते थे। रात को ९ बजे सो जाते थे, और सुबह ३ बजे उठ खड़े होते थे। इसी नियमबद्ध और ब्रह्मचारी-जीवन का परिणाम था कि आप इतनी उमर में, अनेक रोगों से घिरे रहने पर भी देखने में हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते थे, लम्बी-लम्बी यात्राएं दौरे कर सकते थे। एक दिन में तीन-तीन चार-चार व्याख्यान देते थे। इस वृत्तान्त में हम ने केवल मुख्य-मुख्य घटनाओं की चर्चा की है। इन घटनानों के मध्य में जो अवकाश भाग हैं, वह यदि बीमारी में व्यतीत नहीं हुए तो प्रचार और कार्यों में व्यतीत हुए हैं। यदि जीवन के अन्त तक कमर कसी रख कर कार्य करना संभव है तो वह स्वामी जी के जीवन में प्रत्यक्ष हो गया।

शान्तिदेवी की शुद्धि और मुकदमा

२५ मार्च १९२६ को असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान महिला अपने दो लड़के और भतीजे के साथ दिल्ली स्टेशन पर उतरी। वह स्टेशन से उतर कर आर्यसमाज में गई। उस का नाम बदल कर शांति देवी रखा गया। उस के दोनों पुत्रों में से बड़ा ४ वर्ष का था उस का नाम धर्मपाल रखा गया। छोटे की आयु डेढ़ वर्ष के लगभग थी, वह अभी माता का दूध पीता था, उसका नाम अर्जुन रखा गया। भतीजे का नाम अमरसिंह रखा गया। शान्तिदेवी समाज मन्दिर से शुद्ध हो कर 'वनिता विश्राम आश्रम' में भेजी गई। इस आश्रम के मन्त्री डा० सुखदेव जी थे। डा० सुखदेव जी के साथ महात्मा मुंशीराम जी की पुत्री अमृतकला का विवाह हुआ था।

आश्रम में रह कर शांतिदेवी ने हिन्दी-संस्कृत तथा धर्म-ग्रन्थों को पढ़ना आरंभ किया। ३ महीने इसी प्रकार व्यतीत हो गये। जून मास के अन्त में असगरी बेगम के पिता लड़की का सुराग पाकर मौलवी ताज मुहम्मद खां नामक नव-युवक एक मुसलमान के साथ दिल्ली पहुंचे। कुछ दिन पीछे असगरी का भूतपूर्व पति अब्दुल हलीम भी पहुंच गया। मुसलमान नवयुवक और मौलवी ताजमुहम्मद खां ने मिल कर शान्तिदेवी को फिर से इसलाम में वापिस ले जाने की चेष्टा की। उन्होंने आकर स्वामी जी से और डा० सुखदेव जी से शान्तिदेवी से मिलने की इच्छा प्रगट की। उन्हें खुली इजाजत दी गई कि वह जब चाहें तब मिलें और समझाने का यत्न करें। उन के बहुत यत्न करने पर भी शान्तिदेवी ने इस्लाम में वापिस जाना मंजूर नहीं किया। इस से असगरी बेगम के सम्बन्धी बहुत रुष्ट हुये। रोष तो था असगरी बेगम की शुद्धि पर. परन्तु दिल्ली की इस्लामी अंजुमनों ने झगड़ा कर उन्हें स्वामी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जी पर तथा अन्य हिन्दू कार्यकर्ताओं पर इस्तगासा करने के लिये तैयार कर दिया। असगरी बेगम के पति अब्दुलहलील ने जून के अन्त में श्रीमती शांति-देवी के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी, डा० सुखदेव जी, ला० देशबन्धु गुप्त प्रो० इन्द्र, ला० गणपतराय तथा मन्त्री आर्य-समाज करांची पर नालिश कर दी कि जहां शांतिदेवी ने उस के नाबालिग बच्चों को भगाया है वहां शेष सब ने उन के भगाने में सहायता की है। मुसलमानों की ओर से प्रायः यह आक्षेप किया जाता था कि आर्यसमाजी औरतों और बच्चों का अगवा करते हैं। इस मुकदमे ने एक प्रकार से इस आक्षेप का समाधान कर दिया। मुकदमा खूब धूम-धाम से चला। मुसलमानों की सब अंजुमनों की शक्तियां लगाई गयीं, लाहौर से बैरिस्टर बुलाये गये। मि० लूइस ने बड़े धैर्य से इस्तगासे की गवाही सुनी, और अन्त में सब अभियुक्तों के बयान ले कर फैसला किया। मजिस्ट्रेट ने सभी अभियुक्तों को सर्वथा निर्दोष ठहराया। आर्यसमाज के कार्य की जैसी सफाई इस मुकदमे ने पेश की, वैसी अच्छी शायद सैकड़ों किताबों, व्याख्यानों से न होती।

मुकदमे ने स्पष्ट कर दिया कि असगरी बेगम को करांची से लाने तथा शुद्ध करके शान्तिदेवी बनाने में स्वामी जी का या किसी अन्य अभियुक्त का कोई हाथ नहीं था यह भी साफ हो गया कि शुद्ध करने के अनन्तर श्रीमति शांतिदेवी को किसी बन्धन में नहीं रखा गया। वह आर्यसमाज में रहने या इस्लाम में वापिस जाने में बिलकुल स्वतन्त्र थीं। यह ठीक है कि वैदिक धर्म में आकर शांतिदेवी ने स्वामी जी को अपना धर्म पिता मान लिया था, परन्तु यह कोई जुर्म नहीं था। फैसले ने सिद्ध कर दिया कि शांतिदेवी के मामले में स्वामी जी का तथा आर्य पुरुषों का किसी प्रकार कोई हाथ न था। परन्तु इस मुकदमे को निमित्त बना कर दिल्ली की मुसलमान अंजुमनों, मुसलमान अखबारों और विशेषतया ख्वाजाहसन निजामी के अखबारों ने खूब शोर मचाया और मुसलमान जनता को स्वामी जी के विरुद्ध भड़काने का यत्न किया। इस निर्मूल आंदोलन ने उस आग को जो मुसलमानों के जाहिल हिस्से में धीरे-धीरे सुलग रही थी, जोर से भड़का दिया।

रोग तथा बलिदान

दिसम्बर के आरम्भ में स्वामी जी बनारस के दौरे से लौटे। वहां आप चुनाव में सेठ घनश्याम बिड़ला की मदद को गये थे। वृद्ध और थका हुआ शरीर था, सर्दी का मौसम था, एक-एक दिन में कई-कई जगह बोलना पड़ा, देहात में मोटर का सफर करना पड़ा, जिस से गर्द और सर्दी ने फेफड़े और गले पर असर किया। आप लौटे तब आधे रोगी थे। खांसी और जुकाम की शिकायत थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनारस जाने से पहले ही स्वामी जी की विचार किसीं एकान्त स्थान पर जाकर विश्राम करने का था। आप गुरुकुल क्षेत्र में जाकर कुछ समय तक रहना चाहते थे। गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता को पत्र भी लिख चुके थे। बनारस से कई तार आने पर आप को वहाँ जाने के लिये बाधित होना पड़ा था। बनारस से लौट कर विश्राम करने की आवश्यकता अधिक बढ़ गई। आपने फिर गुरुकुल कुरुक्षेत्र जाने का निश्चय किया। आप की मेज की दराज़ में एक कागज मिला है, जिस पर गोहाटी जाने का प्रोग्राम भी लिखा हुआ है। यदि बिमार न होते तो संभव है आप गोहाटी की तरफ रवाना हो जाते।

कुरुक्षेत्र जाने के लिये ८ दिसम्बर की तारीख नियत की गई थी। तीन दिन पूर्व गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता स्वामी जी की सेवा में हाजिर हुए और प्रार्थना की कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र जाने से पूर्व एक-दो रोज के लिये हमारे स्थान को भी पवित्र कर आइये। अपनी तबीयत के अनुसार स्वामी जी आग्रह को न टाल सके। स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन प्रातःकाल मोटर द्वारा आप गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिये रवाना हुए। प्रातःकाल का समय था। सर्दी जोर की पड़ रही थी। हवा झक्कड़ की तरह चल रही थी। १२ मील तक मोटर की हवा लगती रही। फेफड़ों और गले पर पहले ही असर हो चुका था, इस सर्दी ने उन पर पूरा अधिकार जमा लिया। गुरुकुल पहुंचते ही तबीयत बिगड़ने लगी। भोजन के पीछे ज्वर-सा मालूम होने लगा और उल्टियाँ आने लगीं। धर्मसिंह सेवक साथ था। शाम की गाड़ी से धर्मसिंह के साथ दिल्ली वापिस आ गये। सारे रास्ते में बुखार की घबराहट रही।

दिल्ली पहुंचकर अपने पुराने डाक्टर सुखदेव जी को याद किया। डाक्टर जी ने शरीर की परीक्षा कर के बतलाया कि ब्रांको-नमोनिया का आक्रमण है। स्वामी जी को डाक्टर सुखदेव से उतर कर यदि किसी के इलाज में श्रद्धा थी तो वह डाक्टर अन्सारी थे। अथवा यों कहना चाहिये कि सुखदेव जी की सेवा पर उन्हें जितना विश्वास था, उतना ही विश्वास उन्हें डाक्टर डाक्टर अन्सारी की दवा पर था। अगले दिन डाक्टर अन्सारी को बुलाया गया। डाक्टर जी खबर पाते ही भागे हुये आये और बड़े प्रेम से स्वामी जी की शारीरिक दशा को देखा। स्वामी जी कहा करते थे कि बीमार को जिस मुहब्बत और धैर्य से डा० अन्सारी देखते हैं, डाक्टरों में प्रायः उस का अभाव है। डा० अन्सारी जब भी आते तब आधा घण्टा पौन घण्टा बैठ कर जाते। उन की बातों से और देख-भाल से कुछ ऐसी तसल्ली हो जाती कि आधा रोग दूर हो जाता।

तीन दिन तक डा० अन्सारी इलाज करते रहे, चौथे दिन उन्हें रामपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाना पड़ा। चार दिन तक रामपुर रहे। इन चार दिनों में स्वामी जी की तबीयत प्रतिदिन बिगड़ती गई। कई इलाज किये परन्तु किसी से सन्तोष जनक लाभ न हुआ। यहां तक कि चौथे दिन स्वामी जी ने अपने सेवकों को कह दिया कि अब शरीर में और ज़हर डालने से कोई लाभ नहीं। यदि शरीर को नीरोग होना होगा, तो दवा के बिना हो जायेगा। बुखार १०३ तक पहुंच जाता था, खांसी जोर से उठती थी, कमजोरी बढ़ती जा रही थी। स्वामी जी बीमारी में भी यह पसन्द नहीं करते थे कि लेटे ही लेटे पानी पियें, या चारपाई से उतरे बिना मल-मूत्र विसर्जन करें। बुखार बढ़ने पर डाक्टरों ने आप को लेटे रहने के लिए बाधित किया, इस से आप बहुत ही खिन्न थे। आप अनुभव करते थे कि दूसरे के हाथ से पानी पीने की अपेक्षा न पीना अच्छा है।

एक तरह से आप आदर्श रोगी थे। डाक्टर की आज्ञा को मानना अपना धर्म समझते थे। अगर सेवकों में से कोई अपने कर्तव्य को भूल जाता तो स्वामी जी याद करा देते। ठीक १२ बजे दवा देने का समय था। १२ बज कर एक मिनट हुआ कि स्वामी जी ने सेवक को पुकारा और दवा देने की बाबत याद कराया। कमरा गन्दा नहीं रहने पाता था। समय पर टैम्परेचर दिखलवा लेते और कागज पर लिखवा लेते थे।

इस बिमारी में स्वामी जी की सब अधिक सेवा तीन महानुभावों ने की। डा० सुखदेव जी, डा० अन्सारी के आदेश के अनुसार औषध प्रयोग करते थे और स्नातक धर्मपाल और धर्मसिंह सेवक रात दिन सेवा में हाज़िर रहते थे। आने वाले आश्चर्यचकित हो कर सोचते थे कि ये दोनों सेवक कभी सोते हैं या नहीं। माता या बेटी भी वह सेवा क्या करेगी जो इन दोनों ने की।

चार दिन की अनुपस्थिति के पीछे डा० अन्सारी रामपुर से लौट आये, आप के आने का समाचार उसी समय स्वामी जी तक पहुँचाया गया। समाचार ने आप पर अद्भुत असर किया। श्रद्धा और विश्वास पर ही आप जीते थे। यह सुनते ही कि डा० अन्सारी आ गये हैं, स्वामी जी सावधान हो गये और निरोग होने की आशा उत्पन्न होने लगी। डा० अन्सारी ने आकर देख-भाल की और दवा में कुछ परिवर्तन किया। शीघ्र ही लाभ दिखाई देने लगा दूसरे दिन प्रातःकाल बुखार बहुत कम हो गया और तीसरे दिन प्रातःकाल बुखार नार्मल था। दोपहर का बुखार भी धीरे-धीरे कम होने लगा। डाक्टरों ने यह सम्मति प्रकाशित कर दी कि अब रोग का भयंकर रूप जाता रहा, कुछ दिन में स्वामी जी निरोग हो जायेंगे।

बुखार के उतरने की साथ-साथ स्वामी जीवन में एक अद्भुत परिवर्तन दिखाई देने लगा। जब तक अधिक रोगीथे, समझते थे कि रोग हट जायेगा परन्तु जब नीरोग होने लगे तब दिल की अवस्था दूसरी हो गई। स्वामी जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को भान हो रहा था कि अन्तिम समय निकट है। जिस रोज पहले-पहल प्रातः-काल बुखार उतरा, स्वामी जी ने ब्राह्ममुहूर्त में अपने मन्त्री पं० धर्मपाल जी को भेजकर पं० इन्द्र जी, ला० देशबन्धु गुप्त, स्वामी रामानन्द और डा० सुखदेव जी को बुलाया और कहा कि मैंने तुम लोगों को वसीयत लिखने के लिए बुलाया है। मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों के सामने वसीयत लिख दूं। सब ने आपस में विचार किया। स्वामी जी की दृष्टि भविष्य को देख रही थी, जबकि सब लोग केवल वर्तमान को देख रहे थे। सब ने सोचा कि इस समय वसीयत लिखाने का स्वामी जी पर यह असर पड़ सकता है कि सब लोग रोग को असाध्य समझने लगे हैं। स्वामी जी से निवेदन किया कि 'महाराज, डाक्टर जी कहते हैं कि अब कोई डर नहीं है। आप की तबीयत कुछ दिनों में अच्छी हो जाएगी, उस समय आप जैसी आज्ञा करेंगे वैसा होता रहेगा। जल्दी क्या है।' स्वामी जी ने निम्नलिखित उत्तर दिया, "भाई डाक्टर की औषध से राजस-बल को बढ़ा दोगे, परन्तु अन्दर से यह आवाज नहीं उठती कि मैं उठ खड़ा हो सकूं। वसीयत लिख लें तो अच्छा है।"

सब लोगों ने और कोई चारा न देख कर बात दोपहर पर टाल दी।

जब दोपहर के समय पं० इन्द्र जी दर्शनों को गये तो स्वामी जी ने उन्हें पास बुला कर बिठाया और थोड़ा-सा रुपया बैंक में पड़ा हुआ था, उस के बंटवारे में निर्देश कर के अन्त में कहा—

'इस शरीर का कुछ ठिकाना नहीं, मैं शायद ही उठूं। तुम एक काम जरूर करना। मेरे कमरे में आर्यसमाज के इतिहास की सामग्री पड़ी है, उसे संभाल लेना और समय निकाल कर इतिहास जरूर लिख डालना। एक बात और कहता हूँ। इतिहास के लिखने में मुझे माफ न करना। मैंने बड़ी-बड़ी भूलें की हैं। तुम्हें तो मालूम है कि मैं क्या करना चाहता था और किधर पड़ गया।' इतना कहते-कहते स्वामी जी का दिल भर आया और चुप हो गये। अधिक न बोल सके और आंखें बन्द कर लीं।

उन्हीं दिनों डा० सुखदेव जी ने हंसकर कहा कि स्वामी जी आप की तबियत अच्छी हो रही है, थोड़े दिनों में आप उठ खड़े होंगे। दो दिन में आप को रोटी दे दूंगा और आप बैठने लगेंगे।

स्वामी जी ने उत्तर दिया, 'डाक्टर जी, आप लोग तो ऐसा ही कहते हैं, परन्तु मेरा शरीर तो अब सेवा के योग्य नहीं रहा। इस रोगी शरीर से देश का कोई कल्याण न हो सकेगा। अब तो हृदय में एक ही इच्छा है कि दूसरा जन्म लेकर नये शरीर से इस जीवन के कार्य को पूरा करूँ।'

शहादत से दो दिन पूर्व व्याख्यानवाचस्पति पं० दीनदयालु जी शर्मा स्वामी जी की मिजाजपुर्सी को आये। स्वामी जी के लिए उठना कठिन था, तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी आये उठ कर हाथ मिलाया और बात-चीत होने लगी। व्याख्यान वाचस्पति जी ने मुस्करा कर कहा कि 'स्वामी जी, मुझ से मालवीय जी एक वर्ष बड़े हैं और उन से आप एक वर्ष बड़े हैं। अभी हम लोगों को बहुत-सा काम करना है। आप इतनी जल्दी मोक्ष की तैयारी क्यों करने लगे थे ? अब तो आप राजी हो जायेंगे।'

स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'पंडित जी, इस कलियुग में मोक्ष की इच्छा नहीं रखता। मैं तो केवल इतना चाहता हूँ कि चोला बदलकर दूसरा शरीर धारण करूँ। अब इस शरीर से सेवा नहीं हो सकेगी। इच्छा है कि फिर इसी भारतवर्ष में उत्पन्न होकर देश की सेवा करूँ।'

देहान्त से पहली सायंकाल को स्वामी जी के पुत्र -सम ला० देशबन्धु गुप्त दर्शनों को आये। उस समय स्वामी जी की धर्म-पुत्री शान्तिदेवी भी वहीं थी। देशबन्धु जी ने पूछा कि 'डाक्टर लोग कहते हैं कि आप की तबियत अच्छी हो रही है, क्या आप को भी ऐसा अनुभव होता है ?' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि डाक्टर लोग चाहे कुछ कहें, पर मुझे तो आत्मा का यही शब्द सुनाई देता है कि अब यह शरीर काम का नहीं रहा, मैं इस समय जाने के लिए बिलकुल तैयार हूँ।'

२३ दिसम्बर की दोपहर को, गोली लगने से कुछ घण्टे पूर्व स्वामी चिदानन्द जी राजा सर रामगोपालसिंह का एक तार लेकर आये, जिस में स्वामी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछा था। स्वामी चिदानन्द जी ने प्रश्न किया कि मैं क्या उत्तर दूं ? स्वामी जी ने उत्तर लिखवा दिया। उत्तर की अन्तिम पंक्तियां इस आशय की थीं कि अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर के शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं।

इस प्रकार स्वामी जी चार-पांच दिन तक अनुभव करते रहे कि उन का अन्त समय समीप है। लोगों की छोटी दृष्टियां वहां न पहुँच सकीं, जहां तपस्वी की अन्तर्दृष्टि पहुंच चुकी थी। उन्हें बुलावा आ रहा था। वह उस समय के लिए तैयार थे। सब लोग अपनी छोटी बुद्धियों से यही सोचा करते थे कि स्वामी जी इतने आशावादी होते हुए भी इस समय निराशा की बातें क्यों कर रहे हैं !

पं०इन्द्र विद्यावाचस्पति दोपहर के समय प्रतिदिन स्वामी जी के दर्शनों को जाया करते थे। उस दिन जब डेढ़ बजे के लगभग ऊपर गये तो स्वामी जी सो रहे थे। चारपाई के पास ही दरी पर धर्मसिंह सो रहा था, और रात की सेवा से थके स्नातक धर्मपाल जी के पास के कमरे में सोये पड़े थे। घर में सब सोये पड़े थे। यह देखकर वे आश्चर्यान्वित-से हुए, परन्तु यह समझ कर कि किसी को नींद से उठाना अच्छा नहीं, नीचे उतर गए, और एक लड़के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को जो स्वामी जी के पास के कमरे में रहता था और ईसाई से आर्यसमाजी बना था, ऊपर भेज दिया कि स्थान अरक्षित न रहे। दिल में यही सोचा होगा कि फिर शाम को आकर दर्शन करेंगे।

लगभग ढाई बजे डा० सुखदेव जी के अतिरिक्त कन्या गुरुकुल की आचार्या श्रीमती विद्यावती सेठ, स्वामी के अनन्य भक्त ला० जमनादास तथा कई अन्य महनुभाव दर्शनों को आ बैठे और लगभग पौने चार बजे तक बैठे रहे। वह स्वामी जी के निवृत्त होने का समय था। स्वामी जी ने सब लोगों से कहा कि आप लोग अब जाइए और केवल सेवक धर्मसिंह रह जाए। सब लोग इशारा समझ गए और उठ कर नीचे चले गए। धर्मसिंह ने आकर कमोड रख दी। स्वामी जी शौच गए और हाथ मुंह धो शुद्ध और सावधान हो कर मसनद के सहारे मानों बलिदान का अमृत पीने के लिये तैयार हो कर बैठ गए।

धर्मसिंह कमोड को उठा कर पास की कोठरी में रख आया और हाथ धोने के लिए बाहर गया। इतने में सीढ़ियों पर एक मुसलमान दिखाई दिया। स्वामी जी के पास डा० ने आना-जाना बन्द कर दिया था। सेवक ने उसे जाकर रोक दिया। वह कहने लगा कि स्वामी जी के दर्शन करूंगा। नौकर रोकता रहा पर स्वामी जी ने आवाज़ सुन ली और सेवक से कहा 'कौन है, अन्दर आने दो', सेवक ने मुसलमान को अन्दर बुला लिया। अन्दर आकर उसने स्वामी जी से कहा कि 'स्वामी जी मैं आप से इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफ्तगू करना चाहता हूं'। स्वामी जी ने कहा कि 'भाई मैं बीमार हूं। तुम्हारी दुवा से राजी हो जाऊंगा तो बात-चीत करूंगा'। इस पर उस ने पानी मांगा। स्वामी जी ने सेवक से कहा 'पानी पिला दो' इस पर धर्मसिंह उस मुसलमान के साथ बाहर चला गया और पानी पिलाया। पानी पी कर मुसलमान फिर कमरे के अन्दर तेजी से आ गया।

उसने अन्दर आते ही पिस्तौल निकाल कर स्वामी जी पर फायर किया। स्वामी जी मसनद के सहारे बैठे हुए थे। पहली गोली स्वामी जी की छाती में जा लगी। प्रतीत होता है कि वह फेफड़ों में जाकर लगी, क्योंकि उसी समय स्वामी जी की आंखें बन्द हो गई। हत्यारे ने दूसरी गोली फिर छोड़ी दोनों गोलियां आंख झपकने में चल गयीं। इतने में धर्मसिंह सेवक ने लपक कर हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। हत्यारे ने फिर स्वामी जी पर तीसरा फायर किया। यह देख धर्मसिंह ने, जान की ममता छोड़, आगे से आकर कातिल के हाथ से पिस्तौल छीनने की चेष्टा की, हत्यारे ने एक फायर धर्मसिंह पर भी कर दिया। गोली धर्मसिंह की टांग में लगी। वह बेचारा गोली खाकर लड़खड़ा गया और कातिल भाग निकलता कि उसी समय स्वामी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी स्नातक धर्मपाल ने झपट कर हत्यारे के दोनों हाथ पकड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिये और अड़ङ्गा डाल कर उसे गिरा दिया। धर्मपाल जी ने बड़ी हिम्मत का काम किया कि रिवाल्वर के साथ उस हत्यारे को लगभग आध घण्टा तक दबाये रखा।

बेचारा धर्मसिंह उसी घायल अवस्था में लुढ़कता-पुढ़कता बाहर गया, और चारों ओर आवाजें दीं। इस पर स्वामी चिदानन्द जी भागे हुए आए। थोड़ी देर में मास्टर रमन जी, डा० सुखदेव जी, ला० बलराम, तथा अन्य बहुत से लोग पहुंच गये। दुर्घटना की खबर शहर-भर में हवा की तरह फैल गई। स्वामी जी के कमरे के सामने हजारों की भीड़ इक्ट्ठी हो गई। थोड़ी देर में डा० अन्सारी तथा डा० अब्दुर्रहमान आ गये। उन से पूर्व ही डा० चिमनलल किकानी भी आकर स्वामी जी की परीक्षा कर चुके थ। डा० अन्सारी ने खूब अच्छी तरह परीक्षा करके सूचना दे दी कि स्वामी जी का शरीर ठण्डा हो चुका है।

४ बजे गोली चली थी। लगभग साढ़े चार बजे सरदार चेतसिंह कुछ सिपाहियों के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने पहला काम यह किया कि अपना रिवाल्वर मुल्जिम के सामने तान कर पिस्तौल बरामद की और धर्मपाल जी से उसे छुड़वा कर सिपाहियों के सुपुर्द किया। थोड़ी देर में सीनियर सुपरिटैण्डैण्ट पुलिस मि० आई० मार्गन, तथा शेख नज़रुलहक भी आ पहुँचे और पुलिस की तहकीकात शुरू हो गई।

इस तरह तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धर्म पर अपना शरीर बलि चढ़ा दिया। वह जैसा अन्त चाहते थे, परमात्मा ने वह उन्हें दे दिया। भाग्य का चक्र यह है कि एक मुसलमान ने उन्हें मौत के मुंह से बचाया और दूसरे ने तमंचे के घाट उतार दियो। परमात्मा की अद्भुत लीला ऐसे ही रूपों में विचित्र ढ़ङ्ग से अपने आप को प्रगट किया करती है। डा० अन्सारी और अब्दुलरशीद मनुष्य जाति के रोशन और स्याह पहलुओं के नमूने हैं। धार्मिक संस्थायें, मनोविज्ञान के सूक्ष्म निरीक्षण करने वाले विद्यार्थी तथा मनुष्य-जाति की सुधारक आर्यसमाज आदि संस्थायें इन दोनों प्रकार के दृष्टान्तों से उपदेश ग्रहण किया करेंगी। शुद्धि का कार्य पूरा कर ही हम शहीद के चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित कर सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र छप कर तैयार है। –श्रद्धांजलियों सहित– मंगाइए और बांटिए। मूल्य ३०) सैकड़ा

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार का संकल्प

यदि आप न लेंगे, तो कौन लेगा ?

"दयानन्द-संस्थान" ने अपनी स्थापना के साथ ही सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार और प्रसार का संकल्प लिया है। देव दयानन्द के इस महान् क्रांतिकारी धर्म ग्रन्थ को सस्ता-सुन्दर-आकर्षक छापने और प्रसारित करने का दायित्व संस्थान ने लिया है। संस्थान का संकल्प है कि वह दिन शीघ्र आए जब हम सजिल्द सुन्दर "सत्यार्थ-प्रकाश" केवल १)५० में दे सकें।

और आरम्भ में इसके लिए हमें केवल १० हजार रु० चाहिए—१० हजार रुपये का प्रबंध हो जाए तो हम १ रु० में अजिल्द और १॥ रु० में सजिल्द सत्यार्थ-प्रकाश की घोषणा करदें। पर यह १० हजार कौन देगा ?

आर्य समाज के अधिकारियों की दृष्टि में यह व्यर्थ का काम है। व्यर्थ के कामों में वे हजारों रुपए व्यय कर सकते हैं पर ऋषि जीवनी व सत्यार्थ-प्रकाश के प्रचार का उन की दृष्टि में कोई महत्व नहीं।

अभी हमने जो सत्यार्थ-प्रकाश का उपहार संस्करण छापने की घोषणा की है, उसकी लागत ५) से अधिक ही आएगी। पर हमने ३)२५ पैसे में देने का संकल्प लिया है। आप देखेंगे और विश्वास करेंगे कि ऐसा सत्यार्थ-प्रकाश पिछले १०० वर्षों में भी नहीं छपा। हमारा मन अपने गुरू की वाणी को घर-घर में पहुंचाने हेतु उत्सुक है, किन्तु आर्य नेताओं और अधिकारियों को देखकर कभी-कभी यह अनुभव होने लगता है कि कहीं हम कोई अपराध तो नहीं कर रहे ?

किसे कहें, किसे पुकारें, किस का आह्वान करें.. .... यह प्रश्न उठता है, और फिर मन कहता है अपने कर्तव्य का पालन करो, बढ़ते जाओ, प्रभु अवश्य सफलता देंगे।

"सत्यार्थ-प्रकाश" उपहार संस्करण में लगभग १० हजार रुपए का घाटा होगा। यह घाटा कौन देगा..............? धनी-निर्धन और वे सभी जो सत्यार्थ-प्रकाश पर श्रद्धा रखते हैं उनसे हमारा आग्रह है कि दिसंबर मास में अपनी एक दिन की आय "सत्यार्थ-प्रकाश-प्रकाशन-निधि" में भेजिए !

सत्यार्थ-प्रकाश के प्रचार और प्रसार के लिए प्रत्येक आर्य संकल्प ले और सहयोग व प्रचार में लग जाए। प्रभु वह दिन शीघ्र लाए जबकि हम सत्यार्थ प्रकाश १) में देने में सफल हो सकें—आप क्या सोचते हैं ?

दयानन्द-संस्थान
१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग
नई दिल्ली ५

विनीत
भारतेन्द्र नाथ
संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ

सतसंग-महिमा

०—०

वेद में दुष्टों की संगति का निषेध

महर्षि दयानन्द जी महाराज यजुर्वेद के भाष्य में लिखते हैं— "सब मनुष्यों को उचित है कि दुष्ट गुण और स्वभाव वाले मनुष्यों का निषेध करें, इसका उपदेश इस मन्त्र में किया है—

प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टप्तँ रक्षो निष्टप्ता
अरातयः उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ।। (यजुर्वेद० १।७)

पदार्थ :—मुझको चाहिए कि पुरुषार्थ के साथ (रक्षः) दुष्ट गुण और दुष्ट स्वभाव वाले मनुष्य को (प्रत्युष्टम्) निश्चय करके निर्मूल करूँ, तथा (अरातयः) जो राति अर्थात् दान आदि धर्म से रहित दयाहीन दुष्ट शत्रु हैं, उनको (प्रत्युष्टाः) प्रत्यक्ष निर्मूल (रक्षः) दुष्ट स्वभाव वा दुष्ट गुण विद्या विरोधी स्वार्थी मनुष्य और (निष्टप्तम) (अरातयः) छलयुक्त होके विद्या का ग्रहण वा दान से रहित दुष्ट प्राणियों को (निष्टप्ताः) निरन्तर सन्ताप युक्त करूँ। इस प्रकार कर के (अन्तरिक्षम) सुख को सिद्ध करने वाले उत्तम स्थान और (उरु) अपार सुख को (अन्वेमि) प्राप्त होऊँ।

भावार्थ—ईश्वर यह आज्ञा देता है कि सब मनुष्य अपने दुष्ट स्वभाव को छोड़ कर, विद्या और धर्म के उपदेश से दूसरों के भी दुष्ट स्वभाव को छुड़वा कर अविद्या अधर्म आदि के दुष्ट व्यवहारों से पृथक करना चाहिए, तथा उनको बहुत प्रकार का ज्ञान और सुख देकर सब मनुष्यादि प्राणियों को विद्या धर्म पुरुषार्थ और नाना प्रकार के सुखों से युक्त करना चाहिए ।।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस मन्त्र द्वारा परमात्मा ने मनुष्य को यह उपदेश कितने स्पष्ट शब्दों में दिया है कि अपनी दुष्टता को छोड़ कर श्रेष्ठ बनो। दूसरे साथियों को भी श्रेष्ठ बनाओ। यदि दूसरे हमारे निकट रहने वाले दुष्ट हैं, सदाचारी नहीं हैं, तो उनका भूलकर भी सङ्ग नहीं करना चाहिए, इसी में कल्याण है, यही उन्नति का मूलमंत्र है।

वेद में सत्संग करने का विधान

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥ (ऋ० ५।५१।१५)

(सूर्याचन्द्रमसौ इव) सूर्य और चन्द्रमा के समान हम सब स्वयं (स्वस्ति पन्थाम्) उत्तम कल्याणकारी मार्ग का (अनुचरेम) अनुसरण करें और (पुनः) तत्पश्चात् (ददता) दानी (अघ्नता) अहिंसक=प्राणी मात्र का उपकार करने वाले (जानता) ज्ञानी=विद्वान् सत्पुरुषों की (संगमेमहि) सङ्गति करें, उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलें।

परम पिता परमात्मा ने कितना सुन्दर उपदेश दिया है कि हम नित्य प्रति नियमपूर्वक कल्याण मार्ग पर चलें, सत्यपथ से कभी विचलित न हों और इसके लिए हम दानी उदार परोपकारी विद्वान् पुरुषों का सत्संग करें।

कल्याण मार्ग पर चलने के लिये सूर्य और चन्द्रमा की उपमा दी गई है, इससे दो शिक्षाएं मिलती हैं, प्रथम यह है कि हम सूर्य और चन्द्रमा की भांति नियमित रूप से सन्मार्ग पर चलते रहें कभी भी इस नियम को न तोड़ें। दूसरा यह है कि जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा दिन रात जनता को=प्राणि समूह को प्रकाश का मार्ग दिखलाते हैं, अन्धकार को दूर भगाते हैं, ठीक इसी प्रकार हम भी अन्य लोगों का पथ-प्रदर्शन करें, अज्ञानान्धकार को ज्ञान-सूर्य बन कर नष्ट करें।

दूरे पूर्णेन वसति दूर ऊनेन हीयते ।
महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति ।

(अथर्व १०।८।१५)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पूर्णेन) पूर्ण के, उत्तम के साथ रहने से (दूरे वसति) सामान्य जनों से दूर रहता है और (ऊनेन) न्यून के=हीन के साथ रहने से भी (दूरे हीयते) दूर गिर जाता है=पतित हो जाता है। (भुवनस्य मध्ये) सब लोक लोकान्तरों में एक (महद्यक्षम्) सब से बड़ा पूजनीय देव परमात्मा है (तस्मै) उसी के लिये (राष्ट्रभृतःभरन्ति) राष्ट्र को धारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुष बलि अर्पण करते हैं।

इस मन्त्र में उत्तम तथा अधम पुरुषों के सङ्ग का वर्णन करते हुए बतलाया है कि जो श्रेष्ठ पुरुषों का सत्सङ्ग करता है, उसका सम्मान होने के कारण वह अन्य साधारण लोगों से दूर हो जाता है=ऊंचा उठ जाता है, तथा नीच व्यक्ति का सहवास करने से भी दूर गिर जाता=पतित हो जाता है।

यद्यपि दूर तो दोनों ही होते हैं किन्तु उत्तम का सङ्ग करने वाला आदरणीय और अधम का साथी निन्दनीय होता है। इसलिये जो उत्तम पुरुष हैं वे सब से महान् और पूजनीय देव परमात्मा की संगति करते हैं, उसी की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हैं।

"ईश्वर आज्ञा देता है कि हे मनुष्यो! तुम लोगों को विद्या के सिद्ध करने वाले कार्यों के नियमों में, विघ्नकारी दुष्ट जीवों को सदा मारना चाहिये, और सज्जनों के समागम से विद्या की वृद्धि नित्य करनी चाहिये, जिस प्रकार अनेक उद्योगों से श्रेष्ठों की हानि दुष्टों की वृद्धि न हो, सो नियम करना चाहिये और सदा श्रेष्ठ सज्जनों का सत्कार और दुष्टों को दण्ड देने के लिये उनका बन्धन करना चाहिये।........ईश्वर की आज्ञा का पालन तथा ईश्वर की उपासना करनी चाहिये।" (यजुर्वेद १।२६ मन्त्र भाष्य)

सत्सङ्ग का अर्थ

'सत्सङ्ग' शब्द में षष्ठी या तृतीया तत्पुरुष समास है 'सतांसङ्ग' 'सत्सङ्गः' सद्भिर्वासङ्गः सत्सङ्गः' सज्जन पुरुषों का या सज्जन पुरुषों से, सङ्ग=समागम करना, सज्जन धार्मिक विद्वानों के मनोहर उपदेश सुनना और उन पर आचरण करना ब्रह्मचर्यादि उत्तम व्रतों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का पालन करना, वेदादि सत्शास्त्रों का स्वाध्याय करना, सत्य बोलना, ईश्वर विश्वास, भक्ति, सदाचार आदि जीवनोत्थान के उत्तमोत्तम साधनों का भी सत्सङ्ग में ही समावेश समझना चाहिये, और कुसङ्ग का शब्दार्थ इससे विपरीत समझें।

सत्सङ्ग—महिमा

हमारे शास्त्र सत्सङ्ग की महिमा से भरे पड़े हैं, सभी ने सत्सङ्ग की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वास्तव में सत्संग है ही ऐसा जिस की प्रशंसा करते करते रुकने को जी नहीं चाहता, जिह्वा नहीं थकती और लेखनी भी लिखने से नहीं रुकती। किसी कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है—

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसङ्गतिः॥

संसार में चन्दन को शीतल माना जाता है, चन्द्रमा की सौम्य किरणें तो उस से भी अधिक शीतलतर हैं, किन्तु चन्दन और चन्द्रमा से भी अधिक शीतलतम साधु=सङ्गति=साधुमहात्माओं का सत्सङ्ग है।

सत्संगः परमं तीर्थं सत्सङ्गः परमं पदम्।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य सत्संगं सततं कुरु॥

सत्संग ही परम पवित्र तीर्थ है, सत्संग ही परम पद मोक्ष का साधन है इसलिये सब दुर्व्यसनों को छोड़ कर सर्वदा सत्संग करना चाहिये।

श्रीमच्छङ्कराचार्य जी लिखते हैं—

सत्संगत्वे निःसंगत्वं निःसंगत्वे निर्मोहत्वम्॥
निर्मोहत्वे निश्चलत्वं निश्चलत्वे जीवन्मुक्तः॥

सत्संग द्वारा विवेक ज्ञान हो जाने पर मनुष्य सांसारिक पदार्थों में न फंस कर निःसंग हो जाता है और संसार में न फंसने से मोह स्वयमेव दूर हो जाता है तथा मन की स्थिरता हो जाती है। और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब मन ईश्वरभक्ति में स्थिर हो जाता है तब मनुष्य संसार सागर से तर जाता है।

मलयाचलगन्धेन त्विन्धनं चन्दनायते ।
तथा सज्जनसङ्गेन दुर्जनः सज्जनायते ॥

जैसे मलयाचल चन्दन के पर्वत पर निकट का इन्धन भी चन्दन बन जाता है, उसमें भी चन्दन जैसे सुगन्ध आने लगती है, इसी भान्ति सज्जनों की सङ्गति से दुर्जन भी सज्जन बन जाते हैं।

क्योंकि—

महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥

महापुरुषों के संसर्ग से एक तुच्छ व्यक्ति भी उन्नति कर अत्युत्तम बन जाता है, जैसे वर्षा की एक छोटी सी बून्द कमल के पत्ते के संसर्ग से मोती के सदृश दिखलाई पड़ती है। यह जल विन्दु समुद्र की सीप में गिरने से वास्तव में मोती ही बन जाता है। किन्तु तपे हुए लोहे पर गिर जाये तो उसका नाम मात्र भी शेष नहीं रहता, समूल नष्ट हो जाता है। ठीक यही अवस्था सत्संग और कुसंग के विषय में समझें।

किसी हिन्दी के कवि ने भी कितना सुन्दर कहा है —

सत्सङ्ग और कुसङ्ग में बड़ा अन्तरा जान ।
गन्धी और लुहार की देखो बैठ दुकान ॥

आप किसी गन्धी=सुगन्धित तैल इतर आदि बेचने वाले की दुकान पर जाकर बैठेंगे तो सब कुछ सुगन्धित हो जायेगा, और पुनः एक लुहार के निकट जाकर बैठिये, वहाँ पर तप्त लोहे की चिनगारियाँ वस्त्र और शरीर को जला देंगी। सत्सङ्ग और कुसङ्ग में यही भेद है। सत्सङ्ग उन्नति के शिखर पर चढ़ा देता है और कुसङ्ग अवनति के गर्त में गिरा देता है।

एक तुच्छ कीट भी फूल के सत्सङ्ग से बड़े-बड़े राजा महाराजाओं के शिर पर पहुँच जाता है, कांच=सीसा भी स्वर्ण के संग से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूर्य की भांति चमकने लगता है, मूर्ख भी पण्डित के संसर्ग में रहने से अति चतुर बन जाता है, निस्तेज=शुद्र भी तेजस्वी के सत्संग से स्वयं तेज सम्पन्न हो जाता है, सूर्य के सम्पर्क से सीसे में भी जलाने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है और वह वस्त्रादि को जला देता है। इसीलिये नीतिकारों ने कहा है—"सतां हि संगः सकलं प्रसूते" अर्थात् सज्जन पुरुषों की संगति से सब कुछ मिल जाता है।

सत्संग की महिमा का कहाँ तक वर्णन करें, इसकी महिमा अपार है, इसीलिये किसी कवि ने दो ही शब्दों में कह दिया है,—

इसे सर्वदा स्मरण रखें—

यदि सत्संगनिरतो, भविष्यसि-भविष्यसि ।।
अथ दुर्जनसंसर्गे, पतिष्यसि-पतिष्यसि ।।

यदि सत्संगी बनोगे तो बन जाओगे, और यदि कुसङ्ग में पड़ जाओगे, तो पतित हो जाओगे।

कुसङ्ग दोष

अहो दुर्जनसंसर्गान्मानहानिः पदे पदे ।
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिहन्यते ।।

दुर्जन के संसर्ग में रहने से पद पर मानहानि=अपमान सहन करना पड़ता है, शुद्ध पवित्र अग्नि को भी लोहे के साथ घनों से पीटा जाता है। गेहूं के साथ घुन भी पीसा जाता है। सीता को चुराया रावण ने किन्तु दुष्ट के संसर्ग में होने के कारण समुद्र पर सेतु बांधा गया। यह लोकोक्ति है कि—"नीचाश्रयो हि महतामपमान हेतुः" नीच का आश्रय लेने से या उसके निकट रहने से महापुरुषों का भी अपमान होता है।

सार यह है कि सम्पूर्ण दुराचार और विनाश के कारणों की जड़ कुसंगति ही है, अतः अपना कल्याण चाहने वालों को, विशेपतया ब्रह्मचारियों को कुसंग से बचना चाहिए, अर्थात् अष्टमैथुन का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए, आंखों से कभी भद्दी वस्तु सिनेमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामलीला, नाटक तथा अश्लील चित्रादि को न देखें, कानों से कभी अश्लील गाना, सिनेमा रागिणी आदि न सुनें, नासिका से किसी गन्ध पर मोहित न हों, पांवो से कुसंगति में न जायें, हाथों से किसी बुरी वस्तु को न छूयें, और मन से उपरिलिखित विषयों का कभी भूलकर भी चिन्तन न करें। तात्पर्य यह है कि पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय तथा ग्यारहवां मन इन पर हमारा आधिपत्य होना चाहिए तभी हम कुसंग से बच सकते हैं।

एक बार विष्णु ने राजा बलि से पूछा कि—"तुम सज्जनों के साथ नरक में जाना पसन्द करोगे या दुर्जनों के साथ स्वर्ग में? राजा बलि ने उत्तर दिया कि मैं सज्जनों के साथ नरक में जाना उत्तम समझता हूं क्योंकि जहां सज्जन जायेंगे वहां नरक भी स्वर्ग बन जायेगा और दुर्जन स्वर्ग को भी नरक बना देते हैं।"

क्योंकि—अणुरप्यसतां सङ्गः सद्गुणं हन्ति विस्तृतम्।
गुणरूपान्तरं याति तक्रयोगाद् यथा पयः॥

दुर्जनों का थोड़ा सा कुसंग भी विस्तृत गुण राशि को नष्ट कर देता है, जैसे कि थोड़े से तक्र=छाछ के संग सैकड़ों गुणा अधिक दूध गुण रूप में सर्वथा भिन्न हो जाता है। एक रत्ती विष से सम्पूर्ण भोजन सामग्री विषाक्त हो जाती है। और जहां पर दुर्जन ही दुर्जन हों वहां पर तो स्वर्ग की कामना करना ख—पुष्प तथा वन्ध्यापुत्र के तुल्य ही है। किसी कवि ने कितना स्पष्ट कहा है—

आनन्दमृगदावाग्निः शीलशाखिमदद्विजः।
ज्ञानदीपमहावायुरयं खलसमागमः॥

दुष्टों की संगति आनन्दरूपी मृग को भगाने के लिये भयङ्कर दावाग्नि=जंगल की आग का कार्य करती है, शील=सदाचार रूपी वृक्ष को उखाड़ने के लिये मदोन्मत्त हाथी का कार्य करती है और विवेक ज्ञान रूपो दीपक को बुझाने के लिये प्रचण्ड आंधी का कार्य करती है। योगरसायन में कहा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असत्संगाद्गुणज्ञोऽपि विषयासक्तमानसः ।

अकस्मात्प्रलयं याति गीतरक्तो यथा मृगः ।।

कुसंग से जब मन विषयों के विष से मुक्त हो जाता है तब गुणवान् और विद्वान् व्यक्ति भी सहसा ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं जैसे कि वीणा के सुरीले राग के वशीभूत हुआ मृग=हरिण मारा जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने ठीक ही कहा है—

वरु भल वास नरक कर ताता । न दुष्ट संग जनि देई विघाता ।।

घोर नरक में रहना अच्छा है, परन्तु परमात्मा किसी को दुष्टों की संगति न दे। क्योंकि मनुष्य भयङ्कर से भयङ्कर विपत्ति से भी पार हो सकता है किन्तु दुष्टों के पञ्जे से छुटकारा पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

संसार में ऐसा कौनसा नीच कर्म है जिसको कुसंग से मनुष्य न सीख ले। दुर्जन स्वयं नष्ट-भ्रष्ट होता ही है किन्तु साथ साथ अन्य अनेकों होनहार बच्चों को भी ले डूबता है।

तुलसीदास जी के शब्दों में "को न कुसंगति पाय नसाई" ऐसा कौन है जो कुसंग में पड़ कर उभयतो भ्रष्ट न हो गया हो? इस कुसंग पिशाच के चक्र में आकर सहस्त्रों होनहार शीलसम्पन्न बालक बालिकाएं, नवयुवक और नवयुवतियां अपने जीवन से हाथ धो बैठीं। भयंकर जङ्गली पशुओं और सांपों के साथ रहना अच्छा है किन्तु कुसंग में पड़ना नहीं।

पं० विष्णु शर्मा पञ्चतन्त्र में लिखते हैं—

"वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः"

प्राण त्याग देना अच्छा है किन्तु नीच की संगति अच्छी नहीं। क्योंकि प्राण त्यागने पर दूसरा उत्तम शरीर कर्मानुसार मिल जायेगा किन्तु कुसंग में तो लोक परलोक दोनों ही नष्ट हो जाते हैं, यह लोक तो प्रत्यक्ष रूप से है ही नष्ट-भ्रष्ट, और पाप कर्म करने से अगला जन्म भी उत्तम नहीं मिलता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जैसा संग वैसा रंग' के अनुसार सत्संग करने से मनुष्य श्रेष्ठ बन जाता है और कुसङ्ग में पड़कर अधम बन जाता है। सङ्ग का रङ्ग अवश्य चढ़ता है, एक स्वच्छ भवन में धुएं से काला बन जाता है। काला कोयला भी अग्नि के संयोग से धधकने लगता है, लता या घास में रहने वाला कीड़ा और जन्तु भी तत्सदृश हरे रङ्ग का हो जाता है। कहा भी है—

असतां सङ्गदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम्
दुर्योधन प्रसङ्गेन भीष्मो गोहरणे गतः ॥

दुर्जनों की संगति में रहने से सज्जन भी दुर्जन बन जाते हैं उनकी भी वृत्तियां विकृत हो जाती हैं, महाभारत काल में दुष्ट दुर्योधन के सङ्ग में रहने के कारण भीष्म पितामह भी राजा विराट की गौएँ चुराने के लिये चले गये थे।

इसलिये विचारशील पुरुषों ने कहा है—

"भुजंगवद्वर्ज्यो बुधेर्दुर्जनः" बुद्धिमानों को चाहिए कि दुर्जन से सर्वदा सर्प की भांति पृथक् रहें। इनकी संगति करना तो दूर रहा ऐसे दुष्ट पापियों के पड़ोस में रहना भी हानिप्रद है। इतना ही नहीं, राजर्षि चाणक्य ने तो दुर्जन को सर्प से भी भयङ्कर बतलाया है—

सर्पश्च दुर्जनश्चैव वरं सर्पो न दुर्जनः ।
सर्पो दशति काले दुर्जनस्तु पदे पदे ॥

(चाणक्य नीति)

सर्प और दुर्जन में से सर्प ही अच्छा है, क्योंकि सर्प तो जब काल आकर उपस्थित हो जाता है तब काटता है किन्तु दुर्जन तो पद पद पर प्रहार करता है। सर्प बिच्छू आदि किसी अवयव विशेष से प्रहार करते हैं किन्तु दुर्जन का तो एक-एक अङ्ग विष से भरा हुआ होता है।

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाश्च मस्तके ।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे सर्वांगे दुर्जनस्य तत् ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्प के दांत में, मक्खी के सिर में और बिच्छु के पूंछ में विष होता है किन्तु दुर्जन के सभी अङ्ग विपाक्त हैं।

दुष्टों की मैत्री, वेश्या और लक्ष्मी ये तीन कितना ही यत्न किया जाये किन्तु स्थिर नहीं रहती। इसलिये विष्णुमित्र ने पञ्चतन्त्र में कहा है—

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्ध परार्द्ध भिन्ना,
छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्॥

अर्थात् दुर्जनों की मित्रता आरम्भ में बहुत बड़ी होती है अर्थात् अति सुन्दर प्रतीत होती है किन्तु उत्तरोत्तर घटती ही जाती है, जैसे कि प्रातःकाल छाया बहुत बड़ी होती है किन्तु दोपहर तक कम होकर न्यूनतम रह जाती है और सज्जनों की मित्रता प्रारम्भ में नाम मात्र की ही होती है किन्तु दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। जिस प्रकार दोपहर के पश्चात् छाया उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

इसलिये दुर्जनों की संगति को प्रारम्भ में फूला-फला देखकर उसमें फंसना नहीं चाहिये, अपितु उसके भावी दुष्परिणामों को विचार कर सर्वथा पृथक ही रहना चाहिए, इसी में कल्याण है।

किसी कवि ने कुसंग के फलों का कितना उत्तम चित्र खींचा है—

पापं वर्धयते, चिनोति कुमतिं, कीर्त्यङ्गना नश्यति,
धर्मं ध्वंसयति, तनोति विहदं, सम्पत्तिमुन्मर्दति।
नीतिं हन्ति, विनीतिमत्र कुरुते कोपं धुनीते समं,
किं वा दुर्जनसंगतिर्न कुरुते, लोक-द्वयध्वंसिनी॥

कुसंग पाप को बढ़ाता है, बुद्धि को मलिन कर देता है, कीर्ति को नष्ट करता है, धर्म का ध्वंस कर आपत्तियों के पहाड़ खड़े कर देता है और धन सम्पत्ति न्याय आदि का लोप हो जाता है। स्वभाव, चिड़चिड़ा और क्रोधी बन जाता है, ऐसा कौनसा दुष्कर्म है जिसको कि इस लोक तथा परलोक का नाश करने वाली कुसंगति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न करवाती हो।

न व्याघ्रः क्षुधयातुरोऽपि कुपितो, नांशीविषः पन्नगो-
नारातिर्बलसत्त्वबुद्धिकलितो, मत्तः करीन्द्रो न च।
तं शक्नोति न कर्तुमत्र नृपतिः कण्ठीरवो रद्धरो
दोषं दुर्जनसंगतिर्वितनुते यं देहिनां निन्दित॥

भूखा तथा क्रुद्ध हुआ शेर जिस कार्य को नहीं कर सकता। भयङ्कर विषधर सर्प जो हानि नहीं कर सकता और बुद्धि सेना आदि से बल सम्पन्न शत्रु तथा मदमस्त हाथी भी जो हानि नहीं पहुँचा सकता, वह भयंकर सर्वनाश मनुष्य का कुसङ्ग में पड़ने से हो जाता है।

कुसंग में पड़ने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय और लोक परलोक सब मिट्टी में मिल जाते हैं, मनुष्य जन्म पाकर भी पशु-पक्षियों से भी नीच हो जाती है। इसलिये कहा है—

न स्थातव्यं न गन्तव्यं क्षणमप्यधमैः सह।
पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते मदिरां मन्यते जनः॥

अधम पुरुषों के पास एक क्षण भी उठना बैठना नहीं चाहिये, यदि कोई सज्जन पुरुष भी अकस्मात् किसी निन्दनीय स्थान पर चला जाता है तो लोग उसे भी वैसा समझने लगते हैं, जैसे कि कलाल (शराब बना कर बेचने वाले) के हाथ में शुद्ध पवित्र गोदुग्ध हो तब भी जनता उसे मदिरा शराब ही समझती है।

कुसङ्ग के दो भेद हैं—प्रथम शारीरिक, द्वितीय मानसिक। शारीरिक कुसङ्ग से पृथक् रहना सहज है, क्योंकि इसके लिये कुछ बाधायें प्रत्यक्ष रूप से हैं, अपने कुल की, माता-पिता की मान मर्यादा के भय से या माता पिता अथवा गुरुजनों के डर से अथवा लोक लज्जा के ही कारण से ही मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से कुछ अंशों में कुसङ्ग से बच जाता है, चोरी से भी अवसर मिलने पर ही कर सकता है। किन्तु मानसिक कुसंग से बचना कठिन है। मनुष्य प्रतिक्षण उठता-बैठता खाता--पीता यहाँ तक कि शयन काल में भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वमन के द्वारा अपने विचारों को दूषित करता रहता है। गन्दी पुस्तकें पढ़ना भी मानसिक कुसङ्ग है।

कुछ भोले भाई बहन यह विचारते है कि हम शरीर से तो कुछ करते हैं नहीं, गन्दी पुस्तकें पढ़ने से अथवा अश्लील भावनाओं से हमारा क्या बिगड़ता है। किन्तु ऐसा सोचने वाले भयङ्कर भूल करते हैं। मन से या कर्म से हम जैसा शुभाशुभ विचार या क्रिया करते हैं उसकी वैसी ही अमिट छाप चित्त-पट पर पड़ जाती है और पीछे वासना का रूप धारण कर सताती है। भगवान् कृष्ण ने गीता के द्वितीय अध्याय में कहा है—

ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽपि जायते ।।
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।

कुसंग से प्रथम मन में बुरे विचार उत्पन्न होते हैं और फिर मनुष्य का उनसे सङ्ग हो जाता है अर्थात् वैसे स्थान या व्यक्ति के निकट पहुँच जाता है। सङ्ग से काम उत्पन्न होता है, किसी ने कहा भी है—"कामिनां कामिनीनाञ्च सङ्गात् कामी भवेत्पुमान्" कामुक स्त्री पुरुषों के सङ्ग से मनुष्य स्वयं भी कामी बन जाता है। जब उस कामना की पूर्ति नहीं होती तब क्रोध आ दबाता है और किंकर्तव्य विमूढ़ बना देता है, स्मरण शक्ति काम नहीं देती, स्मरण शक्ति के विकृत होने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जिससे सर्वनाश हो जाता है, क्योंकि सारा संसार बुद्धि का ही खेल है। "बुद्धिर्यस्य बलं तस्य" बलवान वही है जिसकी बुद्धि सुस्थित है, बुद्धि गई तो सब कुछ गया। इसलिये कुसङ्ग से मनसा वाचा कर्मणा पृथक् रहना चाहिए।

शिक्षा और कुसंग

बिना पढ़े लिखों की अपेक्षा, शिक्षित समुदाय कुसंग के चक्र में अधिक फंसा हुआ है, इसका कारण हमारी प्रचलित शिक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रणाली है। अशिक्षित व्यक्ति अज्ञान से या कुसङ्ग से बुराइयों में फंसा हुआ है, किन्तु इस शिक्षा प्रणाली में बुराइयाँ सिखलाई जाती हैं, इसीलिये हमारे शिक्षित वर्ग के आचार का स्तर नीचा होता जा रहा है।

प्राचीनकाल में आर्षपाठविधि के अनुसार बालक गुरुकुलों में माता-पिता और साँसारिक वातावरण से पृथक् ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्यो-पार्जन करते थे। सात-आठ वर्ष के बालक-बालिका को गुरुजनों के निकटतम सम्पर्क में छोड़ दिया जाता था। गुरु आचार्य का यह प्रधान कर्म था कि वह दिन रात २४ घण्टे उनके आचार विचार का ध्यान रखता था और विद्या भी ऐसी ही पढ़ाई जाती थी जिससे लोक-परलोक दोनों सुधर जाते थे, पतित होने का ब्रह्म-चारी विद्यार्थी को अवसर ही नहीं मिलता था, इसलिये यहां पर कपिल, कणाद, जैमिनी, पतञ्जलि, और राम, कृष्ण तथा दयानन्द उत्पन्न हुये थे।

वर्तमान अनार्ष शिक्षा प्रणाली इससे सर्वथा विपरीत है, इससे मानव के स्थान पर दानव बनाये जा रहे हैं। वास्तव में इस शिक्षा प्रणाली की नींव ही लार्ड मैकाले की दूषित भावनाओं पर रखी हुई है, जिस भवन की नींव ही दूषित हो उससे कल्याण की क्या आशा की जा सकती है ?

चौबीस घण्टे में से केवल चार-पांच घण्टे पाठ्य पुस्तकों के पाठ रटवाकर अध्यापक अपना कर्त्तव्य पूरा समझ लेते हैं, माता-पिता को तो कोई चिन्ता करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, क्योंकि वे अपने पुत्र को स्कूल में पढ़ने के लिये भेज कर सर्वथा चिन्तामुक्त हो जाते हैं। विद्यार्थी के जीवन का ध्यान किसी को भी नहीं।

इस पाठविधि में विद्यार्थी के चरित्र निर्माण के लिये कोई स्थान नहीं है। आचार विचार को भ्रष्ट करने के साधनों की भरमार है। कामुकता को उत्पन्न करने वाले अश्लील, अनार्ष दूषित ग्रंथ पाठ्यक्रम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में रखे हुये हैं, जिनको पढ़ कर ब्रह्मचारी रहना कठिन है। प्रथम तो १५ और २० वर्ष की अवस्था ही ऐसी है जिसमें न प्रकाश होता है और न ही अन्धेरा। यदि इस अवस्था में विद्यार्थी को सन्मार्ग न दिखलाया जाय तो पतित होने की आशंका बनी रहती है। पतित होने का दूसरा साधन है दुश्चरित्र अध्यापक और विद्यार्थियों का कुसंग तथा विचारों को गन्दा करने के लिये अश्लील अनार्ष ग्रंथों का अध्ययन। यदि कुछ न्यूनता रह भी जाये तो उसको सहशिक्षा (नवयुवक और नवयुवतियों का एक साथ मिल कर पढ़ना) तथा सिनेमा नाच, गाना आदि पूर्ण कर देते हैं जिससे विद्यार्थी का सदाचारी रहना असम्भव है। इसी के परिणाम स्वरूप मैट्रिक करने तक ही लगभग सभी विद्यार्थियों का आचार भ्रष्ट हो जाता है। आगे चलकर कालेजों में तो बहुत कम विद्यार्थी ऐसे मिल सकेंगे जिनका ब्रह्मचर्य नष्ट न हो गया हो।

जब विद्यार्थी बी० ए० की उपाधि लेकर लुट-पिट कर आता है तब उसकी ठीक वही अवस्था बन जाती है जो रस निकाले हुए गन्ने की या निचोड़े हुये निम्बू की होती है। इस सम्पूर्ण दुष्परिणाम का कारण शारीरिक और मानसिक कुसङ्ग है।

प्राचीन काल में आचार्य शिष्य को बनाता था, 'तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति' (अथर्व ११।५।३) वेद के आदेशानुसार शिष्य की रक्षा उसी भांति करता था जिस प्रकार गर्भावस्था में मां बच्चे की करती है। राम को किसने बनाया ? गुरुवर वसिष्ठ ने। कृष्ण को किसने बनाया ? ऋषि घोर आंगिरस ने। अर्जुन को किसने बनाया ? आचार्य द्रोण ने। दयानन्द को किसने बनाया ? गुरुवर विरजानन्द ने। किन्तु आज की शिक्षा प्रणाली में यह भार गुरुओं ने अपने कन्धों से उठाकर दर्जियों पर छोड़ दिया है। इसीलिये जो जैसा चाहता है वैसा ही दो-तीन घण्टे में दर्जी के घर जाकर बन आता है।

वेद ने ऐसे लोगों को "ततनुष्टि" "तनूभुभ्र" और "कवासख" कहा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अपापशक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः"

(ऋ० ३।३४।४)

जो ईश्वर भक्ति करता है, उत्तम मार्ग पर चलता है, उसको ईश्वर बढ़ाता है, शक्ति प्रदान करता है, किन्तु जो ततनुष्टि है, दिन-रात विषयों में ही फँसता जाता है, तनूशुभ्र=शरीर की ही सजावट बनावट में लगा रहता है और 'कवासख' अर्थात् जो कुत्सित सङ्गति में रहता है जिसके मित्र तथा साथी कुत्सित आचरणी हैं उसको सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्यशाली परमात्मा (अप अप ऊहति) नीचे ही नीचे गिराता रहता है, मिटा देता है, विनाश कर देता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के भयंकर दुष्परिणामों को देख कर इससे कोई भी भारतीय सन्तुष्ट नहीं है, राष्ट्रपति से लेकर छोटे से कर्मचारी तक सभी इसकी कटु-आलोचना करते हैं। हमारे सभी नेता समय-समय पर कहते रहते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन होना चाहिये, किन्तु पता नहीं वे शुभ दिन कब आयेंगे जब दुराचार की जननी इस शिक्षा प्रणाली का अन्त होगा और यह अतीत शिक्षा-प्रणाली के रूप में परिणत होगी। परमात्मा कृपा करे कि जिससे शीघ्र ही ये दुराचार के अड्डे तथा आचरण हीन क्लर्क बनाने के कारखाने बन्द हों और फिर से वही रामायण-महाभारत कालीन आर्ष शिक्षा-प्रणाली प्रचलित हो, जिससे हम भी वाल्मीकि तथा व्यास के स्वर में स्वर मिलाकर कह सकें—

"सर्वे वेदविदः शूरा सर्वे शस्त्रविशारदाः"

तथा हमारे राष्ट्रपति भी राजा अश्वपति की भान्ति निःसंकोच होकर कह सकें।

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नायज्वा न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

(छन्दोग्योपनिषत्)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्संग के लाभ

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिये तुला इक अंग ।
तुले न ताहि सकल मिली, जो सुख लाभ सत्सङ्ग ।।

सत्संग के लाभ अपार हैं, मनुष्य माया-मोह से छूट जाता है और उसके अन्दर विवेक ज्ञान का उदय हो जाता है जिस से सत्यासत्य का निर्णय कर सकता है । सन्मार्ग पर चलने की शक्ति मिलती है, यदि आलस्य वश कुछ ढोलापन आ जाता है तो वह सत्सङ्ग से दूर हो जाता है । जैसे गिरा हुआ व्यक्ति भी सत्सङ्ग पाकर ऊंचा उठ जाता है, वड़े-वड़े डाकू भी सज्जनों की शरण में आकर सुधर जाते हैं । गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—

"सठ सुधरहिं सत्सङ्गति पाई । पारस पारसि कुधातु सुहाई ।।"

सत्सङ्ग के लाभों का वर्णन एक संस्कृत के कवि ने कितना सुन्दर किया है—

जाड्य धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।

सत्सङ्ग से बुद्धि की मलिनता, मूढ़ता दूर हो जाती है, वाणी में सत्य का सिञ्चन हो जाता है अर्थात् मनुष्य झूठ को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने लग जाता है जिससे सब पाप कर्म छूट जाते हैं, चित्त प्रसन्न रहता और संसार में उसकी कीर्ति फैल जाती है, इसलिये सत्सङ्ग से सभी शुभ गुण मनुष्य में आ जाते हैं ।

सत्सङ्ग को पाकर सहस्त्रों भूले भटकों ने पुनः सन्मार्ग को ग्रहण किया है ऐसे महापुरुषों के आपको अनेक उदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने केवल थोड़े से सत्सङ्ग से ही काया पलट दी है ।

महर्षि दयानन्द जी ने पेशावर में सिपाही लेखराम को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन का उपदेश दिया था, महर्षि के ब्रह्मचर्य का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने पच्चीस के स्थान पर ३६ वर्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक ब्रह्मचर्य का पालन किया और आगे चलकर वही लेखराम धर्म-वीरों की पंक्ति में अपना नाम अङ्कित करवा गया।

नास्तिक मुन्शीराम वकील बरेली में महर्षि दयानन्द जी के सत्सङ्ग में सम्मिलित हुआ था, वह उस समय सभी धर्मों से पराङ्मुख हो चुका था किन्तु महर्षि के उपदेशों का इतना गहरा प्रभाव हुआ कि वह नास्तिक मुन्शीराम के स्थान में ईश्वर का श्रद्धालु भक्त वीर सेनानी श्रद्धानन्द बन गया।

संवत् १९४० में जब महर्षि दयानन्द जी मृत्यु शय्या पर विराजमान थे तब उनके पास पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० गया। वह भी पहले ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता था किन्तु महर्षि की अन्तिम लीला को देखकर सदा के लिये सच्चा भक्त बन गया।

एक बार महर्षि दयानन्द जी को अमीचन्द ने एक गाना सुनाया। उसके गाने को सुनकर ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुये और कहा—"अमीचन्द तू है तो रत्न, किन्तु कीचड़ में पड़ा है।" इतना कहना था कि शराबी कबाबी और वेश्यागामी अमीचन्द सब पापों को छोड़कर सच्चा आर्य बन गया और अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार कार्य में लगा दिया।

मथुरा की घटना है, एक बार महर्षि दयानन्द जों को पतित करने के विचार से विरोधियों ने एक वेश्या को वस्त्राभूषणों से सुज्जित भेजा, स्वामी जी समाधि लगाये बैंठे थे, उनको देखकर वह वेश्या डर गई और वापिस लौट आई, किन्तु धूर्तों ने कुछ लोभ बढ़ाकर उसको पुनः भेजा। स्वामी जी का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने सब आभूषण उतार कर रख दिये और रोने लग गई। ऋषि की समाधि खुली और आश्चर्यान्वित हुए।

अब वेश्या, वेश्या नही रही थी, ऋषि के पांवों पर गिरी और अपना अपराध सुनाकर क्षमा याचना की तथा आगे से पवित्र जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया। इसी प्रकार ऋषि के जीवन की और भी अनेक घटनायें हैं वह वहाँ विस्तार भय से नहीं लिखी जा सकतीं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके जीवन को पढ़कर ही सब का ज्ञान किया जा सकता है।

इसी प्रकार भगवान् बुद्ध के जीवन की भी ऐसी ही अनेक घटनायें हैं। एक बार उपदेश करते-करते वे लिच्वी राज्य में जा पहुंचे, वहां पर 'अम्वापालिका' नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या थी, वह भी भगवान् बुद्ध के उपदेश में बन ठन कर जा पहुँची, और हाव भावों से भगवान् बुद्ध को अपने वश में करना चाहा। वे भी समझ गये कि आज की सभा में सबसे बड़ा रोगी यही है, इसी की पहले चिकित्सा करनी चाहिये।

भगवान् बुद्ध ने अपना उपदेश प्रारम्भ किया कि "यह शरीर कितना अपवित्र है, इसकी आंख से गीद निकलती है. नाक से सिणक निकलता है, मुँह से लार टपकती है, इसी प्रकार वायु और उपस्थेन्द्रिय से शौग (टट्टी) और पेशाब आता है, यहाँ तक कि रोम रोम से स्वेद निकलता है किन्तु भोलामानव इतने पर भी इतराता है और अपने रूप यौवन पर फूला नहीं समाता। एक दिन आयेगा यह सब कुछ मिट्टी में मिल जायेगा..........इत्यादि" उपदेश हो रहा था, उस वेश्या पर भगवान् बुद्ध के हार्दिक उपदेश का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस वेश्या का हृदय पिघल गया और वह फूट-फूट कर रोने लगी, आंखों की स्याही से सम्पूर्ण मुख मंडल तथा वस्त्र मैले हो गये।

उपदेश के अन्त में वह वेश्या बुद्ध के पास गई और पाँवों पर गिरकर क्षमा मांगने लगी। भगवान् बुद्ध समझ गये इसके रोग, की ठीक चिकित्सा हो गई है अतः उसको 'पुत्री' शब्द से सम्वोधन कर आश्वासन दिया। और उसने भी आगे से उत्तम रीति से जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया।

इतना ही नहीं, उसने बुद्ध को भोजन के लिये निमन्त्रण दिया और वहां जाकर बुद्ध ने पुनः उपदेश दिया। उपदेश में उस पूर्वोक्त वेश्या की जो सखी सहेलियाँ थीं उन्होंने भी इस पाप कर्म को छोड़ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का व्रत ग्रहण किया। तत्पश्चात् उन सहस्त्रों वेश्याओं ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और बौद्ध भिक्षुणी बनकर भगवान् बुद्ध के उपदेशों का प्रचार किया।

इसी प्रकार एक काकुदन्त नाम का बड़ा भारी विद्वान् था, उसको अपनी विद्या का बहुत अभिमान था, वह शास्त्रार्थ में पराजित कर बुद्ध को भी अपना शिष्य बनाना चाहता था, अपने सहस्त्रों शिष्यों सहित हाथी पर चढ़कर एक दिन वह काकुदन्त बुद्ध के पास शास्त्रार्थ करने के लिये गया। महात्मा बुद्ध के जीवन का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि बिना ही शास्त्रार्थ किये काकुदन्त बुद्ध का शिष्य बन गया।

इसलिये कहा है कि—

सम्भाषणं दर्शनं स्पर्शः कीर्त्तनं स्मरणं तथा।
पावनानि किलैतानि साधूनामिति शुश्रुमः॥

साधु-महात्माओं के साथ भाषण करना, उनके दर्शन, स्पर्श, प्रशंसा और स्मरण करना भी कल्याणकारी हैं।

सङ्ग किसका करना चाहिये ?

संसार में देखा जाता है कि जो जैसा होता है वह वैसों ही से मित्रता करता है, उन्हीं के साथ उठता-बैठता और खाता-पीता है। महाराजा भर्तृहरि जी लिखते हैं—

मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति,
गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः,
समानशीलव्यसनेषु सख्यम्॥

मृग मृगों के साथ चलते हैं, गायें गायों के साथ और घोड़े घोड़ों के साथ रहते हैं, मूर्ख मूर्खों के साथ और पण्डित पण्डितों के साथ रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि मित्रता उन्हीं की होती है जिनका आचार-विचार तथा व्यवहार मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इसलिए बुद्धिमानों ने मनुष्य को परखने के लिए यह कसौटी बना ली है कि यदि तुम जानना चााहते हो कि देवदत्त कैसा है, तो उसके साथियों को, उससे सम्बन्ध रखने वाले यार-दोस्तों को देख लो कि कैसे हैं, जैसे उसके साथी भले या बुरे हैं, वैसा ही देवदत्त भी है।

यह तो हुआ स्वाभाविक प्रवृत्ति के विषय में, किन्तु प्रयत्न से इस से वि।रीत किया जाता है। एक भला मनुष्य भी दुर्जनों में बैठ कर दुर्जन बन सकता है, इसी प्रकार दुर्जन भी सज्जनों की शरण में आ कर सज्जन बन सकता है। क्योंकि—

हीयते मतिस्तात हीनैः सह समागमात्
समैश्च समतामेति विशिस्टैश्च विशिष्टताम् ॥

अपने से हीन व्यक्ति के संग में रहने से कोई लाभ नहीं अपितु स्वयं हीन=नीच बन जाता है, अपने समान व्यक्ति के साथ रहने में भी कोई विशेष लाभ नहीं होता, अपने से श्रेष्ठ पुरुषों का सत्संग करने से लाभ होता है, स्वयं भी वैसा ही बन सकता है। इसलिए अपने से अधिक गुणवान् श्रेष्ठ पुरुषों तथा साधु-महात्माओं के संग में रहना चाहिए ;

सब से उत्तम सर्व शक्तिमान् परमात्मा है, उसका सत्सङ्ग= स्तुति प्रार्थना उपासना नित्य प्रति अवश्यमेव करनी चाहिए। ईश्वर की भक्ति का फल महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

'जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए।''

महात्मा गांधी जी लिखते हैं—

''जब आपकी विषय-वासनायें आपको धर दबोचने की धमकी दें तब आप अपने घुटनों के बल बैठ जाएं और परमात्मा से सहायता के लिये पुकार लगायें। ईश्वर का नाम हमारा अमोघ सहायक है।''

जब तक मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् जान कर उसकी भक्ति नहीं करता, ईश्वर पर विश्वास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं करता, तब तक पाप करने से नहीं रुक सकता। पाप कर्म सर्वदा छिपकर ही किया जाता है और मनुष्य सब को धोखा देकर एकान्त में पाप कर बैठता है। किन्तु उस सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक प्रभु से कभी कहीं नहीं छिप सकता। क्योंकि वह तो पहले ही सर्वत्र विद्यमान है। कुकर्म करते हुए जब भय, लज्जा आदि होता है तब मनुष्य इधर उधर चहुं ओर दृष्टि दौड़ाता है, कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा। जब कोई दृष्टिगोचर नहीं होता तो निशंक होकर पाप में प्रवृत्त हो जाता है। किन्तु उस मूढ़ को यह ज्ञान नहीं—"द्वौ सन्निषद्य यन्मत्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः (अथर्ववेद ४।१६।२) जो दो व्यक्ति मिल कर कोई गूढ़ मन्त्रणा करते हैं उसको तीसरा सकल ब्राह्माण्ड का स्वामी वरुण प्रभु जानता है। इसलिए कभी भी ऐसी भूल नहीं करनी चाहिए। जो दूसरों को धोखा देता है, ठगता है, वह वरुण देव द्वारा स्वयं ठगा जाता है, वरुण अपने पाशों से उसे तत्क्षण जकड़ कर बन्दी बना लेता है और मूढ़ पापी को पता तक भी नहीं चलता।

ईश्वर के पश्चात् तत्कृत वेदों का तथा वेदानुकूल शास्त्र-स्मृत्यादि का स्वाध्याय द्वारा सत्संग करना चाहिए। तथा जो ऋषि, मुनि, साधु महात्मा और आप्त पुरुष हैं उनकी संगति का लाभ उठाना चाहिए।

हमने अनेक स्थानों पर साधु-सन्तों से सत्संग करने के लिए निर्देश किया है। साधु-सन्तों से हमारा अभिप्राय वीतराग निष्काम, स्वार्थ, छल, कपटादि से रहित महापुरुषों से है जो सर्वदा लोक कल्याण में लगे रहते हैं। आज कल ऐसे भोजन भट्ट भी बहुत हैं जो केवल अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही वस्त्रादि सन्यासियों के चिन्हों को धारण कर पवित्र संन्यास आश्रम को ही कलंकित कर रहे हैं। केवल लिंग=चिन्ह विशेष धर्म का कारण नहीं होता। मनु जी ने स्पष्ट लिखा है—'न लिंगं धर्म कारणम्।'

धूर्त पाखण्डियों के चक्र में नहीं आना चाहिए, ये छद्मवेषी वे ही अधम पुरुष हैं जिनके विषय में चाणक्य ने कहा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः ।"

प्राण त्याग कर देना उत्तम है, किन्तु ऐसे धूर्त पाखंडी पुरुषाधमों की संगति में रहना नहीं।

जो वास्तव में सच्चे साधु हैं उनका आदर, सत्कार तथा सत्संग अवश्यमेव करना चाहिए—

साधुसङ्गतयो लोके सन्मार्गस्य च दीपकाः।
हार्दान्धकारहारिण्यो भानो ज्ञान विवस्वतः ।।

साधु-सन्तों का सत्संग इस संसार में सन्मार्ग को दिखलाने के लिए प्रकाश-स्तम्भ का काम करता है क्योंकि साधु-महात्माओं का सत्संग हृदयरूपी गुहा अज्ञानान्धकार को नष्ट करने के लिए ज्ञान-सूर्य है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज लिखते हैं—

"परमेश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि यज्ञ का अनुष्ठान. संग्राम* में शत्रुओं की पराजय, अच्छे अच्छे गुणों का ज्ञान, विद्वानों की सेवा, दुष्ट मनुष्य व दुष्ट दोषों का त्याग……और ईश्वर की उपासना तथा विद्वानों का समागम करके और सब विद्याओं को प्राप्त होके सब के सब दुःखों को उत्पन्न करने वाली उन्नति सदा करनी चाहिए।" (यजुर्वेद भाष्य १।१६)

सत्संग के विषय में इस वाक्य को सर्वदा स्मरण रक्खें—

'क्षणमिहसज्जनसङ्गतिरेकाभवति भवार्णवतरणे नौका'

सज्जनों का संगरूपी नौका क्षण भर में संसार सागर से पार उतरने के लिए सहायक है।

कुसंग के आधुनिक स्रोत

[सिनेमा, सरकस, स्वांग, रामलीला, नाच-गानादि]

आज के युग में दूषित विचारधारा का सब से अधिक प्रचार करने वाले सिनेमा (चलचित्र) ही हैं। हमारी आचार परम्परा सभ्यता

*जीवन संग्राम में काम, क्रोध, लोभ, मोस आदि वस्तुओं का पराजय करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रौर संस्कृति पर कुठाराघात कर कामवासना का, विलासिता का तथा स्पष्ट रूप में दुराचार का दिग्दर्शन कर सम्पूर्ण वातावरण को विषय विष से भर दिया है। इस दुष्ट पिशाच के चक्र में फँस कर लाखों करोड़ों बालक बालिका श्रौर नवयुवक तथा नव युवतियां अपने चरित्र को भ्रष्ट कर चुकी हैं श्रौर दिन प्रतिदिन करती जा रही हैं। इसी सिनेमा के परिणाम स्वरूप सहस्रों नर-नारियों ने अपनी अमूल्य निधि यौवन को विषयाग्नि का ईंधन बना दिया है, लाखों परिवार उजड़ गये किन्तु दुःख है कि आज भी इस पतन के भयंकर साधन सिनेमा को कला के आवरण से ढका जा रहा है। वास्तव में देखा जाय तो कला का नाम देकर देश के साथ गद्दारी की जा रही है। अनेक शताब्दियों में भी विदेशी शासक हमारे चरित्र की जो हानि नहीं कर सके उसको इस कला ने कुछ ही वर्षों में कर डाला। यदि इस कला का इसी प्रकार से स्वागत होता रहेगा तो भावी नवयुकों की आचारहीनता पराकाष्ठा पर पहुंच जायेगी और सभ्यता एवं संस्कृति को मुँह छिपाने को ठौर न मिलेगा।

भारत में सिनेमाघरों की संख्या ४००० के लगभग है, दो करोड़ (२०,००००००) व्यक्ति प्रतिदिन सिनेमा देखते हैं। अकेले देहली शहर में २७००० व्यक्ति प्रतिदिन सिनेमा देखते हैं। एक ओर वे व्यक्ति हैं जिनको पेट भर रोटी भी सुलभ नहीं और दूसरी ओर देश का ८५ करोड़ रूपया व्यभिचार के प्रचार में व्यय किया जा रहा है। हमारी इतनी बड़ी धन राशि हमारे ही विनाश में लगी हुई है और हम बैठे-बैठे 'घर फूंक तमाशा' देखते रहते हैं।

ब्रह्मचर्य को नष्ट करने के लिये सिनेमा सब से बुरी कुसंगत है, अथवा यों समझें कि सिनेमा ब्रह्मचर्य का सब से प्रबल शत्रु है। देखने वाला सात जन्म में भी वीर्यरक्षा नहीं कर सकता, क्योंकि इस में कामुकता, श्रृंगार, असभ्य-परिहास, चुम्बन, आलिंगन, गर्जन, उत्तेजन, नग्न-नृत्य आदि की ही भरमार होती है। अधिकतर फिल्में नवयुवकों का यही पाठ पढ़ाती हैं कि किस भान्ति किसी भले घर की लड़की को भ्रष्ट किया जाये। पतन की इतनी पराकाष्ठा हो गई है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कि फिल्म देखने वाले नवयुवक के पास अपनी सगी बहन भी सुरक्षित नहीं समझी जाती।

जब किसी सिनेमा देखने वाले व्यक्ति से सिनेमा देखने के विषय में पूछा जाता है कि आप सिनेमा क्यों देखते हैं ? उतर में वह कहता है—सिनेमा इस युग की सर्वोत्तम कला है, जब कार्य करते करते मन ऊब जाता है तो मन बहलाव के लिये सिनेमा अच्छा साधन है, बहुत सी फिल्में शिक्षाप्रद होती हैं जिन से उत्तमोत्तम शिक्षायें मिलती हैं, इसलिये सिनेमा देखने में हानि ही क्या है ? लोग व्यर्थ ही निन्दा करते रहते हैं, इत्यादि अनर्गल प्रलाप आरम्भ कर देता है।

उपरिलिखित सभी हेतु हमारे विचार से हेत्वाभास हैं। सर्वनाश के साधन को कला कहना या मानना ही सब से बड़ी भूल है। यदि दुर्जनतोष न्याय से इसे कला भी मान लें, तो क्या सिनेमाघर कला सिखलाने के विद्यालय हैं ? वहां चित्र दिखलाये जाते हैं, चित्रों के सम्भाषण और हाव-भावों से किसी कल्पित या ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया जाता है। न कला की दृष्टि से सिनेमा के कार्यकर्त्ता सिनेमा दिखलाते हैं और न ही दर्शक देखते हैं। भद्दे गाने सुनकर श्रङ्गार रस से परिपूर्ण हाव-भावों से मन में कामवासना अवश्य अंकुरित हो जाती है और वह ब्रह्मचारी के पतन का कारण बन जाती है।

मनोरंजन का साधन मानकर सिनेमा देखना भी अज्ञान है। इसको मानसिक पतन का साधन अवश्य कहा जा सकता है; मनोरंजन का नहीं। सिनेमा देखने से मन की थकावट दूर नहीं होती, अपितु मन और भी निर्बल हो जाता है। सिनेमा के शृङ्गार रस से परिपूर्ण वातावरण में सदाचार की जड़ कभी नहीं जम सकती। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने "मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प" पुस्तक में लिखा है—"सादगी सदाचार की जननी है और श्रङ्गार व्यभिचार का दूत है।

मनोबल का साधन सदाचार है, सदाचार के अभाव में सिनेमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
देखने से मनोरंजन नहीं होता, किन्तु मद्य के नशे की भान्ति ऐसा प्रतीत होता है, पीछे से मानसिक शक्ति का ह्रास और निर्बलता का पता लगता है।

इसके अतिरिक्त चलचित्रों के देखने से नेत्र ज्योति मन्द हो जाती है, इसी के परिणामस्वरूप आज छोटे-छोटे बालक भी उपनेत्र (ऐनक) लगाये फिरते हैं। सिनेमा देखते समय सहस्त्रों व्यक्ति बन्द भवन के अन्दर घुसकर बैठ जाते हैं; जहाँ पर न सूर्य का प्रकाश है और न ही शुद्ध वायु का संचार, ऐसी अवस्था में स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है।

लोग रात्रि के बारह बजे तक सिनेमाघरों में बैठे रहते हैं और प्रातःकाल आठ-नौ बजे तक पड़े-पड़े सोते रहते हैं, ऐसे लोग स्वास्थ्य रक्षा तथा ब्रह्मचर्य पालन तो क्या करेंगे, अपना जीवन निर्वाह भी पराश्रित होकर करते है।

फिल्मों को शिक्षाप्रद भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अच्छी से अच्छी फिल्म में भी साधारण जनता की वासना-तृप्ति के लिए कुछ न कुछ सामग्री अवश्य मिलेगी। यदि किसी फिल्म को शिक्षा प्रद भी मान लें, तब भी सिनेमा देखने का स्वभाव अवश्य हो जायेगा और वह पुनः सिनेमा देखने के लिए बाधित करेगा। सर्वदा शिक्षा-प्रद ही फिल्में दिखलाई नहीं जाती, विवश होकर गन्दी से गन्दी फिल्म देखनी पड़ेगी और उसका दुष्परिणाम आचार भ्रष्टता सामने है ही। मेरे पास ऐसे पत्र सर्वदा आते रहते हैं; जिनमें लुट-पिट कर भ्रष्ट हुए विद्यार्थी अपना रोना रोते हैं।

इसलिये तन, मन, धनऔर आत्मा सभी को चौपट करने वाले इस भयङ्कर कुसङ्ग से विद्यार्थी, ब्रह्मचारी तथा अपने अमूल्य मानव जीवन से कुछ भी प्रीति रखने वाले व्यक्ति को, सर्वदा दूर रहना चाहिये।

इसी भांति सरकस, रासलीला, रामलीला, स्वांग, ड्रामा, नाटक, नाच-गानादि भी ब्रह्मचर्य को दूषित करने वाले होने से सर्वथा त्याज्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। महर्षि दयानन्द जी ने भी सत्यार्थ प्रकाश में 'रामलीला' को 'रांड़लीला' लिखा है और साथ-साथ नाच गानादि का भी सर्वथा निषेध किया है क्योंकि ये ब्रह्मचर्यपालन और विद्योपार्जन में बाधक हैं। कुसङ्ग ब्रह्मचर्यपालन तथा विद्याप्राप्ति का सबसे बड़ा विघ्न है : महर्षि दयानन्द जी ब्रह्मचारी के लिये सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते हैं—"जो विद्या पढ़ने-पढ़ाने के विघ्न हैं उनको छोड़ देवें, जैसा कुसङ्ग अर्थात् दुष्ट विषयी जनों का संग, दुष्ट व्यसन जैसे मद्यादि सेवन और वेश्यागमनादि, बाल्यावस्था में विवाह अर्थात् पच्चीसवें वर्ष से पूर्व पुरुष और सोलहवें वर्ष से पूर्व स्त्री का विवाह हो जाना..............."इत्यादि।

इसी भान्ति सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

"वीर्य की रक्षा में आनन्द और नाश करने में दुःख प्राप्ति भी जना देनी चाहिये। जैसे देखो जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता हैं तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम, बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण में यही रीति है कि विषयों की कथा विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्शादि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रह कर उत्तम शिक्षा पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक महाकुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है। जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण, वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुम का यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।"

इसी प्रकार पठन-पाठन विधि में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है—"मुख्य करके सामवेद का ज्ञान वादित्र वादन पूर्वक सीख और

*यहां पर आदि शब्द से अफीम, भङ्ग, चन्डू, चरस ताड़ी, सिग्रेट, गांजा, सुलफादि सभी मादक द्रव्यों का निषेध समझना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारदसंहिता आदि जो-जो आर्य ग्रंथ हैं उनको पढ़ें, परन्तु भड़वे वेश्या और विषयासक्ति कारक वैरागियों के गर्दभ शदव्वत व्यर्थ आलाप कभी न करें। (सत्यार्थ० समु० ३)

पाठक वृन्द ! महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जीवन को उत्तम बनाने के लिए तथा ब्रह्मचर्य पालन, विद्योपार्जनादि के विषय में में कितना स्पष्ट लिखा है। सभी मादक द्रव्य--नशे सभी विषय एवं सभी प्रकार के कुसंग से पृथक् रहकर सर्वथा पवित्र तपस्वी जीवन बना कर ही ब्रह्मचर्य पालन और विद्याध्ययन किया जा सकता है और कुसंग में फँस कर नशे तथा विषयों का सेवन करने से सर्वथा नष्ट हो जाता है, यह महर्षि के उपदेश से भली-भांति स्पष्ट हो गया है। अतः इनका सर्वथा नष्ट हो गया है। अतः इनका सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

को गा सके सत्संग प्रभावा ।।टेक।।
जलचर, थलचर नभचर नाना, जे जड़ चेतन जीव जहाना।
काहा मान लीजे बड़भागी पावा ।। को गा सके···
बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।
उत्तम कर्म से हो मन चावा ।। को गा सके···
शठ सुधरें सत्संगति पाई, पारह परस कुधातु सुहाई।
अहो भाग्य मेरे जो इन आवा ।। को गा सके···
मो मोसन कहा जात न कैसे, साक वणिक मणि गुण जैसे।
देखत बुद्धि पै पड़ जात छावा ।। को गा सके···
उपजे ही एक संग जलमाहीं, जलज जोक जिमि गुण बिलगाहीं।
मन तो चंचल इत उत धावा ।। को गा सके···
सुधा सुरा सम साधु असाधू, जनक एक जल जलधि अगाधू।
धन्य जनम ये अमर फल खावा ।। को गा सके···
बिछूरत एक प्राण हर लेहीं, मिलत एक दारुण दुःख देहीं ।।
सुन ब्रह्मानन्द गुसाईं जी गावा ।। को गा सके···

तजो रे भाई दुष्ट जनों का संग ।। टेक ।।
उपाधि उपजे संग से, जिनके कारन पाप लागे अंग।
धर्म, कर्म और रहे शर्म ना, बनं जाये पूरा नंग ।। तजो रे भाई···

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग युगति से ईश्वर चीन्हो, कामना खोटी लेकर।
भांति श्वान की हड्डी चाबत, वृथा है मंजन गंग ।। तजो रे भाई…
मोह की आंधी छाई सर पै, ना सूझै कोई ढंग।
मोह की मद्य को पीकर भूले, करें क्रोध से जग ।। तजो रे भाई…
पड़े भोगना करनी का फल, फिर होवे काम तम।
ज्यूं जालिम अब जुल्म में राजी, फिर भी रहना दंग ।। तजो रे भाई…
गुरु सेवा से ये वर मांगो, ना हो भगती भंग।
'ब्रह्मानन्द' मन कामरि प्रभु की, चढ़े न दूजो रंग ।। तजो रे भाई…

चर्च द्वारा बालिका-व्यापार

केरल की गरीब लड़कियों को वैटिकन स्थित कैथोलिकों के मुख्य मठाधीश और केरल में सक्रिय उनके एजेंट पादरियों की साजिश से खरीदा और बेचा जाता है, इस आरोप की पुष्टि ब्रिटेन की एक अध्यापिका ने की है, जिसे केरल मे खरीद कर यूरोप पहुँचायी गयी गरीब भारतीय किशोरियों को इतालवी भाषा पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया था। ब्रिटेन की इस अध्यापिका ने अपने अनुभव एक पुस्तक में लिखे हैं। उसने बताया है कि वह इटली लायी गयी दुखी भारतीय बालिकाओं की हृयद्रावक कहानी सुनने के बाद स्वयं केरल पहुंची और स्थिति की सही जानकारी प्राप्त करने के बाद इटली लौटी जहां उसने ईसाइयत के नाम पर जारी इस महिला व्यापार का भंडाफोड़ किया।

ब्रिटिश अध्यापिका ने लिखा कि केरल के कैथोलिक पादरियों को यूरोप के गिरजों के लिए लड़कियां भेजने के लिए वैटिकन से हवाई-यात्रा, मार्ग-व्यय आदि के रूप में प्रति बालिका के हिसाब से काफी रकम भेजी जाती थी। भारतीय किशोरियों की इस खरीद-फरोख्त में यूरोपिय गिरजाघरों की भिक्षुणियां (नन) भी शामिल होती थीं। केरल के कैथोलिक पादरी प्रति बालिका के लिए मिलने वाली रकम का बहुत बड़ा भाग अपनी जेब में रख लेते और भारतीय लड़कियों को विमान की निचली श्रेणी (एकानमी क्लास) में बैठाकर भेड़ों की तरह इटली भेज देते। ब्रिटिश अध्यापिका के अनुसार कुछ वर्ष की अवधि में लगभग दो हजार भारतीय लड़कियों को केरल के कैथोलिक पादरियों ने वैटिकन के कैथोलिक मठाधीशों को बेचा। ब्रिटिश अध्यापिका ने स्वीकार किया है कि भारत के गरीब परिवारों की लड़कियों की खरीद-फरोख्त के इस पाप के लिए समूचा कैथोलिक चर्च दोषी है। भारत की गरीबी का विदेशी कैथोलिक प्रचारक किस तरह अनुचित और अमानवीय लाभ उठा रहे हैं, यह इसका प्रमाण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरनामसिंह तीर

चुनाव चक्रम

वह भी दिन थे, जब मजलिसी संघ से नकद पैसा लेकर भी कोई उम्मीदवार उसके टिकट पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं होता था। और यह भी दिन आ गये थे, कि हर उम्मीदवार अपना सारा खर्च अपने पास से करने के अलावा केन्द्रीय फंड के लिए भी कुछ-न-कुछ देने के लिए तैयार था, बशर्ते कि उसे मंजलिसी संघ का टिकट मिल जाये।

टिकट बोर्ड के तीन सदस्य थे, और तीनों मजलिसी संघ के तीन दलों से संबंध रखते थे। जाहिरी तौर पर वे यद्यपि तीनों नेता, श्री उद्घाटन सहाय, श्री महाबली सिंह और श्री खलीलुर्रहमान चौधरी एक थे, पर अन्दर से हर एक इस कोशिश में था, कि उसके दल के उम्मीदवारों को ज्यादा-से-ज्यादा टिकट मिलें, क्योंकि तीनों को धर्म अथवा पार्टी की अपेक्षा अपने-अपने दल अधिक प्रिय थे।

जब टिकट-चाहक इन्टरव्यू के लिए पेश होता, तो तीनों सदस्य राजनैतिक मुस्कराहट के साथ उसका स्वागत करते। और जब वह वापस चला जाता, तो तीनों में से अौवल दोनों ने नहीं, तो कम-से-कम एक ने फरमाया—'यह बात बोर्ड में ही रहे। इस उम्मीदवार का चरित्र ठीक नहीं है।"

पर प्रकाश प्रभाकर जी चौधरी ग्रुप के उम्मीदवार थे। जब वह पेश हुए, तो तीनों ने हँसकर प्रभाकर जी का स्वागत किया। हाथ मिलाए, और कुर्सी पर बिठा कर उनकी स्तुति करनी शुरू कर दी—"ये बड़े त्यागी हैं, जी," उद्घाटन सहाय ने कहा।

"इनका क्या कहना है, जी ! ये तो कुर्बानी की मूरत हैं, जी !" महाबली सिंह बोला।

"खैर, कुछ भी हो जी, अगर हमें यह सीट जीतनी है, तो इसके लिए प्रभाकर जी ही बढ़िया उम्मीदवार हैं। इन जैसा किसी का भी इलाके में रसूख नहीं है।" चौधरी साहब ने राय देते हुए कहा।

जब प्रभाकर जी नमस्कार करके बाहर चले गये, तो महाबली सिंह कहने लगे—"यह बात टिकट-बोर्ड में ही रहे। यह प्रभाकर जी इस बात के लिए बहुत बदनाम हैं, कि यह गंगापुर के एक आश्रम से एक क्वांरी लड़की को निकाल लाए थे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अच्छा ! तो तीन साल की इन्होंने कैद काटी है उसी जुर्म में शायद।" उद्घाटन सहाय ने ताईद करते हुए कहा।

"नहीं-नहीं, कैद तो इन्होंने देशभक्ति में ही काटी थी। जवानी के दिनों में लड़की निकालने वाली गलती जरूर कर बैठे थे।" चौधरी जी अपनी ओर से सफाई पेश करते हुए बोले।

"अच्छा, छोड़ो इस बात को, अगला उम्मीदवार आ रहा है।" उद्घाटन सहाय ने सबका ध्यान नये उम्मीदवार की ओर आकृष्ट करते हुए कहा—"लो जी, यह हैं सरदार रत्नदेव सिंह। हमारे जिले में इनको राजा रत्ना कह कर याद किया जाता है। बड़े दानी पुरुष हैं यह। अगर इनको टिकट दिया जाये, तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं, कि यह सीट हम बिना मुकाबला जीत जायेंगे उद्घाटन सहाय ने अपने उम्मीदवार की जान-पहचान का उद्घाटन करते हुए कहा।

"बड़ी खुशी हुई जी, दर्शन करके ! तारीफ तो हमने पहले भी बहुत सुनी थी।" चौधरी साहब और महाबली सिंह ने राजा साहब को कुर्सी पेश करते हुए कहा।

जब राजा साहब इन्टरव्यू के बाद चले गये, तो चौधरी साहब ने टिकट-बोर्ड के उसूलों के अनुसार कहा—"माफ करना, यह बात बोर्ड में ही रहे। राजा रत्नदेव सिंह जी को राजा का खिताब किसी रियासत के राजा होने के कारण लोगों ने नहीं दिया है।"

'चलो, यों ही सही। लोगों ने तो दिया है न। हम आखिर लोगों के राज्य, लोगों द्वारा राज्य और लोगों के लिए राज्य तले चुनाव लड़ रहे हैं। लोग जब किसी को खिताब बख्श दें तो समझना चाहिये कि वे उसके व्यक्तित्व की कितनी कद्र करते हैं।" उद्घाटन सहाय ने अपने ग्रुप की वकालत करते हुए कहा।

"वैसे यह बात बोर्ड में ही रहे," चौधरी ने दखल देते हुए कहा—"राजा साहब का अभी भी पुलिस के बस्ताअलिफ में नाम है। और कभी दस नम्बर के बदमाशों की पुलिस परेड होती है, तो इनको बड़ी शान के साथ वहाँ बुलाया जाता है।"

"छोड़ो, जी ! लिए फिरते हैं पुलिस को ! पुलिस का रवैया अभी अंग-रेजी राज्य जैसा ही है। मुझे उपमंत्री ने कुछ दिन हुए बताया है, कि पुलिस वाले अभी तक उसकी डाक सेंसर करते रहते हैं।" उद्घाटन सहाय ने खीझ कर कहा।

इतने में अगले उम्मीदवार आ गये। सबको फिर मुस्कराना पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"आइए, आइये, देवता स्वरूप महाशय मदन गोपाल सीकरी जी। लो, जी यह वह शख्सियत है, जिन्होंने अपनी सारी उम्र की कमाई शफाखाने, अस्पताल और स्कूल खोलने में लगा दी। लोग इनको पूजते हैं, पूजते।" महाबली सिंह ने अपने उम्मीदवार का परिचय कराते हुए कहा।

उम्मीदवार ने मुस्करा कर कहा—"महाराज जी, मैं तो चुनाव लड़ने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था, पर जनता ने मजबूर करके खड़ा कर दिया। पार्टी को मेरी सीट पर न कोई पैसा खर्च करने की जरूरत है, और न आदमी भेजने की। यह सीट तो चुटकी बजा कर हम आपको जिता देंगे।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। लो, जी, उम्मीदवार में इतना आत्म-विश्वास तो होना ही चाहिए। बड़ी खुशी हुई, सीकरी साहब, आप से मिल कर।" दूसरे दोनों सदस्यों ने सीकरी साहब से हाथ मिलाते हुए कहा।

जब देवता स्वरूप महाशय मदन गोपाल जी सीकरी कमरे से बाहर निकल गये, तो चौधरी साहब कहने लगे—"यह बात बोर्ड में ही रहे। यह महाशय जी वह शख्स हैं, जिन्होंने गोहत्या से भी बड़े-बड़े पाप किये हैं। ब्लैक मार्केट करके, अपने घर जुए के अड्डे खोलकर और स्मगलिंग करके जिन्होंने इतना पैसा पैदा किया है, कि इतनी किसी छोटे-मोटे देश के रेवेन्यू की आय भी नहीं हो सकती।"

"मैं भी एक बात कहना चाहता हूँ, पर यह बात भी बोर्ड में ही रहे," उद्घाटन सहाय जी बोले—"यह शख्स अकेला इतनी शराब पी जाता है, जितनी दस आदमी मिलकर न पी सकें।"

महाबली सिंह गुस्से से बोले="माफ करना, यह मनगढंत इलजाम है।"

इतने में अगला उम्मीदवार आ टपका। चौधरी साहब ने कुर्सी से उठ कर उसे आलिंगन में ले लिया, और दूसरी कुर्सी पर बिठा कर कहने लगे—"यह खान फितरत रहमान साहब हैं। जिस खूबसूरत शख्सियत के यह मालिक हैं, उसका कोई और सानी नहीं हो सकता। हर कौमी तहरीक में पहली कतार में खड़े होकर लड़ते रहे हैं।"

उद्घाटन सहाय और महाबली सिंह जी कहने लगे—"लो, जी, यह कोई बताने की बातें हैं? खां साहब ने मादरे-वतन की जो खिदमतें की हैं, उन पर हम सबको फखर है।"

जब खां साहब चले गये, तो महाबली सिंह कहने लगा—"मैं इस पक्ष में नहीं हूँ, कि खां साहब की जात पर उंगली रखी जाये। पर यह बात बोर्ड में ही रहे, खां साहब के एक नहीं, दो नहीं, चार बेगमात हैं। हमारी पार्टी का दस्तूर एक से ज्यादा शादी वाले को टिकट नहीं देने देता,"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
"शादियों को मारो गोली। देखने वाली बात यह है कि उम्मीदवार की राजनैतिक सूझ-बूझ और देशभक्ति कैसी है।"

चौधरी साहब अभी यह वकालत कर ही रहे थे, कि अगले उम्मीदवार ने आ कर "नमो नारायण" कहा।

उद्घाटन सहाय जी कहने लगे—"लो, जी यह हैं मिस्टर जांन विलियम, बड़े होनहार वकील हैं। बड़े मिलनसार हैं। लेक्चर देने में इनका कोई सानी नहीं। हिन्दू, मुसलमान, सिख ईसाई, सब इनको अपना उम्मीदवार समझते हैं।

"ठीक है, ठीक है। सच पूछें, तो हमें ऐसे उम्मीदवारों की ज्यादा जरूरत है, जो कानून को समझते हों। जिनको लेजिस्लेटिव एसेम्बली भी कहना नहीं आता, उनकी हमें जरूरत नहीं।" महाबली सिंह जी मिस्टर जान विलियम की स्तुति करते हुए बोले।

जब वह चले गये, तो महाबली सिंह जी कहने लगे—"यह बात बोर्ड में ही रहे। मिस्टर जान विलियम के घर अभी भी नाजायज शराब बनाने की भट्ठी चलती है। एक इन्होंने रेस्तराँ खोला हुआ है, जिसको रेस्तरॉ के बजाय वेश्यालय कहा जाये, तो ज्यादा मुनासिब है।"

चौधरी साहब कहने लगे—"माफ करना, मैं बात करता हुआ अच्छा नहीं लगता। वैसे भी यह बात बोर्ड में रहनी चाहिए, कि मिस्टर जान विलियम को एक न दिखाई देने वाला शारीरिक रोग लगा हुआ है।"

इतने में अगला उम्मीदवार आ गया। यह चौधरी साहब का निजी दोस्त था। चौधरी जी से ज्यादा महावली सिंह और उद्घाटन सहाय जी ने उसका पुरतपाक स्वागत किया। दोनों कहने लगे—"श्री मंगल सेन सारी कंस्टीचुएंसी के दिल और आत्मा हैं।"

पर जब मंगल सेन जी चले गये, तो चौधरी साहब नें कहा—"यह बात बोर्ड में ही रहे, कि मैं यद्यपि मंगल सेन जी का गहरा दोस्त हूँ, पर दोस्ती के पीछे राजनीतिक मूल्यों की कुर्बानी नहीं दी जानी चाहिए। मैं फिर भी कहूंगा कि यह बात बोर्ड में ही रहे, कि मंगल सेन लाखों रुपये पब्लिक से चन्दे के रूप में इकट्ठे करके हड़प कर गया है और आज तक एक पैसे का भी हिसाब नहीं दिया। खैर, चन्दा इकट्ठा करने में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती है। मेहनत करके कोई थोड़ा बहुत खा भी जाये, तो कोई प्रलय नहीं आ जाता। पर इन्होंने जिस तरह अपने सगे मामा की मासूम लड़की की जिंदगी तबाह की, वह किस्सा मुझसे बताया नहीं जा सकता।"

उम्मीदवार आते रहे, और इन्टरव्यू दे दे कर जाते रहे। बोर्ड वाले हर आने वाले का इस तरह स्वागत करते थे, कि उससे अच्छा अन्यकोई उम्मीदवार नहीं समझा गया। पर उन उम्मीदवारों के बारे में जो बातें केवल 'बोर्ड में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही रहने वाली' की गयीं, उनको सुनकर कमरे की दीवारें भी कांपने लग गयीं।

उम्मीदवार बाहर निकलता था, तो एकाध बोर्डिया कह उठता था— माफ करना, यह बात केवल 'बोर्ड में ही रहे, इससे ज्यादा बेईमान, बदमाश और गिरा हुआ और कोई शख्स हो ही नहीं सकता।"

इन्टरव्यू होते रहे। उम्मीदवारों के नाम लिखे जाते रहे। आखिर जब सभी निपट गये, तो चौधरी साहब कहने लगे—"यह बात बोर्ड में ही रहे, कि हम किसी एक का सर्वसम्मति से या बहुमत से चुनाव नहीं कर सके।"

उद्घाटन सहाय जो बोले—"माफ करना, यह बात बोर्ड में ही रहे, कि जो जो आरोप हमने बेचारे उम्मीदवारों पर लगाए हैं, उससे भी अधिक बोर्ड के सदस्यों पर लग सकते हैं, और बाहर लग रहे होंगे।"

महाबली सिंह जी बोले—"माफ करना, आरोप लगाने या जवाबी हमलों से हम कोई मसला हल नहीं कर सकते। हर इन्सान में कुछ-न-कुछ गुण और कुछ-न-कुछ अवगुण होते हैं। जिस तरह आज हमने खाक उड़ाई है, इस तरह हम किसी मंजिल पर पहुँच नहीं सकते। हम पर पार्टी ने योग्य उम्मीदवार चुनने की जिम्मेदारी डाली है। हमें कोई-न-कोई हल निकालना ही चाहिए।

"माफ करना, यह बात बोर्ड में ही रहे, कि हम तीनों आदमी ही अपनी मर्जी से चालीस-चालीस उम्मीदवारों के नाम पेश कर दें। किसी को किसी पर कोई एतराज नहीं करना चाहिए।"

"चाहे इन चालीस-चालीस में वह उम्मीदवार भी हों, जिनके बारे में हमने बोर्ड में रहने वाली बातें की हैं?" महाबली सिंह ने साथी सदस्यों से उपरोक्त तजवीज के बारे में स्पष्टीकरण माँगते हुए कहा।

"इन चालीस-चालीस में चाहे हम इनसे भी बुरे नाम डाल लें। बोर्ड को क्या एतराज हो सकता है?" चौधरी साहब ने अपने फारमूले का स्पष्टीकरण करते हुए कहा।

"बहुत अच्छा। तो फिर हम अपनी-अपनी लिस्ट तैयार कर लें," उद्घाटन सहाय जी बोले।

"पर एक कठिनाई आयेगी," महाबली सिंह ने बोर्ड का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा—"हो सकता है, कि एक-एक हलके के लिए दो-दो या तीन-तीन नाम इकट्ठे हो जायें।"

"छोड़ो, जी, यह मामूली बात है। ऐसे उम्मीदवारों को दूसरे हल्कों से खड़ा किया जा सकता है। पार्टी मजबूत हो, तो उम्मीदवार चाहे काले पानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में खड़ा कर दो, लोग अपने आप वोट डाल देते हैं।" चौधरी साहब अपने फारमूले की सफलता पर विश्वास प्रकट करते हुए बोले।

"लो, जी, यह बात बोर्ड में ही रहे, कि हमने उम्मीदवारों का इस अद्वितीय फारमूले से फैसला किया है," महाबली सिंह ने किसी राजनीतिक कठिनाई को सामने रखते हुए कहा।

"ठीक फरमाते हैं, जनाब। सब-कुछ बोर्ड में ही रहेगा।" चौधरी साहब ने अपनी ओर से यकीन दिलाते हुए कहा।

अगले दिन बोर्ड की ओर से उम्मीदवारों के नामों की सूची प्रकाशित की गयी। अन्य उम्मीदवारों के नामों से भी पहले उस सूची में श्री प्रेम प्रकाश प्रभाकर, राजा रत्नदेव सिंह, देवता-स्वरूप महाशय मदन गोपाल सीकरी, खान फितरत रहमान साहब, मिस्टर जान विलियम और लाला मंगल सेन जी के नाम शामिल थे। बोर्ड के तीनों सदस्यों के नाम भी बतौर उम्मीदवारों के उनके चुनाव-क्षेत्रों के सामने लिखे हुए थे।

※ डूबती नैया ※

खायके घास और पात सबै,
जलपान करें जहाँ ताल तलैया।
साँझ भयो घर आपुहि आवत,
कोऊ न चाहिय जाति ढुढ़ैया॥
है जग देव सरूप गऊ माँ,
ताहि विसारत भारतीय भैया।
गो विकास को यत्न करो,
नहिं भारत की अब डूबति नैया॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष व दिल्ली प्रशासन के स्थायी एडवोकेट (स्टैंडिंग कौंसिल) श्री सोमनाथ जी एडवोकेट के पुत्र श्री अशोक बी.ए.एल.एल.बी. का विवाह सौ. शशि बी.ए. के साथ २२ नवम्बर को ससमारोह संपन्न हुआ। 'जन-ज्ञान' नव युगल को आशीर्वाद देता हुआ उनके सफल, सुखी जीवन की कामना करता है।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्र० अखिलानन्द निर्वाणदिवस

आर्यसमाज मन्दिर मुगलसराय में धनतेरस शनिवार, दि० १६ अक्तूबर १९६१ ई० को ब्र० अखिलानन्द निर्वाण दिवस सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री डा० दुखन राम जी, भूतपूर्व कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में मनाया गया।

वक्ताओं में सर्व श्री पं० आर्यभिक्षु जी, प्रो० वेदप्रकाश जी, पं० ध्रुवमित्र शास्त्री, प्रो० ब्रजेश कुमार श्री वास्तव, श्री रामकृष्ण जी तथा श्री चुन्नी लाल जी क्षेत्रपाल ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अध्यक्षपद से बोलते हुए श्री डा० राम ने कहा कि ब्रह्मचारी जी परम पूज्य, तपोमूर्ति कर्मनिष्ठ योगी थे। मुझे उनकी सेवा का अवसर दो बार उनके मोतियाबिन्द के आपरेशन के समय मिला। वास्तव में हम दोनों डाक्टरों ने एक दूसरे की चिकित्सा की। मैंने आपरेशन से उनकी बाहर की आँख में रोशनी लाने का प्रयास किया—और उन्होंने अपने सत्योपदेश से मेरी भीतर की आँख में प्रकाश कराया वास्तव में मेरे जीवन का यह एक अद्भुत और अविस्मरणीय संस्मरण है। ब्रह्मचारी जी में आत्मविश्वास और दृढ़संकल्प यह दो महान् गुण थे जिन्होंने उन्हें इस परमपद पर पहुंचाया। मैं प्रभु से इस निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रार्थना करता हूँ कि वह हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेने की शक्ति दे। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर ब्रह्मचारी जी के परमशिष्य श्री पं० आर्यभिक्षु जी ने बीस सहस्र मुद्राओं से एक ट्रस्ट बनाने की घोषणा की जिसके ब्याज से उनके गुरुदेव की स्मृति में निरन्तर वेदप्रचार होता रहे। इस ट्रस्ट का उद्घाटन श्री डा० राम ने करते हुए लोगों को इस आदर्श गुरुभक्ति से प्रेरणा लेने की अपील की। इसका नाम ब्र० अखिलानन्द स्मारक आर्यभिक्षु ट्रस्ट होगा। इसकी संचालिका जीवन पर्यन्त श्री लीलावती गुप्ता रहेंगी। उनके पश्चात सार्वदेशिक सभा के परामर्श से ट्रस्टीगण इसके ब्याज का सदुपयोग वेद प्रचार में करेंगे।

'जबतक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभीतक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।'

जब सब विद्वान एकसा उपदेश करें तो एकमत होने में कुछ भी विलम्ब न हो।'

—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजऋषि श्रद्धानन्द

—भगवान देव शर्मा—

भारतवर्ष की वर्तमान राजधानी दिल्ली के प्रसिद्ध चाँदनी चौक (जहां पहले घण्टाघर था) पर आज से ४५ वर्ष पूर्व ३० नवम्बर सन् १९१९ ई० को स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिकों का एक विशाल जन समूह आगे बढ़ने की कोशिश में था। अंग्रेज सरकार ने उस जलूस को रोकने के लिए गोरा पल्टन को संगीनों के साथ वहां खड़ा किया। और उन्हें आदेश दिया गया कि—"जो आगे बढ़े, उसे गोली का शिकार बना दिया जाए।"

गोरा पल्टन के संगीनें उठाने पर स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाहियों का जलूस रुक गया। किसी को आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। इतने में जन समूह को चीरते हुए, एक भगवा वस्त्रधारी, विशालकाय, तेजस्वी आंखों वाले संन्यासी वहां आ पहुंचे। अंगरख के बटन खोलते हुए उस विशाल देह वाले संन्यासी ने जोर से गर्जना करते हुए गोरा पल्टन को ललकारा—"चलाओ गोली!" संन्यासी की गर्जना क्या थी मानों शेर गर्जा। जैसे जगल में शेर की गर्जना से छोटे बड़े जानवर अपनी जान बचा कर भाग जाते हैं, वैसा ही हाल उस दिन चान्दनी चौक पर खड़े गोरा सिपाहियों का था। सबने संन्यासी की गर्जना होते ही संगीनें झुका दीं—मार्ग साफ हो गया। जलूस शान के साथ आगे अपने मंजले मक़सूद की ओर बढ़ा।

यह वही अमर शहीद संन्यासी श्रद्धानन्द थे जिसने खिलाफत आन्दोलन में मुसलमानोंकी इतनी सेवा की कि वे (मुसलमान) उनके गले का हार बन गये। दिल्ली की जग प्रसिद्ध जामा मस्जिद का वह दरवाजा जो शहनशाह आलमगीर के निमाज पढ़ने आने के समय खोला जाता था—उसी दरवाजे से संन्यासी श्रद्धानन्द की सवारी दिल्ली के जुमा मस्जिद में धूमधाम से ले गए। और जिस व्याख्यान मंच पर आज तक कोई गैर मुस्लिम व्याख्यान नहीं दे सका—उसी पवित्र मंच से सन्यासी श्रद्धानन्द ने "हिन्दू-मुस्लिम" एकता को मजबूत करने की अपील की थी।

स्वार्थ पूरा हो जाने पर जब मुसलमानों को देश के शासन विभाग में सुरक्षित सीटें मिल गई तो फिर वे अंग्रेजों की जेब में जा बैठे। यह देखकर संन्यासी श्रद्धानन्द को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने "शुद्धि" का आन्दोलन चलाया और वह इसलिए कि वे देख चुके थे कि अपना सर्वस्व देकर भी हिन्दू तब तक मुसलमानों को भारतीय नहीं बना सकता जब तक कि उनके हृदय में भारतीय संस्कृति और देश का प्रेम न हो, इसलिये नो मुस्लिमों को जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय ही थे—शुद्धि करके भारतीय बनाये रखने के लिए उन्होंने आन्दोलन शुरू किया था। गांधी जी संन्यासी श्रद्धानन्द जी की दूरदर्शिता को अन्त तक न समझ पाये क्योंकि गांधी जी "सन्त" थे। और संन्यासी श्रद्धानन्द "राज-नीतिज्ञ सन्त" थे जो शठ की शठता की लाठी भी तोड़ना जानते थे और निहत्था करके उसे सीधा करना भी। वे हमेशा राष्ट्र के सामने आने वाली मुसीबतों को पहले से ही जान लेते थे और उसके निवारणार्थ कोई न कोई हल निकाल कर उसे कार्य रूप में परिणित कर दिखाते थे। तभी तो अमर शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने संन्यासी श्रद्धानन्द की शहादत पर अपने दैनिक पत्र "प्रताप" (कानपुर) के अग्रलेख में उन्हें "राज-ऋषि" कहकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

गांधी जी ने संन्यासी श्रद्धानन्द के चलाये गये "शुद्धि-आन्दोलन" का विरोध किया। वे समझते थे कि इससे दंगे फसाद हो जाएंगे। छोटे-मोटे उन दंगों को रोका गया परन्तु उस वृत्ति ने आगे चलकर एक ऐसा भयंकर रूप धारण कर लिया जिससे १९४७ में भारतवर्ष का विभाजन हुआ। लाखों इन्सान मारे गये। अरबों की सम्पत्ति लूटी और नष्ट कर दी गई। मातृशक्ति की असमत लूटी गई, और हिन्दू-मुसलमान हमेशा के लिए एक दूसरे से अलग हो गये और नफरत करने लगे। इतिहासकारों का मत है कि "तैमूर तथा नादिरशाह जैसे अत्याचारी मुसलमान बादशाहों ने अत्याचार किये, उनमें कुल मिला कर तीस हजार से अधिक हिन्दुओं का वध नहीं किया गया। परन्तु पाकिस्तान बनने पर लाखों इन्सान मारे गये, यदि शुद्धि आन्दोलन चलने दिया जाता तो करोड़ों मुसलमान भारत के भक्त रहते और भारत अखण्ड रहता।

आज भी मुसलमान भारत को अपना देश नहीं मानते और अरब की ओर पांव करके सोना पाप समझते हैं। इस समय भी 'अल्ला हो अकबर' 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे भारत भूमि पर लगाए जाते हैं। भारत सरकार की मदद से चलने वाली मुस्लिम शिक्षा संस्थाओं में देश द्रोह के षड़यन्त्र रचे जाते हैं। यदि सन् १९२४-२५ के शुद्धि आन्दोलन में आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द का साथ दिया जाता तो भारत का इतिहास आज कुछ और होता।

वैदिक धर्म के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द मानव मात्र से प्रेम करते थे। इतना होते हुए भी वे राष्ट्र विरोधी तत्वों को कभी सहन नहीं करते थे। राष्ट्र वादी हिन्दू मुस्लिम उनकी दृष्टि में एक से प्यारे थे। कुछ समय पूर्व मुझे वीरम गांव (सौराष्ट्र) जाने का मौका मिला। वहां अचानक एक वृद्ध मुस्लिम भाई करीम खां जिनकी उम्र ८८ वर्ष है और वीरमगांव की एक सिनेमा के मालिक हैं, उनसे भेंट हो गई। मैं आर्य समाजी हूं, यह जानकर वे बड़े प्रसन्न हुए। मैंने सेठ करीम खां से पूछा—खान साहब ! आप आर्यसमाजी को मिल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर इतने खुश क्यों होते हैं ? खान साहब ने कहा—"भाई साहब ! मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी से बहुत बार मिला। उनके जीवन का मुझ पर काफी प्रभाव है। उनके ब्रह्मचर्य व्रत से बहुत प्रभावित हूं। मैं भी उनके पद चिन्हों पर चलने की कोशिश करता हूं। यही कारण है कि ८८ वर्ष की आयु में भी मैं पूर्ण स्वस्थ हूं और आप उस मेरे पथ-प्रदर्शक संन्यासी के अनुयायी हैं इसलिए मुझे आपसे मिलकर खुशी हो रही है।"

आपने बताया कि मैंने उस देव पुरुष को सर्व प्रथम इलाहाबाद में पं० जवाहर लाल नेहरू के पिता पं० मोती लाल नेहरू के साथ देखा था। उन दिनों "गौ हत्या बन्दी" के बारे में बातचीत चलती थी, मैं भी वहां था। मुझे स्वामी जी के वे शब्द आज भी याद हैं जो उन्होंने कहे थे कि :—

"गौ घास खाकर हिन्दू मुसलमानों को समान रूप में अमृत रूपी दूध देती है। इसलिए हिन्दू मुसलमानों को मिलकर गौ रक्षा आन्दोलन चलाना चाहिए। बहुत से लोग गाय का दूध सारा अपने स्वार्थ के लिये ले लेते हैं इससे उसके बछड़े (सन्तान) को पूरी मात्रा में दूध नहीं मिल पाता जिसके कारण वह कमजोर हो जाता है। यदि गौ के बछड़े को पूरी मात्रा में माता का दूध पिलाया जाए तो वह अधिक समय तक सुन्दर रूप में मददगार हो सकता है।"

करीम सेठ ने कहा—"उसके बाद भी दिल्ली में मैं उनसे कई बार मिला। जब कभी मैं उनके पास जाता वे मुझे कुछ न कुछ खिलाए बिना नहीं छोड़ते" उन्होंने बताया "मैंने अपने घर में उनकी सुन्दर तसवीर मढ़ा कर लगाई हुई है जिससे मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है। उन्होंने अन्दर कमरे में लेजाकर लगाई हुई स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य तसवीर भी दिखाई।

हिन्दू मुसलमानों के शुभ इच्छुक ; सबका हित चाहने वाले देवपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द ; जिसने मुसलमानों का भला करने में कोई कसर बाकी न रखी, उसको एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने जिज्ञासु के वेष में सन् १९२६ ता० २३ दिसम्बर को गोली मार कर उनके खून से होली खेली और आर्य समाज की शहीदी माला में एक और सुन्दर एवं श्रेष्ठ पुष्प जोड़ दिया। उसकी शहादत रूपी सुगन्धि से हर साल २३ दिसम्बर को देशवासी प्रेरणा प्राप्त करके उनके बताए गये मार्ग पर चलकर उनके अधूरे रहे कार्य को पूरा करें यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शहीद को कवि ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए ठीक ही लिखा है :—

याद आती है हमें, वह तीन गोली की सलामी।
याद आती हैं हमें, इतिहास है जिसका न सानी॥
तू अमर पथ का पथिक था, है अमर तेरी कहानी।
हो गया बलि देश पर अब, अमिट है तेरी निशानी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म के नाम पर.........................

—सत्यपाल शास्त्री—

नई दिल्ली, १८ नवम्बर। राजधानी के दो प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों के कार्यालयों पर आज दोपहर एक बालयोगी के अनुयायियों की एक क्रुद्ध भीड़ ने हमला कर दिया, इमारत के शीशे, फर्नीचर आदि तोड़ डाले और कार्यालय के अन्दर घुसकर कर्मचारियों से मारपीट की।

मारपीट में घायल २० से अधिक कर्मचारियों को अस्पताल में भरती कराया गया है। इनमें एक चौकीदार सहित ४ व्यक्तियों की हालत नाजुक है। भीड़ के पथराव से कई पुलिस अधिकारी भी घायल हुए हैं।

हिंसा और तोड़-फोड़ पर उतारू भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पहले पुलिस ने लाठी चार्ज किया। इस पर भी जब भीड़ तितर-बितर नहीं हुई तो अश्रुगैस के गोले छोड़े गए। भीड़ ने अखबार के कर्मचारियों और पुलिस से जमकर मोर्चा लिया। उस पर काबू पाने के लिए लगभग आधे घंटे में अश्रुगैस के ५- गोले छोड़े गए। एक पुलिस मैन मर गया।

भीड़ हिन्दी दैनिक 'नवभारत टाइम्स' में एक बालयोगी के विरुद्ध तथा-कथित 'आपत्तिजनक' वक्तव्य के प्रकाशन का बदला लेने आई थी। भीड़ 'फूँक दो नवभारत अखबार' के नारे लगा रही थी। इस बालयोगी की उम्र लगभग १४ वर्ष है और वह देहरादून के एक पब्लिक स्कूल का छात्र है। उसका दावा है कि भगवान् राम और कृष्ण में भी कमी थी, पर वह 'पूर्ण अवतार' है।

बालयोगी के अनुयायियों के विरोध प्रदर्शन का यह तीसरा अवसर था। इससे पूर्व भी दो बार वे ऐसा प्रयत्न कर चुके हैं और बदला लेने की धमकी दे गए थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज दोपहर बाद लगभग १२ बजे करीब ६००-७०० अनुयायियों की भीड़ जिसमें प्रदर्शन पट्ट लिए महिलाएं भी थीं, टाइम्स आफ इण्डिया और नवभारत टाइम्स के कार्यालय के बाहर एकत्र होकर नारे लगाने लगी। कुछ लोगों ने कार्यालय के अन्दर घुसकर सम्पादकों से मिलने का प्रयास किया। उनकी मांग थी कि सम्पादक और संवाददाता उस प्रकाशित वक्तव्य के लिए सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगें। एक वरिष्ठ उप-सम्पादक ने उन्हें समझाया कि समाचार-पत्र अनुयायियों के विचार भी प्रकाशित कर चुका है और इसलिए क्षमा मांगने का सवाल नहीं उठता। लेकिन प्रदर्शनकारी भीड़ अपनी मांग पर अड़ी रही। उसने क्षमा मांगने के लिए सम्पादक को १० मिनट का समय दिया। लेकिन इससे पहले ही पथराव करने लगी और उसने कार्यालय में घुसकर कर्मचारियों से मारपीट शुरू कर दी। पथराव से इमारत के शीशे, खिड़कियाँ, दरवाजे आदि टूट गए और बहुत-सा फर्नीचर नष्ट हो गया। कुछ उग्र लोगों ने इमारत को आग लगाने की असफल चेष्टा की।

पुलिस ने भीड़ को हटाने के लिए चेतावनी दी, जिसे अनसुना कर दिया गया। इस पर हल्का लाठी चार्ज करना पड़ा, पर भीड़ पर उसका कोई असर नहीं हुआ। अन्त में अश्रुगैस का सहारा लेना पड़ा।

भीड़ के पथराव से टाइम्स आफ इण्डिया के चौकीदार राम बहादुर सहित ४ व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हो जाए। अन्य १६ व्यक्तियों को भी इलाज के लिए अस्पताल में भरती किया गया है।

अश्रुगैस के कारण सारे बहादुर शाह जफर मार्ग पर विषैला धुँआ फैल गया और अखबार व आसपास की इमारतों में बैठे रहना असम्भव हो गया। आसपास कुछ और इमारतों को भी पथराव से क्षति पहुँची है।

हिंसा, दंगा करने, हत्या के प्रयास, सरकारी कर्मचारियों पर हमला करने उन्हें घायल करने और धमकी देने के मुकदमें दर्ज कर पुलिस ने १७ अनुयायियों को गिरफ्तार कर लिया है।

खत्म करने की धमकियां

रात को नवभारत टाइम्स के समाचार सम्पादक को टेलीफोन पर धमकी दी गई कि अभी कुछ नहीं हुआ है। सबको खत्म कर दिया जाएगा।

यह समाचार १९ नवम्बर, १९७१ के दैनिक हिन्दुस्तान से उद्धृत किया गया है। जब कोई धर्म और भगवान् का उपहास करता है, तब धर्म प्रेमी जनता तिलमिला उठती है, लेकिन यदि धर्म प्रेम के नाम पर इसी प्रकार की घटनाएं दोहराई जानी हैं तो धर्म और भगवान् का उपहास रुकेगा नहीं, बढ़ेगा। आर्य-समाज के तपोवन नेता महात्मा आनन्द स्वामी जी की यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चेतावनी सही सिद्ध हो गई है कि योग के नाम पर धूर्तों ने दूकानें खोल रखी हैं। ऊपर जिस बालयोगी की चर्चा है, उसके बारे में पिछले दिनों राजधानी में इस आशय के विज्ञापन प्रकाशित हो चुके हैं कि यह बालक योग का क, ख, ग, तक नहीं जानता। इसके बावजूद लाखों अन्धविश्वासी लोग इसके अनुयायी हैं। यह व्यक्ति अपने आपको हंस जी महाराज का उत्तराधिकारी बताता है। हंस जी के बारे में वास्तविकता यह है कि उन्होंने एक व्यक्ति की हत्या की और पुलिस के दण्ड भय से बचने के लिए साधु बन गये। पहले वह हंसा कहलाते थे, गेरुए वस्त्र पहनते ही हंस जी महाराज हो गये। उनका कहना था कि "मुझ पर प्रभु की कृपा हुई । यह कृपा हरेक पर नहीं होती है।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती मूर्ति पूजा और अवतार वाद के घोर विरोधी थे तो केवल इसलिए नहीं कि उनका आग्रह निराकार भगवान् की पूजा पर था, अपितु इसलिए भी कि वे इन दोनों बुराइयों को भारत की दुर्दशा का मूल कारण मानते थे। वे इन बुराइयों के खण्डन को प्राथमिकता देते थे—यहाँ तक कि इस कार्य के मुकाबले में वह राजनैतिक कार्यों को भी गौण मानते थे। प्रखर राष्ट्रवादी और स्वराज्य के मन्त्र दाता होने के बावजूद उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश धार्मिक अन्धविश्वास दूर करने में लगाया तो इसीलिए कि वे अपनी दूरदृष्टि से देख रहे थे कि राजनैतिक उन्नति के बावजूद हम आगे न बढ़ सकेंगे—यदि हमारे पैरों में धार्मिक अन्धविश्वास की शृंखलाएँ पड़ी होंगी। वह गुरुडम के कट्टर विरोधी थे। आज गुरुडम नये-नये रूपों प्रकट हो रहा है। भगवती जागरण, में आनन्दमार्गी हंसा देश, निरंकारी मिशन जय गुरुदेव, महेश योगी, हरेकृष्ण आन्दोलन, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त—ये कुछ नमूने हैं इस बात के कि किस प्रकार भोली भाली जनता को ठगा जाता है। भगवती जागरण वालों ने तो हद ही कर दी है। भारत साधु समाज के मूर्धन्य नेता स्वामी गुरुचरण दास ने एक बार यह रहस्योदघाटन करके जनता को स्तब्ध कर दिया था कि भगवती जागरण में भेंटें चढ़ाने वाले प्रायः शराबी होते हैं और शराब पीकर भगवती जागरण में आते हैं। वैसे भी जब किसी भगवती जागरण वाले से जागरण का वास्तविक कारण पूछा जाता है तो यह रहस्य खुलता है कि हेरा फेरी की सजा से बचने के लिए यह ढोंग रचा जाता है अर्थात् भगवान् को खुल्लम-खुल्ला रिशवत पेश की जाती है। हजारों रुपये बखेरे जाते हैं। हिसाब मांगने वाले नास्तिक और अधर्मी ठहराये जाते हैं। आधुनिकता के प्रकाश से दूर अन्धकार मार्ग के ये पथिक रात दिन भटकते हैं, लेकिन समझते हैं कि वे कल्याणमार्ग के पथिक हैं। यूरोप में धर्म के नाम पर हत्याएं हुई तो जनता को धर्म से घृणा हो गई। अपने यहाँ भी ये ढकोसले चलते रहे तो लोग धर्म से विमुख हो जायेंगे। खेद की बात है कि ऐसे आयोजनों को सरकारी प्रश्रय भी मिल जाता है। ये लोग चापलूसी करके मेयर, मुख्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्यकारी पार्षद आदि को अपने आयोजनों में बुलाने में सफल हो जाते हैं। इन राजनैतिक नेताओं का इन ढकोसलों पर विश्वास नहीं होता, फिर भी ये इन समारोहों में आ जाते हैं ताकि कोई नाराज़ न हो। यह सस्ती लोकप्रियता देश को बहुत महंगी पड़ती है।

भगवान् के दर्शनों के नाम पर लोगों को बुद्धू बनाने वालों की हमारे देश में कोई कमी नहीं। वस्तुतः भगवान् के दर्शन करने के लिए तो कठिन तपस्या करनी पड़ती है, जो दुनियादारों के बस का रोग नहीं। इसलिए ये लोग मूर्तियों और गुरुओं के आगे माथा रगड़-रगड़ कर ही सन्तुष्ट हो लेते हैं। भगवान् के दर्शन यम-नियमों के पालन से ही सम्भव हैं, लेकिन ये गुरु, लोग सस्ते टोटकों से ही भगवान के दर्शन कराने का दम भरते हैं। महेश योगी तो वातानुकूलित कमरों में ध्यान की शिक्षा देते हैं और किसी प्रकार के संयम को आवश्यक नहीं मानते। भावातीत ध्यान की नई-न्यारी घड़ी है। किसी को समझ में ही नहीं आता कि आखिर ये लोग कहना क्या चाहते हैं? जनता इतनी भोली है कि इन्हें महर्षि मानने लगती है। ये 'गुरु' इतने अहंकारी होते हैं कि अपने को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं—अपने से कहीं योग्यतर महापुरुषों से अपनी तुलना करके अपने को उनसे महान् बताते हैं। बाल योगी का दावा तो आप ऊपर पढ़ ही चुके हैं कि वह अपने आपको राम और कृष्ण से भी बड़ा मानते हैं। महेश योगी ने भी एक बार अपने कथन को स्वामी विवेकानंद के कथन से अधिक ग्राह्य बताया था। स्वामी विवेकानन्द सच्चे साधक और तपस्वी थे। वह कहा करते थे कि मैंने दुनिया देखी है, लेकिन दुनियां भर में यदि कुल मिलाकर मुझे बीस योगियों के भी दर्शन हुए होते समझो कि बहुत हुए। स्वामी विवेकानन्द का विशिष्ट जीवन-दर्शन था। एक दृष्टि से वह महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर ही चले। महेश योगी जैसा बाजारू व्यक्ति उनके कथन की तुलना में अपने कथन को श्रेष्ठ बताये, यह उपहास नहीं तो और क्या है। हम यह बात काफी सोच-समझकर लिख रहे हैं। कारण यह कि महेश योगी पेशेवर व्यक्ति हैं। विमानों पर सैर-सपाटा। विदेशी पत्रों में आत्म-प्रशंसा परक लम्बे-चौड़े विज्ञापन, यह योगियों का काम नहीं।

किस-किस की चर्चा की जाए—

नश्तर को हाथ में ले, फ़स्साद ने कहा,
रग-रग में ज़ख्म है, लगाऊँ कहां-कहां?

पाठक अभिप्राय समझें और थोड़े लिखे को बहुत जानकर पाखंडियों से बचें। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

आज की स्थिति में, जब अंग्रेजी का वर्चस्व और प्रभुत्व बढ़ता ही जा रहा है, हिन्दी के लिए अलख जगाने वाले तपोघन नेता राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की याद आना स्वाभाविक है। हिन्दी की खातिर टंडन जी ने महात्मा गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे शीर्वस्थ नेताओं से टक्कर ली। वह हिन्दी के पीछे पागल थे। उनका जीवन हिन्दी के लिए था।

लेकिन हिन्दी-प्रेम उनके जीवन का केवल एक पहलू था। उनके जीवन के अनेक अन्य उज्जवल पहलू भी हैं। देश प्रेम उनकी रग-रग में समाया हुआ था। सादगी की वह मूर्ति थे। भोगप्रधान संस्कृति के वह कट्टर विरोधी थे। उच्चतम लोगों में वह श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते थे। नेहरू जी ने एक बार कथा था कि—"जब मैं युवक था और राष्ट्रीय क्षेत्र में नया-यया आया था, तब टंडन जी से डरा करता था कि कहीं किसी गलती पर नाराज न हो जायें। टंडन जी उन थोड़े-से लोगों में से थे। जो नेहरू जी को "जवाहर" कहकर पुकारने की स्थिति में थे। उन्हें राष्ट्र से भरपूर सम्मान मिला। काँग्रेस के अध्यक्ष रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तो वह प्राण ही थे। जीवन के अन्तिम दिनों में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने बड़े पैमाने पर उनका अभिनन्दन किया और तत्कालीन राष्ट्रपति डा॰ राजेन्द्र प्रसाद के हाथों उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करवाया। १९६२ में वह हमसे वियुक्त हुए। 'जनज्ञान' उनकी स्मृति में श्रद्धा के प्रसून अर्पित करता हूं।

[चित्र सामने के पृष्ठ पर]

मुफ्त "साहित्य प्रचारक" मगाएं

मासिक पुस्तकालयों को केवल डाक व्ययार्थ साठ पैसे का धनादेश प्राप्त होने पर वर्ष भर मुफ्त भेजा जायगा। विज्ञापन का उत्तम साधन है। पन्डित जयदेव ब्रादर्स एण्ड कम्पनी आत्माराम मार्ग कारेलीबाग बड़ौदा—१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

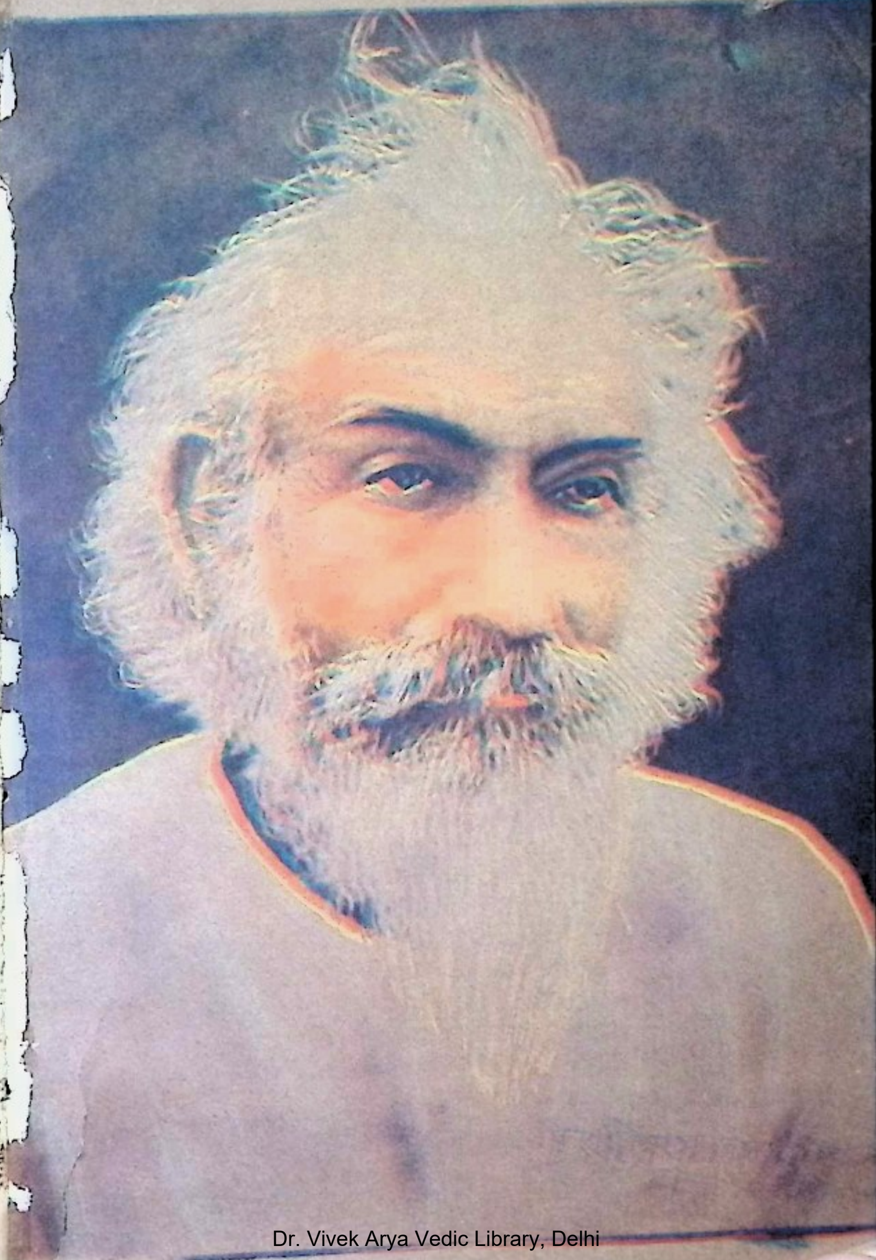

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन

बाल-ब्रह्मचारी अखिलानंदजी महाराज

महात्मा आर्यभिक्षुजी, मुगलसराय

आर्य समाज अपनी जिन विभूतियों पर गर्व कर सकता है उनमें से एक थे स्वनामधन्य श्री ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी। जिसने एक बार भी उनका सत्संग कर लिया वह पवित्र हो गया। मनुष्य निर्माण की उनमें अद्भुत क्षमता थी। ऐसी वीतराग अनुपम विभूति की पावन स्मृति में 'जन-ज्ञान नतमस्तक है—

—सम्पादक

उत्तर-प्रदेश में जौनपुर जनपद के अन्तर्गत पवित्र गोमती तट स्थित पटखौली ग्राम में पाठक-ब्राह्मणकुल में पं० बाबूराम जी पाठक के गृह में पहली अगस्त सन् १८८४ ई० में आपका जन्म हुआ था। आपके एक ज्येष्ठ भ्राता श्री महानन्द जी पाठक थे। ये संन्यासी हो गये थे। आपके पितामह पं० रामकुबेर जी अपने जनपद के प्रसिद्ध विद्वान् और समाजसेवी थे। उनके सुपुत्र पं० बाबूराम जी पाठक भारद्वाज-गोत्रीय माध्यनन्दिन शाखीय यजुर्वेदी ब्राह्मण थे। वेद के प्रति आप में अपूर्व निष्ठा एवं श्रद्धा थी। आपके संरक्षण में ही बालक रामानन्द (ब्रह्मचारी जी का बचपन का नाम) का पालन पोषण तथा अध्ययन-कार्य चलता रहा। आप कक्षा पांच उत्तीर्ण करने के पश्चात् मिडिल-स्कूल में पढ़ने गये। वर्ष के मध्य में ही एकाएक पढ़ने से मन उचट गया, और आप घर से भूसावल को चल पड़े। वहां उन दिनों रेलवे इंजनों की मरम्मत का सुप्रसिद्ध कारखाना था। उसके मिस्त्रियों से आप मिले और बात-बात में ही आपकी प्रतिभा का पता उन कर्मचारियों के माध्यम से अंग्रेज फोरमैन को मिल गया। उसने आपको कारखाने में अच्छा वेतन देकर कार्य पर रख लिया, कुछ समय वहाँ रहे। किन्तु वहां भी मन नहीं लगा और "हम ब्राह्मण बालक हैं, हमारा कार्य पठन-पाठन का है" ऐसा कहकर उन्होंने कार्य छोड़ दिया, और विरक्त भाव से अजमेर पहुंचे।

अजमेर के सच्चे साधुओं की खोज में आबूरोड़ आये। वहाँ से कानपुर पहुँचकर आर्य-समाज मंदिर में पहुँचकर आर्य-समाज मन्दिर में ठहरे। उन दिनों वहाँ पूज्यपाद स्वामी पूर्णानन्द जी की "भारतीय-विद्यालय" नाम की संस्था चल रही थी, जिसमें बच्चों को निःशुल्क संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था थी। आप वहीं रहकर पढ़ने लगे। स्मरण रहे कि इसी भारतीय-विद्यालय कानपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में ब्र० अखिलानन्द का प्रथम सम्पर्क पूज्य पं० श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु से हुआ, जो उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता गया, और यह सगे भाईयों जैसा सम्बन्ध जीवन के अन्तिम क्षणों तक चलता रहा। कुछ वर्षों के बाद पूज्य स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज अपने विद्यार्थियों को लेकर हरदुआगंज (अलीगढ़, उत्तर-प्रदेश) पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के पास पहुँचे। वहाँ कई वर्ष तक ब्रह्मचारी जी स्वामी सर्वदानन्द जी के संरक्षण तथा नेतृत्व में रहे। इन दिनों आपके साथ पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, पं० सुरेन्द्र शर्मा, राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री तथा पं० शंकरदेव जी थे। कुछ दिनों पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने विद्यालय वन्द कर दिया अतः स्वामी पूर्णानन्द जी अपने प्रियतम शिष्य अखिलानन्द को साथ लेकर भ्रमण निमित्त चल पड़े।

स्वामी पूर्णानन्दजी ब्रह्मचारी जी की वेद के प्रति असीम आस्था को देख कर इन्हें वेदप्रकाश और साधारणतया प्रकाश-प्रकाश कहकर पुकारते थे। भ्रमण के सन्दर्भ में अपने पूज्य गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज के साथ ब्रह्मचारी जी शाहपुरा पहुंचे। वहां के जंगलों में वर्षों गुरुदेव के साथ रहे। स्वामी पूर्णानन्द जी उन दिनों खड़े ही रहा करते थे। निद्रा के स्थान पर पेड़ के सहारे कभी-कभी अंगड़ाई ले लेते थे। इन दोनों के भोजन की व्यवस्था शाहपुराधीश श्री नाहरसिंह ने कर रखी थी। अरण्य में एक दिन घनघोर वर्षा हो रही थी, रात्रि का मध्यकाल था। निरन्तर हृदय विदारक परम डरावनी शेर की दहाड़ सुनाई दे रही थी। गुरुदेव ने बड़े स्नेहभाव से कहा— "प्रकाश ऐसी दशा में परोक्ष-शक्ति की अनुभूति होती है।"

सन् १६१८ ई० में पूज्यपाद गुरुदेव को छोड़कर उनसे अन्तिम विदा लेकर आप काशी पहुँचे, और यहाँ आर्य-समाज तथा काशी सेवा-समिति के माध्यम से सामाजिक कार्यों में जुट पड़े। इसी वर्ष के अन्त में सिंगरौली (मिर्जापुर) में अकाल पड़ा। वहाँ काशी-सेवा-समिति द्वारा संचालित सहायता समिति के संयोजक होकर कई कार्यकर्त्ताओं के साथ ब्रह्मचारी जी अन्न तथा औषधि वितरणार्थ पहुंचे।

सन १६१६ ई० में अंग्रेजी सरकार द्वारा जरायम पेशा कानून बना, जिसके अन्तर्गत दलित दुःखित और पिछड़े हिन्दू समाज के सदस्यों—डोम, भंगी, धरकार इत्यादि को ईसाई बनाने का कुचक्र जोरों पर चल पड़ा। सन् १६१८ ई० में आर्य समाज काशी ने इसके विरुद्ध ब्रह्मचारी जी के नेतृत्व में संघर्ष समिति गठित की, जिसके सक्रिय सदस्य श्री ब्रह्मदत्त और श्री चुन्नीलाल थे। इस समिति के सुप्रयास स्वरूप सैकड़ों की संख्या में हिन्दू नर-नारी पुलिस के छक्के से छूटकर विधर्मी होने से बच गये।

सन् १६१६ ई० में आप कांग्रेस में प्रविष्ट हुए। आपने नेपाली खपड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काशी में आर्य-छात्रावास की स्थापना की। वहीं विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाना तथा उनमें देशभक्ति की भावना भरना आपका मुख्य कार्य था। आपके विशिष्ट शिष्यों में मार्कण्डेय, परमानन्द तथा चन्द्रशेखर आजाद थे। ये विद्यार्थी आपसे संस्कृत पढ़ते थे। सन् १९१९ ई० में रौलट एक्ट के विरुद्ध इस छात्रावास के विद्यार्थियों में विशेष सक्रियता दीख पड़ी। इसके फलस्वरूप यह संस्था सरकार की कोप-भाजन बन गई। सन् १९२१ में जब कांग्रेस के अधिकांश नेता असहयोग आन्दोलन कार्यक्रम के अन्तर्गत कारागारों में बन्दी बनाकर भेज दिये गये थे, उन दिनों काशी में काँग्रेस की गतिविधि का संचालन ब्रह्मचारी जी ही कर रहे थे। सन् १९२३ ई० में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इसका सबसे प्रमुख कार्यक्षेत्र मथुरा जनपद में भाँट तहसील अन्तर्गत मलकानों की शुद्धि थी, जिसके सर्वाधिकारी (इन्चार्ज) ब्रह्मचारी जी ही थे। आपके साथ आपकी सहायता में पं० इन्द्र वर्मा, श्री आत्माराम भजनीक तथा डा० सूर्यदेव शर्मा थे। इसके अतिरिक्त गुड़गाँव तथा रोहतक में भी आपने शुद्धि का कार्य चलाया, जिसमें हजारों मुसलमान वैदिक धर्म में दीक्षित हुए।

सन् १९३० ई० के मध्य में झरिया के सुप्रसिद्ध सेठ हरदेव जी काशी आये, और अत्यन्त आग्रह करके ब्रह्मचारी जी को अपने साथ झरिया ले गये। वहां मृत्यु-पर्यन्त आप साधना में उपस्थित रहे।

ब्रह्मचारी ने अनेकों शास्त्रार्थ किये, और जीवन भर आर्य-समाज के स्वतन्त्र उपदेशक रहकर कार्य करते रहे। ये बनारस रहने पर आर्य-समाज काशी के प्रधान भी रहे। काशी के विद्वानों में आपका बड़ा आदर था। ब्रह्मचारी जी सदाचार की मूर्ति, परम तपस्वी और पूर्ण ब्रह्मचारी थे। वाल्मीकि-रामायण और महाभारत के अधिकारी विद्वान थे। वाल्मीकि-रामायण की अभूतपूर्व टीका आर्य-संसार को उनकी प्रमुखतम देन है।

उपनिषदों के आप सफल कथावाचक तथा निर्भ्रान्त व्याख्याता थे। उनका किसी से वैर-भाव न था, अपितु सबके प्रति सहज स्वाभाविक प्रेम था। आपके दिव्य-जीवन, शुद्ध वात्सल्य-स्नेह के फलस्वरूप आज सहस्रों की संख्या में नर-नारी उपस्थित हैं। पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री पं० गंगाधर जी शास्त्री (पटना) पं० आत्मानन्द जी (दिल्ली) तथा पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक इनमें प्रमुख हैं। आप काशी प्रवास-काल में गुरुकुल देवरिया का पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के साथ बहुत समय तक संचालन करते रहे। वर्षों आप वहां के आचार्य भी रहे। आपके साथ पं० इन्द्रदेव जी कार्य करते रहे, जो अब भी इस गुरुकुल का सफल संचालन कर रहे हैं। आप पूज्य स्वामी त्यागानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् सुप्रसिद्ध गुरुकुल अयोध्या के जीवन-पर्यन्त कुलपति बने रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपने अनेक-स्थानों पर बड़े-बड़े यज्ञ करवाये। मृत्यु से लगभग तीन वर्ष पूर्व बिहार प्रदेश में 'पलामू' जनपद के अन्तर्गत 'गढ़वा नगर' में एक अभूतपूर्व चतुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ, जो चौदह दिनों तक प्रातः-सायं दोनों समय चलता रहा। आप उस यज्ञ के ब्रह्मा थे। आपके साथ सहयोग में पं० विद्यानन्द जी (वाराणसी), पं० आर्यभिक्षु जी (मुगलसराय), पं० सत्यदेव जी शास्त्री (वाराणसी) इत्यादि विद्वान् उपस्थित रहे। निरंतर चौदह दिनों तक वेद पर आपका मधुर उपदेश यज्ञ के पश्चात् चलता रहा। इस आयोजन का संपूर्ण व्यय धर्मनिष्ठ कर्मठ आर्य-परिवार श्री लक्ष्मी प्रसाद गौरीशंकर जी द्वारा हुआ। सहस्रों की संख्या में जनता प्रतिदिन समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से इस महायज्ञ में सम्मिलित होने प्रातः काल ही पहुँच जाती थी। झरिया प्रवासकाल में अपने स्थान पर आप अनेक विद्यार्थियों को संस्कृत की शिक्षा दिया करते थे। धनबाद डी. ए. वी. स्कूल में नियमित रूप से प्रत्येक शनिवार को विद्यार्थियों के मध्य में आपका उपदेश जीवन-पर्यन्त चलता रहा। उस जनपद के समस्त धर्मप्रेमी परिवारों में आपकी अपूर्व विद्वता तथा पवित्रता की धाक थी। लोग आपको गुरुजी कहकर संबोधित करते थे।

आर्य-संसार से बाहर भी आपका समान आदर और प्रभाव था। अयोध्या के अद्वैतवाद मंडल में आप प्रतिवर्ष जाते रहे, और आपकी मधुर वेद कथा से सम्पूर्ण साधु-मंडल गद्गद हो जाता था। आपका शरीर स्वस्थ, सुडौल तथा पराक्रमी था।

स्वर्गवास से कुछ वर्ष पूर्व आपकी आंखों में काला मोतियाबिंद उतर आया था। पकने पर उसका आप्रेशन तो पूर्ण सफल हो गया, परन्तु आरम्भ काल से नैत्यिक अति व्यायामप्रेमी का व्यायाम छूट गया (डाक्टर ने व्यायाम का निषेध कर दिया था)। इससे आपका स्वास्थ्य ऐसा लड़खड़ा गया कि वह पुनः ठीक नहीं हुआ।

आपका जीवन निस्पृह और विचार उदारतम था। मत-मतान्तरों की संकीर्ण तथा अनुदार भावना से आप बहुत ऊंचे थे। इसी कारण अन्य मतावलम्बी— मुसलमान, सिख, ईसाई इत्यादि भी आपको श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे। दिनांक १९ अक्टूबर, १९६९ ई० को १० बजे प्रातःकाल आपका झरिया स्थित आनन्द-भवन में स्वर्गवास हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाईबल में ईश्वर का स्वरूप

—श्री पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

हमारे ईसाई भाई यह दावा करते हैं कि बाईबल ईश्वरप्रदत्त धर्म ग्रन्थ है जिसके दो भाग हैं । पुराना धर्म शास्त्र और नया धर्म शास्त्र इस लेख में हम संक्षेप से यह बाईबल के प्रमाणिक अनुवादों के आधार पर दिखाना चाहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान माने जाने वाली इस बाईबल में ईश्वर का क्या स्वरूप बताया गया है । पहले हम पुराने धर्म शास्त्र के निम्नलिखित कुछ वाक्यों को भारत-लंका बाइबल समिति महात्मागांधी मार्ग बंगलौर १ द्वारा प्रकाशित हिन्दी अनुवाद के साथ निष्पक्ष प्राप्त विचारशील सब सज्जनों के सन्मुख प्रस्तुत करते हैं ताकि वे स्वयम् किसी उचित परिणाम पर पहुँच सकें ।

(१) उत्पत्ति की पुस्तक अ० २

यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सेना का बनाना समाप्त हो गया । २ और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था, सातवें दिन समाप्त किया उसने सातवें दिन अपने काम से विश्राम लिया ।

(२) आदम और हव्वा ने अंजीर के पत्ते जोड़ २ कर लंगोट बना लिया । ८ तब य होवा परमेश्वर जो दिन के ठन्डे समय में बाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया । तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गये । (पृ. ४)

(३) उसी अध्याय में आगे लिखा है ।

"फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हममें से एक के समान हो गया है इस लिये अब ऐसा न हो कि वह जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे ।

तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया ।

(४) उत्पत्ति की पुस्तकों के अध्याय ६ में लिखा है कि और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछतावा और मन में अति खेदित हुआ ।

७ तब यहोबा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सबको मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ पुराना धर्म शास्त्र पृ० ८ अंग्रेजी बाईबल में इत्यादि शब्द हैं ।

इसी "उत्पत्ति की पुस्तक" के अ० ११ में लिखा है—"सारी पृथ्वी पर भी एक भाषा और एक ही बोली थी । जब लोग नगर और गुम्मद बनाने लगे, तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूँ कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा।

इस लिये आओ हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डाले कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।

इस प्रकार यहोवा ने उनको वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। (पुराना धर्म शास्त्र पृ० १४)

उत्पत्ति की पुस्तक अ० १८, ७–६ में लिखा है—

१ इब्राहिम मभ्रे के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया।

३ इब्राहीम ने दण्डवत की और कहने लगा' हे प्रभो ! यदि मुझपर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ कि अपने दास के पास से चले न जाना।

७ फिर इब्राहीम गाय, बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया और उसने फुर्ती से उसे पकाया।

८ तब उसने मक्खन और दूध और बछड़ा "जो उसने पकवाया था, लेकर उनके (जिसमें यहोवा और २ पुरुष थे) आगे परोस दिया और वे खाने लगे।" (उत्पत्ति की पुस्तक अ० १८, पृ० २२) निर्गमन की पुस्तक के अध्याय १२ में यहोवा परमेश्वर ने मूसा को कहा।

१२ 'उस रात को मैं मिश्र देश के बीच में होकर जाऊँगा और मिश्र देश के क्या मनुष्य, क्या पशु सबके पहिलौठों को मारूँगा और मिश्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूँगा, मैं तो यहोवा हूँ।

१३ और जिस घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिह्न ठहरेगा अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुमको छोड़ आऊंगा और जब मैं मिश्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होंगे।" इत्यादि (निर्गमन अ० १२ पुराना धर्म शास्त्र पृ० ६६)

निर्गमन की पुस्तक अ० १२, २६ में लिखा है कि "और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिश्र देश में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर गड़हे में हुए नघुए तब सब के पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला।

निर्गमन की पुस्तक अ० २०, ५ में यहोवा परमेश्वर अपने विषय में मूसा को कहा है कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ और जो मुझसे वैर रखते हैं उनके बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ। "(निर्गमन अ० २०, ५)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अंग्रेजी बाईबल में इत्यादि शब्द हैं।

अन्य भी सैंकड़ों उद्धरण दिये जा सकते हैं किन्तु निष्पक्ष विचारशील लोगों के लिये इतने ही पर्याप्त हैं जिनसे स्पष्ट पता लगता है कि बाईबल का ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान न्यायकारी और दयालु नहीं अपितु वह आकाश में सिंहासन पर बैठा रहता है, वह वहां से उतर कर आता है बाग में घूमता है, उससे मनुष्य अपने को छिपा सकते हैं, वह नहीं चाहता कि मनुष्यों को सच्चा ज्ञान हो और उनकी एक भाषा हो। वह बड़ा ईर्ष्यालु है जो मनुष्यों की भाषाओं में भी गड़बड़ डाल देता है। वह गाय के कोमल बछड़े का भी मांस खाता है उसे पश्चाताप या पछतावा होता है। वह लोहू के चिह्न के बिना मिश्र देशवासियों को औरों से पहचान नहीं सकता वह दयालु और न्यायकारी नहीं बल्कि इतना क्रूर है कि मिश्र वासियों के छोटे-छोटे बच्चों को भी बिना किसी अपराध के मार डालता है वह अपने मुख से कहता है कि मैं तेरा परमेश्वर बड़ी जलन रखने वाला हूँ। विचारशील पाठकों को क्या यह प्रश्न करने का अधिकार नहीं कि क्या ईश्वरीय वाक्य माने जाने वाले ग्रन्थ में ईश्वर का ऐसा असंगत वा बेहूदा बुद्धि तथा विज्ञान विरुद्ध स्वरूप पाया जाना उचित है ? क्या ईश्वर के अंदर भी साधारण मनुष्य की तरह-थकावट के कारण आराम की जरूरत पश्चाताप, ईर्ष्या वा जलन, पक्षपात, क्रूरता, बछड़े का मांस खाना, लोहू की निशानी के बिना भेद न कर सकना इत्यादि बातें मानी जा सकती हैं ? क्या कोई भी निष्पक्षपात बुद्धिमान् ईश्वर के ऐसे भद्दे स्वरूप को स्वीकार कर सकता है ? हम अपने यहूदी ईसाई तथा अन्य भाइयों से सप्रेम निवेदन करते हैं कि वे निष्पक्षपात होकर इस पर विचार करें और सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहें। कहां तो

'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥' (यजु० ४०-८)
स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु (यजु० ३२-८)

इत्यादि मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर का सच्चा मुक्तियुक्त स्वरूप जिसे महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर इन सरल शब्दों में वर्णित किया कि 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर. अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है और कहां यह बाईबल प्रोक्त ईश्वर का स्वरूप।

इनमें जितना आकाश पाताल का अन्तर है यह बुद्धिमान् स्वयं विचारें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अनूप सिंह

"धर्मान्तरण बनाम राष्ट्रान्तरण"

धर्म और राष्ट्रीयता का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्म के बदलने से राष्ट्रीयता बदल जाती है और राष्ट्रीयता के बदलने से धर्म बदल जाता है। आजकल राष्ट्रवादी संगठनों की ओर से विदेशी ईसाई पादरियों को राष्ट्र से अविलम्ब निकालने की जो मांग की जाती है उसका मूल कारण यह है कि ये लोग अपढ़ भोली भाली जनता को धन का प्रलोभन देकर उसका धर्म परिवर्तन कराने में जुटे हुए हैं।

प्रातःस्मरणीय भारतमाता के वीर सपूत 'वीर सावकर' ने धर्म परिवर्तन के खतरे की ओर संकेत करते हुए लिखा था—"सावधान ! हिन्दुओं के बारे में यह कहा जाता है कि हिन्दू सहिष्णु हैं। किन्तु याद रखिए यह भावना दूसरों ने फैलाई है। हिन्दुओं का वास्तविक इतिहास अगर आप देखेंगे तो आपको यह प्रतीत होगा कि हिन्दू सहिष्णु हैं और असहिष्णु भी। न्याय के साथ हिन्दुओं ने हमेशा सहिष्णुता का व्यवहार किया है और अन्याय के साथ असहिष्णुता का। अतः हिन्दुओं को धोखे में न आना चाहिए। सहिष्णुता को सद्गुण समझकर अपने बड़प्पन की रक्षा करने में धर्म तथा राष्ट्र का घात हमें न करना चाहिए। हिन्दू सहिष्णु है यह भावना फैलाकर हिन्दुओं को औषधि, शिक्षा, आर्थिक सहायता देकर उन्हें बड़ी योजना के साथ धर्मान्तरित किया जा रहा है...भारत में भी ईसाइयों ने अपना भारी जाल फैला दिया है। इस अवस्था में हिन्दू महासभा, आर्यसमाज आदि हिन्दू समाज की रक्षा करने वाली सारी संस्थाओं को यह घोषित करना चाहिए कि आगामी ५ वर्षों में इस महान संकट से भारतवर्ष को मुक्त करेंगे, किसी रूप में क्यों न हो, ईसाइयों से सम्बन्ध का विच्छेद करना चाहिए। इतना ही नहीं उनका बहिष्कार किया जाना चाहिए।"

एक हिन्दू जैसे ही ईसाइयत को ग्रहण करता है तो उसकी निष्ठा इस पवित्र देश की परम्पराओं और रीति-रिवाजों से उठ जाती है। इस देश के महापुरुष 'राम' और 'कृष्ण' से उसका प्यार न रहकर 'ईसा' के साथ उसका नाता जुड़ जाता है जिसका संसार में आने का उद्देश्य ही आन्तरिक विघटन और अशान्ति पैदा करने का था। देखिये ! मत्ती रचित इंजिल में "ईसा" के आने का उद्देश्य लिखा है—"यह न समझो मैं पृथ्वी पर शान्ति देने आया हूं। मैं शान्ति नहीं तलवार देने आया हूँ। मैं मनुष्य को अपने पिता के विरुद्ध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रौर पुत्री को श्रपनी माता के विरुद्ध और बहू को श्रपनी सास के विरुद्ध खड़ा करने श्राया हूँ।" (मत्ती अ० १० श्रा० ३४, ३५) गार्गी, मत्रयी श्रौर सीता आदि देवियों से वह (हिन्दू जिसने ईसाइयत ग्रहण करली है) प्यार न कर कुमारी मरियम श्रौर 'लेडी फातिमा' से प्यार करने लगता है। वेद उपनिषद् श्रादि ग्रन्थों में जिनमें सदाचार श्रौर नैतिकता की ऊंची शिक्षाएं दी गई हैं वह उनको न पढ़कर बाइबिल को पढ़ने लगता है जो विज्ञान श्रौर तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं। बाइबिल पढ़कर 'डीन फेरर' ने इसके विषय में लिखा था—"बाइबल एक जंगली किताब है जिसको जंगली युग में जंगली मनुष्यों के लिए लिखा गया था।"

भारत सरकार को विदेशी पादरियों द्वारा संचालित समस्त स्कूल व कालेजों को श्रपने श्रधिकार में ले लेना चाहिए। ये स्कूल व कालेज भारतीय संस्कृति श्रौर एकता के विरुद्ध प्रचार करते हैं। उदाहरणार्थ—श्रार्य इस देशके मूल निवासी नहीं हैं वे बाहर से इस देश में श्राक्रान्ता के रूप में श्राए थे, श्रार्य श्रौर द्रविड़ दो भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं। वेद गड़रियों के गीत हैं। ईसाइयत एक मात्र सच्चा धर्म है, शेष सब धर्म झूठे हैं।

आजकल देश की श्रखंडता, स्वतन्त्रता, संस्कृति श्रौर धर्म को सबसे बड़ा खतरा इन विदेशी पादरियों से ही है। देश की एकता की जड़ों में ये लोग मठ्ठा डाल रहे हैं। हमारा नारा है—

"विदेशी पादरियों को भगाश्रो,
भारत देश को बचाओ।"

हमारी सरकार को इस नारे के श्रनुसार श्राचरण कर विदेशी पादरियों को श्रविलम्ब भारत छोड़ने का आदेश जारी करना चाहिए।

"अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ मिथ्या भाषण, कपट, पाखण्ड श्रर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन श्रौर विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान-पान वस्त्र, श्राभूषण, यान, स्थान, मान प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है, श्रन्याय से शत्रुश्रों को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है जैसे जड़ कटा वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे श्रधर्मी नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।"

महर्षि दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियाँ

१.	श्री हरिश्चन्द्र खन्ना कानपुर	११११-००
२.	„ नरेन्द्र नाथ सूरी कानपुर	१००१-००
३.	„ ईश्वर सिंह नैटाल	१०००.००
४.	„ पं. आर नारायन पारामारीबो	३५.६०
५.	„ गुप्तदान दिल्ली	५०.००
६.	„ बंशी लाल शोलापुर	२१.००
७.	„ रूपचन्द लालचन्द गोघरा	६२.००
८.	„ लक्ष्मण प्रसाद छपरा	१८.००
९.	„ श्री मती चन्द्र कान्ता नागपुर	२५०.००
१०.	„ परशुराम कोटा	२.७०
११.	„ शिवजी राम वहल मन्डी	३.००
१२.	„ शिवरतन दास सरदारनगर	३.००
१३.	„ मती कौशल्या देवी कलकत्ता	२१.००
१४.	„ पूरा लाल आर्य माकडौन	२.५०
१५.	„ आत्मा राम माकडौन	२.५०
१६.	„ कृष्णमुरारी लाल मुगमा	१५.००
१७.	„ मोहनदास जालना	२०.००
१८.	„ रामस्वरुप गोयल जयपुर	७.००
१९.	„ विश्वामित्र दिल्ली	२०.००
२०.	„ गम्भीर राई लामा	३.००
२१.	„ मती वीरांवाली चंडीगढ़	३०.००
२२.	„ पी. के. केजरीवाल धनबाद	२०.००
२३.	„ रवि मित्तल जालन्धर	२१.००
२४.	„ केशव लाल सिरोही	१५.००
२५.	„ मती यशोदा देवी जी अमृतसर	५१.००
२६.	„ मती शांती देवी जी दिल्ली	५०.००
२७.	„ प्रकाश ट्रेडिंग कं. मद्रास	५१.००
२८.	, मती कमल जुनेजा,बंबई	५१.००
१९.	„ लक्षमण प्रसाद जी छपरा	२५.००
३०.	„ जी वंबई	२५.००
३१.	„ सन्तलाल जी हिसार	२५.००
३२.	„ सुशील कुमार जी शिवपुरी विदेश-प्रसार हेतु	२०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११) की आहुति देने वालों की सूचि

१. कु.सरिता आर्य दिल्ली । २. डा.विजय कुमार भुवारना । ३. श्रीचौबिस राम चन्द्र वंशी जर्वे । ४. श्री भगवान दास अम्बाला । ५. वैद्य श्री गुरुदत्त दिल्ली । ६. श्री एम गंगाराम निजामाबाद ७. श्रीमती फूलमती सहारनपुर ८. श्री जगदीश चन्द्र आंतरी । ९. श्री पूरन चन्द्र आगरा । १०.श्री शेषराम भुवारना । ११. श्री मंसाराम गुप्ता निजामाबाद । १२. श्री देऊमल बालचन्द गांधी धाम । १३. श्रीमती बालारानी बुढ़ाना १४. श्री ललिता चिद्री कराड़ । १५. श्री गुरुजी हसनपुर । १६. श्री जगदीश प्रसाद अजय कुमार भिवानी । १७. श्री डा. यशपाल रतनगढ़ । १८. श्री सत्यपाल इंचोली । १९. श्रीमती चम्पा देवी कलकत्ता । २०. आर्य समाज पूंजला । २१. श्री हरिदास नारायन औरगांबाद । २२. श्री लल्लूशाह आसनसोल । २३. आर्य थानसिंह भाटी पाली ।

१०) की आहुति देने वालों की सूचि

१. श्रीमती संतोष कुमारी दिल्ली । २. श्री प्रकाश चन्द्र तोमर नादौन । ३. श्रीमती सावित्री चौधरी ४. श्री हरिश्चन्द्र जींद । ५. श्री आर्य समाज मुरैना ६. श्री जगन्नाथ गुप्त बाँसी । ७. श्री मगन लाल देव भरुच । ८. श्री धर्मदास विकासपुर । ९. श्री हरिशचन्द्र वकील श्री गंगानगर । १०. श्री सुगन चन्द बन्सल मुजफ्फरनगर । ११. श्री शिवरतनसिंह कौंच १२. श्री रोहित-लाल गुप्त कलकत्ता । १३. श्री कन्हैयालाल गोरखपुर । १४. कमल कृष्ण बम्बई १५. श्री लालमन जी दिल्ली । १६. श्री त्रिभुवन नाथ दिल्ली । १७. श्रीमती आज्ञावती अमृतसर १८. श्री ब्रह्मदेव कोटद्वार । १९. श्री लखन लाल जर्वे । २०. श्री रामचरण पाटिल वेंडिया । २१. श्री राम प्रसाद शर्मा जबलपुर । २२. श्री जगत नारायण अमृतसर । २३. मक्खन लाल कोटद्वार । २४. श्री रामसरन मैंसूर । २५. श्री विमला देवी समराँए । २६. देवकी नन्दनसिंह मुहम्मदपुर २७. श्री रामरतन लाल लखाबर । २८. श्री व्ही. एच. शिवानी सिरोही । २९. श्री जयन्ती लाल ठाकोर लाल भरुच । ३०. श्री एन. बी. कार्की विजनवारी । ३१. श्री पदमदेव जी शिमला । ३२. श्री अमर नाथ वर्मा अमरोहा । ३३. श्री मानसिंह शिकोहाबाद । ३४. श्रीमती कौशल्या ग्रोवर जबलपुर । ३५. श्री लक्ष्मी प्रसाद आर्य बरेली । ३६. श्री रामपाल सिंह इस्लामपुर । ३७. श्री रुद्रदत्त शुक्ल कानपुर । ३८. श्री शिवनाथ सिंह नहटार ३९. श्री समालिया प्रसाद लखीमपुर ४०. चौ० भवंर सिह चांदपुर । ४१. श्री हरिसिंह आर्य पुरा । ४२. श्रीएम. जी. पाटिल खरगौन ४३. श्री धर्मपाल शर्मा पिरसालुही ४४. श्री गिरधारी लाल ग्वा-लियर ४५. श्रीमती मायावती जयपुर । ४६. श्री खैराती लाल अजवानी सम्बल-पुर ४७. श्री तपस्वीराम नरकटियागंज । ४८. श्री इन्द्रसेन मलिक जालन्धर ४९. श्री ओमप्रकाश गुहना । ५०. श्री शिवमोहन सिंह फुरसतगंज । ५१. ला० तुलसीदास उज्जैन ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५) की आहुति देने वालों की सूचि

१. श्री देवराज जी दिल्ली। २. श्री धीरसिंह नांगल कलां। ३. श्री इन्द्रप्रसाद गुप्ता दिल्ली। ४. श्री मती सुशीला मेहता दिल्ली। ५. श्री सु. ब. काले परली वैजनाथ। ६. श्रीमती विमला एस काले परली वैजनाथ। ७. श्रीमती कमला देवी मेरठ। ८. श्री लक्ष्मणदास सेठी दिल्ली। ९. श्रीसत्यप्रकाश सुखेजा सोनीपत। १०. श्री जयन्ती लाल झाड़ेश्वर। ११. श्री भोला राम सहारनपुर। १२. श्री ललिता चिद्री कराड़। १३. श्री सोहन लाल गौड़ जमशेदपुर। १४. श्री प्रताप बहादुर सिंह तम्बौर। १५. श्री उषा गुप्ता मेरठ। १६. श्री शिवकुमार जी। १७. श्री राम लखन बाढ़। १८. श्री डा० हरिराम समस्तीपुर १९. श्री जसु भाई पटेल अहमदाबाद। २०. श्री सुरजमल बैजनाथ कलकत्ता २१. श्री मुकेश आर्य समस्तीपुर। २२. श्री जौशी राम एडवोकेट धर्मशाला २३. श्री के वैल्यूघम मद्रास। २४. श्री सत्यनरायण सुल्तानपुर। २५. श्रीमतीविद्यावती सब्बरवाल कलकत्ता। २६. श्रीअर्जुनलाल मिरजानहाट। २७. श्रीचरणदास ओमप्रकाश पटियाला २८. श्रीरामचन्द्र बुधवार बहराइच २९. श्री छितरमल काजडा ३०. श्री तेजराम पांडे हुगली। ३१. श्री रामचन्द्र शाक्य जगदलपुर ३२. श्री नन्दलाल बख्शी ज्वालापुर ३३. श्री चन्दनसिंह कोटद्वार ३४. श्री एम.सी. गुप्ता नागल। ३५. श्रीदौलत राम जालन्धर। ३६. श्री अमरनाथ अमरोहा। ३७. श्री स्वा० योगानन्द छपरौली। ३८. श्री रामलुभाया लुधियाना ३९. श्री शिवनन्दन प्रसाद रजौली। ४०. श्री ली. डाया लाल जैतपुर। ४१. श्री जुगतराम छेरकापुर ४२. श्री राम भरोसेसिह ग्वालियर ४४. श्री तीर्थ राम गुप्त दिल्ली। ४५. श्री जे. पी. सिंह खापरखेड़ा। ४६. श्री तेजबहादुर सिंह कानपुर। ४७. श्री झगरु कानपुर। ४८. श्री सूरज प्रसाद हम्मीरपुर। ४९. श्री चन्द्र प्रकाश आर्य बक्सर। ५०. श्री मुन्शी राम शर्मा झज्जर। ५१. श्री पी. राजगोपाल मान्डला। ५२. श्री रामकिशन रमेशचन्द्र सरैयागंज। ५३. श्री नारायण भाई बावला। ५४. श्री नन्दलाल वैंकट लाल परलीवैजनाथ। ५५. श्री कुंजला आर्य सिरसौद। ५६. श्री वीरभान सिंह आर्य कुचेसर। ५७. श्री हेतराम आर्य अलवर। ५८. श्री प्रकाश देवी जाखलमन्डी। ५९. श्री इन्द्रदत्त अमृतसर। ६०. श्री जे. एन. विग अमृतसर। ६१. श्री बाबूराम आर्य यमुनानगर। ६२. श्री अशोक कुमार चन्देल फतेहगढ़ ६३. श्री सदाशिव मिश्र कानपुर। ६४. श्री जनक लाल खिदरपुर। ६५. श्री रामनाथ पाहवा उज्जैन। ६६. श्री मती शान्ति देवी नगीना। ६७. श्री चुन्नी लाल परशादी लाल कांठ। ६८. श्री दिग्गज सिंह चिमना ६९. श्री रामस्वरूप सेवाराम शामली। ७०. श्री युगल किशोर आर्य भैरमपुर। ७१. श्री स्त्री आर्य समाज बिजनौर। ७२. श्री गोविन्द राम कोटद्वार। ७३. श्री सत्यपाल जबलपुर। ७४. श्री धर्मदास आनन्द प्रकाश अम्बहटा। ७५. श्री सत्य प्रसाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवरिया। ७६. श्री सुखलाल शर्मा परवेज नगर। ७७. श्री क्षेमपाल सिंह परवेज नगर। ७८. श्री कर्म चन्द यमुना नगर। ७९. श्री राधा कृष्ण राठी जावला। ८०. श्री प्रतापसिंह राठौर चोंतड़ा। ८१. श्री रेवा शंकर आर्य करनूल। ८२. श्री सूर्य प्रकाश जयपुर। ८३. मेसर्स कंसारा नाथ लाल विसनगर। ८४. श्री रूपराम वहादराबाद। ८५. श्रीमती एस. एस. मूडे चन्द्रपुर। ८६, श्री हरि कृष्ण लाल ओबराय आगरा। ८७. श्री एल एन, बुढेरा दिल्ली। ८८. श्री अमर नाथ पाहवा उज्जैन। ८९. श्री रंजन प्रसाद आर्य धमनी बाजार। ९०: श्री बी. पी. गुप्त डालमियाँ नगर। ९१. श्री सन्त प्रसाद सिंह टन्डवा। ९२. श्री अजीत सिंह ध्रुव गदपुरी। ९३. आर्य समाज मनियर। ९४- श्री इन्द्रसेन गुप्ता हरिहर गंज। ९४, श्री सूर्य प्रसाद लौरिया। ९५. श्री राम चन्द्र प्रसाद लौरिया। ९६. श्री राधा-कान्त द्विवेदी लौरिया। ९७. श्री आनन्द प्रकाश गुइन्डी। ९८. श्री राम स्वरूप पलटा फिरोजपुर। ९९. श्री श्यामलाल आहुजा दिल्ली। १००-श्री ओमप्रकाश गांधी दिल्ली। १०१. श्री भीमसेन आर्य अहमदपुर। १०२. श्री आर्य समाज नैनीताल। १०३. श्री मती सुमित्रा कन्सल नैनीताल। १०४. श्री देवेन्द्रसिंह जखैता। १०५. श्री राम कृष्ण कानपुर। १०६. श्री सकलदीप सिंह कानपुर। १०७. श्री मनीराम लश्कर। १०८. श्री जयचन्द खेमचन्द वम्बई। १०९. श्री छन्नू लाल आर्य तम्बूर ११०. श्री बाँके विहारी गुप्त नौबतपुर। १११. श्री रामसरन दास सम्बलपुर। ११२. श्री धर्नसिंह नन्दपाड़। १३. श्री पशु पति नाथ अरमापुर। ११४. श्री आर. जी. मेहता मणीनगर। ११५. श्री सभापति सिंह मारड़। ११६. श्री कान्ति प्रसाद अलीगढ़। ११७. श्री महेश दत्त श्री वास्तव अलीगढ़। ११८. श्री हुक्म सिंह आर्य दौराला। ११९. श्री शालीग्राम गुलमण्डी। १२०. श्री महादेव प्रसाद कटैयामाहे। १२१. श्री चौ० केवल राम लोहावट। १२२. श्री सत्यपाल सिंह इन्दौर। १२३. श्री हरेन्द्र शर्मा इन्दौर। १२४. श्री प्रहलाद राम पचेरिया बम्बई। १२५. श्री सी. के. रिटेल वम्बई। १२६. श्री नन्द किशोर प्रसाद सिंह कथौलिया। १२७. श्री सत्य-नारायण प्रसाद बड़ी गुलनी। १२८. श्री रतन लाल अल्हेर जागीर। १२९. श्री उत्तम सिंह गंगाराम अहमदाबाद। १३०. श्री उर्मिला रानी पांचीजाटान। ३१. श्री यमुना प्रसाद जमशेदपुर। १३२. श्री सुन्दर दास वत्रा जवलपुर। १३३. श्री संगम लाल बूधीपुर। १३४. श्री उत्तम मुनि विद्यानगर। १३५. श्री आर्य समाज उभानी। १३६. श्री श्याम लाल कानपुर। १३७. श्री अमरसिंह सुमेरपुर। १३८. श्री के. सी. टैगोर लालरु मंडी। १३९. श्री चन्द्र भूषण इटारसी। १४०. श्री हरिश्चन्द्र श्री वास्तव गांधी नगर। १४१. श्री देव प्रसाद रायपुर। १४२. श्री विश्वा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मित्रं श्री गंगानगर। १४३. श्री डा० पाटीदार अंजड़। १४४. श्री आर्य साहित्य सदन अमरपुर। १४५. श्री एन. एन. साहू कानपुर। १४६. श्री किशोरी चौ० पथरगामा। १४७. श्री राम लखन पंडित भागलपुर। १४८. श्री डी. पी. मालवीय नागपुर।

२) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री गम्भीर राई कालिम्पोंग। २. श्री रामकिशन परली वैजनाथ। ३. श्रीमती कमला देवी मेरठ। ४. श्री वसन्तीधर भल्ला सोनीपत। ५. श्री सदाशिव मिश्र कानपुर। ६. श्री ओमप्रकाश सोहसराय। ७. श्री श्याम-मोहन गुहा नीमच। ८. श्री विश्वनाथ हापुड़। ९. लक्ष्मीचन्द विजयकुमार बंगलौर। १०. श्री जोशी औरंगाबाद। ११. श्री चंपकलाल दुर्लभ भावनगर। १२. श्री मुन्नी लाल निवांशहर। १३.श्री एन. शंकर राव। १४. श्री भक्तराम सिंघवावेंट। १५. श्र मोहनलाल शर्मा फिरोजपुर। १६. श्री रामकृष्ण साहू पांटमें।१ ७. श्रीविश्वनाथदत्त इलाहाबाद। १८. श्रीरमानाथ कक्कड़। १९. श्री विनोद पुरवार मिर्जापुर। २०. श्री कोमल प्रकाश बारसन। २१. श्री कल्याण तिवारी कानपुर। २२ श्री भीमराम शिवगंज। २३. श्री भेराराम जी शिव-गंज। २४. श्री मांगीलाल डाया जी शिवगंज। २५. श्री मंगाराम ओरा जी। २६. श्री मांगीलाल जवान जी शिवगंज। २७. श्री किशनलाल बनवारी लाल जी। २८. श्री श्यामलाल रमेशचन्द्र सुमेरपुर। २९. श्री धानी छोंगांराम सुमेरपुर। ३०. श्री लक्ष्मी नारायण आर्य गिलौला। ३१. श्री जगदीश प्रसाद श्यामलाल सिसौली। ३२. श्री लक्ष्मण पूरी रवौड़। ३३. श्री केदार नाथ जी मोदीनगर। ३४. श्री हीरालाल शिवहरे अमौली। ३५. श्री धर्म शिरोमणी नगला हरीराम ३६. श्री देवीचरण आर्य बारा दौलतपुर। ३७. श्री इन्द्र सिंह सोलंकी इन्दौर। ३८. श्री जयपाल सिंह बौली। ३९. श्री रामलाल सौनी आमला। ४०. श्री पारस प्रसाद लौरिया। ४१. श्री बाबू मथुरा प्रसाद सहसवान। ४२. श्री हृदय स्वरूप जबलपुर। ४३. रामनाथ नूरपुर। ४४. श्री बिजयपाल सिंह धनौरा। ४५. श्री व्यास नारायण बारगांव। ४६. श्री कालिका प्रसाद कानपुर। ४७. श्री शिवनरेश बबेरु। ४८. श्री रामराज कानपुर। ४९. श्री बीरबल इन्दौरा। ५०. श्री ईश्वर कुमार इन्दौरा। ५१. श्री बाबूराम इन्दौरा ५२. श्री मोती सिंह इन्दौरा। ५३. श्री विश्वनाथ प्रसाद मीरगंज ५४. श्री हरस्वरूप सिंह पामदापुर। ५५. श्री मनोहर सिंह गिरजापुर। ५६. श्री लोकनाथ परेव। ५७. श्री यमुनेश्वर प्रसाद सिंह मकेर। ५८. श्री श्री गनेशी लाल पसवारा। ५९. श्री आ रा साहू गुरुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१) देने वाले महानुभाव

१. श्री सच्चिदानन्द भागीबन्दर। २. श्री वेदव्रत आर्य कंधार। ३. श्री विक्रम आर्य कंधार। ४. श्री विश्वजीत आर्य कंधार। ५. श्री महेन्द्र आर्य कन्धार ६. श्री शुभ लक्ष्मी आर्या कन्धार। ७. श्री छोटे सिंह परवेज नगर। ८. श्री मुंशी जलसिंह परवेज नगर। ९. श्री बाबूराम परवेज नगर। १०. श्री उमाकान्त उपाध्याय बागहा। ११. श्री सत्यबीर सिंह कोटा। १२. श्री के. एल. दुग्गल दिल्ली। १३. श्री रामस्वरूप सैनी इन्दौरा। १४. श्री उद्धम सिंह इन्दौरा। १५. श्री विष्णु शर्मा भागलपुर। १६. श्री रामप्यारे भगत पौड़ैयाहाट। १७. ब्रजलाल इटारसी। १८. श्री डा० पवन कुमार कांटाबांजी।

सभी दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद। —संपादक

सत्यार्थ-प्रकाश प्रकाशन निधि में

उदारता पूर्वक

अधिक से अधिक सहायता भेजिए

दयानन्द संस्थान
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग,
नई दिल्ली-५

—भारतेन्द्र नाथ
संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या

- सत्यार्थ-प्रकाश आप का ग्रन्थ है ?
- आप को इस ग्रंथ पर श्रद्धा है ।

और क्या

आप इस का प्रचार और
प्रसार घर-घर में चाहते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में हो तो—

अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिए

●

यदि गीता प्रेस गोरखपुर सस्ती सुन्दर गीता लाखों छाप सकता है तो हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी सत्यार्थ-प्रकाश क्यों नहीं छाप सकते ।

●

हम इसे बहुत सस्ता और सुन्दर देना चाहते हैं—
अतः उदारतापूर्वक

सत्यार्थ-प्रकाश-प्रकाशन निधि में अपनी आहुति अधिक से अधिक आज ही भेजिए

आपका जितना अधिक सहयोग मिलेगा
सत्यार्थ-प्रकाश उतना ही सस्ता और आकर्षक
छपता जाएगा

संचालक—**दयानन्द संस्थान,** नई दिल्ली

मुद्रक—प्रकाशक—सम्पादक श्रीमती राकेश रानी द्वारा
चन्द्रमोहन शास्त्री के प्रबन्ध से सैनी प्रिण्टर्स, देहली—६ में छपा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं जीतूंगा—

मेरे हाथों में तलवार नहीं है—
मुझे ज्ञात है
फिर भी विश्व विजय के सपने
देख रहा हूं।
तुम सोचोगे, अणु के युग में,
कैसे सारे आयुधबल को जीतूंगा मैं,
कैसे सोना चाँदी—हीरे मोती,
सब की चकाचौंध से बच कर,
अपने को मैं बचा सकूंगा ?
मेरी अपनी स्थिति भी क्या है,
एकाकी हूं।
किन्तु नहीं असहाय, समझ ले सारी दुनियां।
मेरे साथ सदा रहता मेरा रखवाला,
मेरा प्रहरी वह है जिसने सारी
दुनियां अपने हाथ बनायी।
प्रलय और निर्माण भृकुटि में जिस की रहता
उस के बल पर मैं रहता हूं,
मैं कहता हूं विजय वरूंगा,
सत्य, धर्म का बल मेरा है,
और सदा जीता धरती पर सत्य अमर है।

सत्य और विश्वास प्रभु का,
कभी नहीं हारा है जग में,
कौन इन्हें कब हरा सका है,
तुम्हीं बता दो!

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाँटने के लिए दो अपूर्व ट्रैक्ट

Dayanand the Great | **An Introduction to the Arya Samaj**

दोनों ट्रैक्टों का मूल्य १०) सैकड़ा

जन–ज्ञान–प्रकाशन नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Metrical Translation of Two Vedic Hymns

BY B. B.

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

As a fruit droppeth
from a tree
after ripeness
to the core
so may I leave
this world
and not before !

O great God who grants
strength to the body
and fragrance
to the soul
deprive me not
of Thy sweet nector
till the Death
comes
softly, gently
to knock
at my door !

क्वस्यते रुद्र मृणया कुदस्तो यो अस्ति भेषनो जालाशः ।
अप भर्ता रपसो देवस्य, आत्रंनुमा वृशष चक्षमीथाः ॥

Where O Rudra
—the dispenser
of Justice –
Where is Thy merciful
and healing hand
that remedies
all ills
relieving us
of sin, suffering
and pain ?

Forgive me, O Lord,
my offences
against Thyself
and let me grasp
Thy loving hand
—the Giver of peace
and Bliss !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कुलभूषण आर्य

हमारा धर्म

धर्म के नाम पर बहुत बड़ी भ्रान्ति उत्पन्न हो गई है। आज जो उठता है एक नया धर्म खड़ा कर देता है और स्वयं को धर्मगुरु घोषित कर लोगों को अपनी तरफ आकृष्ट करता है। आज संसार में धर्मों की भीड़ लगी है और भिन्न-भिन्न धर्म मानव में द्वेष की भावना पैदा करने में अधिक सफल हुए हैं। मेरे भारत में ही कितने धर्म हैं, कोई मूर्ति पूजक है और कोई अवतारवाद का नारा लगा रहा है विदेशी धर्मों ने तो मानव का बहुत अधिक नुकसान किया है। आज धर्म के पीछे स्वार्थ की भावना छिपी है, बेकारी की आड़ में धर्मगुरु जनता को भ्रष्टाचार में डाल रहे हैं।

धर्म चलाना किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं है। धर्म आदि काल से चला आ रहा है और सृष्टि के अन्त तक रहेगा। प्रकृति में जिसका जैसा धर्म है उसका वैसा ही पालन हो रहा है। सूर्य का धर्म प्रकाश देना है जिससे हम सहमत हैं कि धर्म का पालन हो रहा है, आँख का धर्म देखना है और आँख सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक अपने धर्म में पूर्ण है। हम जिसको धारण करते हैं वह हमारा धर्म है। मानव धर्म, मानव के प्रति प्यार, दूसरों की उन्नति में सहायक होना और आत्म तत्वों का जानना, वेदों को पढ़ना और पढ़ाना और ज्ञान उपार्जन करना ही मानव धर्म है न कि कोई धर्म विशेष।

यदि हम संसार के एक धर्म की तुलना दूसरे धर्म से करें तो एक बड़ा आश्चर्य होता है। एक पिता के अमृत पुत्र अपने बनाये धर्मों के बहकावे में अपने निज भाइयों पर क्यों अन्याय कर रहे हैं। यहाँ हमें यह नहीं देखना कि ईसाई धर्म क्या करता रहा, मुसलिम धर्म क्या करता रहा या हिन्दू धर्म की जड़ें कहाँ तक मौजूद थीं इससे तो इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। हमें यहाँ इन सबका कारण जानना है कि यह धर्म क्या थे और हम इन धर्मों की छाया में आनन्द की नींद सोते रहे इसका विशेष कारण क्या था? आत्मा शरीर में आने और विकसित होने के धर्म को स्वाभाविक रूप में प्राप्त करता है परन्तु भाषा और ज्ञान साथ नहीं लाता, वह दूसरे से प्राप्त करता है जिनमें माता-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता, बहिन-भाई होते हैं और ज्ञान धर्म का अंग है । जिसको जैसा ज्ञान मिलेगा उसका आचार विचार और कर्म उसी अनुसार बनेगा। आपने जाना कि ज्ञान प्राप्ति ही मनुष्य का धर्म है। ज्ञान ही मनुष्य का धर्म है और ज्ञान द्वारा ही मनुष्य किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

आज यदि हम अपने देश और संसार से धर्म का रूप देखना चाहें तो वह हमें मन्दिरों, गिरजों और मसजिदों के अन्दर बन्द मिलेगा। हर मनुष्य धर्म की कमी को महसूस करता है और जानना चाहता है कि मेरे कामों का परिणाम क्या होगा और मुझे संसार में कैसे बरतना चाहिए ? इस अभाव की पूर्ति हर एक के लिए ज्ञान द्वारा सम्भव नहीं वह धर्म गुरुओं और प्रकृति पूजा के चक्कर में पड़ जाते हैं क्योंकि बिना ज्ञान के हम अपने धर्म को जान नहीं सकते ।

हम किसी धर्म विशेष की उपेक्षा नहीं करते। हम सब मानव हैं। जो मननशील है उसे ही मानव कहते है। हमें अपने विवेक से काम लेना चाहिए और जो आदि काल से सत् सनातन् वैदिक धर्म चला आ रहा है हम सब उसकी शरण में जायें। वैदिक धर्म व्याप्त है आप जानना चाहोगे ? वैदिक धर्म प्रभु के बनाये नियम महत् और सत् हैं। वेदों के स्वाध्याय से हम अपने स्वरूप का और प्रभु हमें मानव जीवन में क्या-क्या करने का उपदेश देते हैं का ज्ञान होता है उसी के अनुसार चलें क्योंकि हमारा श्रेष्ठ धर्म है।

आइये, हम अपने धर्म को जानें। जैसे प्रकृति का सृष्टि रचना करना धर्म है उसी प्रकार आत्माओं का शरीर धारण करना धर्म है। हम सुखों का भोग करते हुए अपने धर्म को न भूलें। हम सब परमपिता परमात्मा के अमृत पुत्र हैं चाहे वह संसार में भूमि के किसी भी भू-भाग पर रहा है। हमें संसार में सुख की वृद्धि करनी है न कि अस्त्र शस्त्रों की जिससे विनाश होता है। आत्मा मरती नहीं आत्मा को भोग जरूर भोगना है और शरीर धारण भी अवश्य करना है फिर हमारी मनोवृत्ति विनाश से हटकर संसार को सुखी बनाने में लगनी चाहिए ताकि पैदा किए हुये सुख का हम जन्म-जन्म में आनन्द उठा सकें।

आइये, आज विवेक पूर्वक सोचें और अपने निजी स्वार्थ को त्यागकर सत् सनातन् वैदिक धर्म की शरण लें ताकि हमें सुख की प्राप्ति हो और यही सच्चा मोक्ष है।

अधिक से अधिक 'सत्यार्थ-प्रकाश' बांट कर

"सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी" मनाइये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

—आलोक कुमार

समय का फेर

रात के सघन अन्धकार में हवा सांय-सांय चल रही थी। इस शान्ति को राजा के सिपाहियों ने भंग किया। 'पकड़ो-पकड़ो' कह कर चार सिपाही हाथ में नंगी तलवार लिये एक युवक को पकड़ने की विफल चेष्टा कर रहे थे। वह युवक भी धारीदार नीला पायजामा तथा सफेद कमीज पहने हुए हांफता हुआ वहुत तेजी से भगा चला जा रहा था।

अचानक युवक की कलाई सामने से आ रहे एक पुरुष ने थाम ली। "मुझे छोड़ दीजिये साहब। मैं गरीब आदमी हूँ। मेरी बूढ़ी मां हैं, राजा के सिपाही मुझे मार डालेंगे।" वह युवक गिड़गिड़ाने लगा। उस क्रूर पुरुष पर कोई असर न हुआ वह उसकी कलाई तव तक थामे रहा जब तक कि राज कर्मचारी करीव न आ गये। राज कर्मचारियों ने उस युवक के हाथ में जंजीरें डाल दीं। युवक ने पीछे मुड़ कर एक नजर क्रूर पुरुष पर डाली, राज कर्मचारी उसकी जंजीरों को बुरी तरह से खीचते हुए तथा गाली वकते हुए ले कर चल दिए।

'ठहरो' अचानक धीर गम्भीर वाणी में उस पुरुष ने दाहिने हाथ की तर्जनी उठाकर कहा और पूछा 'इस युवक को कहां लिये जा रहे हो ?' इधर अन्धकार में हीरे की अंगूठी के प्रकाश का झमाका हुआ तो उधर राज कर्मचारियों के दिमाग में धमाका हुआ। वे विस्मित होकर रह गए और हाथ जोड़कर कांपते हुए बोले 'महामन्त्री क्षमा करें, हमसे भूल हो गई जो हम आपको पहचान न सके।' महामन्त्री ने मुस्करा कर पूछा "इस युवक को कहां और क्यों लिये जा रहे हो ?" "महामन्त्री जी ! राजा ने इसको मृत्यु दण्ड दिया है। हम इसको जंगल में मारने के लिये ले जा रहे थे कि यह भाग खड़ा हुआ, आपने पुनः इसको पकड़ कर हमारे प्राणों की रक्षा की है। यदि आपकी आज्ञा हो तो हम अब राजा की आज्ञा पूरी करें।" एक सिपाही ने डरते हुए पूछा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महामन्त्री ने सरसरी निगाह से उस गरीब युवक को ऊपर से नीचे तक देखा और कहा 'नहीं' इसे मत मारो। सैनिक आश्चर्य से एक साथ बोल पड़े "क्या ?" 'हां' इसे वापस ले जाओ। राजा से मैं कल इस विषय में बात करूंगा। जाओ ..।"महामन्त्री की जय का नारा लगाते हुए सैनिक उस युवक को लेकर लौट पड़े।

दूसरे दिन प्रातः काल ज्यों ही महामन्त्री ने राज सभा में प्रवेश किया। राजा ने भृकुटी तिरछी करके क्रोध में भर के कहा 'मन्त्री ! क्या तुम यह बात स्पष्ट करोगे कि तुमने हमारी आज्ञा की अवहेलना क्यों की ? 'राजन् ! गुस्ताखी क्षमा करें। वास्तव में मैं स्वयं इस युवक को अपने हाथ से मारना चाहता था। कृपया आप इसे मुझे सौंप दें।' राजा ने एक क्षण सोचकर फिर मुस्कराकर वह युवक महामन्त्री को सौंपते हुए कहा 'वास्तव में तुम ही इसका बध करने योग्य हो। भविष्य में मैं कभी इसका मुंह न देखूं।'

इस घटना के दो वर्ष बाद जब एक दिन महामन्त्री ने राज सभा में प्रवेश किया तो राजा ने चिन्तित मुद्रा में एक पत्र महामन्त्री की ओर बढ़ाते हुए कहा "इस पत्र में पड़ोसी राजा ने कहा है हमारी आधीनता स्वीकार करो अन्यथा हम चढ़ाई कर देंगे। उत्तर कल शाम तक न पहुँचा तो अगले दिन सूर्य की पहली किरण निकलते ही वे हम पर चढ़ाई कर देंगे। उनकी शक्ति हमसे अधिक है।" राजा को मंत्री की सूझ बूझ पर पूरा भरोसा था। इसके बाद तुरन्त सभा समाप्त कर दी गई ताकि प्रत्येक राज कर्मचारी तथा मन्त्री इस बात पर सोच सकें कि अब हमें क्या करना चाहिये।

रात्रि के करीब बारह बजे एक हजार सैनिक वीर पोशाक में हथियारों से लैस होकर मंत्री के अहाते में आकर जमा हो गये। वहाँ पर महामन्त्री पांच आदमियों के साथ पहले ही विद्यमान था। मन्त्री ने चार अंग रक्षकों को हटाकर पांचवें आदमी को आगे कर कहा 'यह बीरू है जो कुछ महीने पहले ही सेना में दाखिल हुआ है। अब तक छुट्टी पर था। यही तुम्हारा नेतृत्व करेगा। फिर सबको सम्बोधित कर कहा 'मेरी योजना के अनुसार ही कार्य करना' चुपचाप जाना। जाओ मेरी शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं वे सभी शान्ति पूर्वक बाहर आए और अपनी मंजिल की ओर बढ़ चले। उन सबके आगे था उनका मार्ग दर्शक बीरू।

सीमा के निकट जाकर वे रुक गए, सामने ही शत्रु के खेमे थे, जिनमें प्रकाश हो रहा था। नेतृत्व कर्त्ता ने तुरन्त जान लिया कि राजा उसी खेमे में होगा, जिसके आगे चार सैनिक पहरा दे रहे हैं। "ज्यों ही चीखने की आवाज सुनो तुरन्त हमला कर देना।" यह निर्देश देकर बीरू अकेला भूमि पर रेंगते हुए राजा के खेमे की ओर चल दिया। खेमे से तीस पैंतीस फुट की दूरी पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक वृक्ष था। बीरू उसके पीछे छुप कर देखने लगा उसने देखा एक सैनिक उसकी तरफ ही लपका चला आ रहा है बीरू ने समझा कि वह देख लिया है। वह पेड़ के तने से चिपक गया। उसने अनुभव किया कि जैसे कोई पेड़ के तने के दूसरी तरफ बैठकर लघुशंका कर रहा हो। उसे बात समझते देर न लगी। उसने तलवार घुमाकर जो मारी तो उस सिपाही को आह करने का भी मौका नहीं मिला और उसकी गरदन साफ हो गई। कुछ मिनट बाद उसने देखा कि तीन पहरेदारों में से एक उसकी तरफ आ रहा है वह समझ गया कि यह पहले वाले को देखने आया है। आगन्तुक सैनिक ने ज्यों ही अपने मित्र सैनिक की लाश देखी। वह भौचक्का सा रहा गया परन्तु तब तक बीरू की तलवार ने उसका सिर भी सफा कर दिया।

अब बीरू ने तलवार उठाई और मस्ती से राजा के डेरे की तरफ चल दिया। उसे देखकर दोनों सैनिक चौंके। उन्होंने तलवार सीधी करली। बीरू को इनसे कुछ मतलब न था उसे तो राजा को मारना था। वह बड़ी सरलता से धोखा देकर डेरे में प्रविष्ट हो गया। बाहर के पहरेदार चीखने लगे; राजा अपनी तलवार की तरफ लपका परन्तु देर हो चुकी थी बीरू ने राजा को एक ही हाथ में स्वर्ग पहुंचा दिया; उसी डेरे में मंत्री और सेनापति भी थे। तीनों शायद विचार-विमर्श कर रहे थे। थोड़े ही समय में बीरू ने इन दोनों को भी समाप्त कर दिया। तब तक उस डेरे में अनेकों सैनिक घुस पड़े थे। बीरू उनसे टकराने लगा।

बीरू के सैनिकों ने चीख पुकार सुनकर पूरी शक्ति के साथ शत्रुओं पर आक्रमण कर दिया। शत्रु सेना के राजा व सेनापति मर जाने के कारण उनकी सेना का संचालन करने वाला कोई न था। अतः उन्होंने तुरन्त आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरफ के सैनिक जब राजा के खेमे में घुसे तो उन्होंने एक कोने में बीरू का मृत शरीर पाया। मंत्री के अंग रक्षकों ने तुरन्त बीरू के शव को उठाया और मन्त्री के घर की ओर उसे एक शुभ तथा एक अशुभ समाचार सुनाने को चल पड़े।

राजा जो सभी बातों से बेखबर था; उसने चिन्तित मुद्रा में दूसरे दिन प्रातः काल दरबार में प्रवेश किया और बोले "सभासदो एवं मंत्रियो! आपने क्या सोचा है?" मन्त्री ने कहा "महाराज पहले हमने सोचा था कि पत्र का जवाब आज सुबह देंगे; परन्तु गुस्ताखीवश मैंने जवाब कल रात ही दे दिया। 'क्या कहा? मुझसे बिना पूछे ही।' राजा क्रोध और आश्चर्य से बोले। "जी हां, हमारे शत्रु राजा ने भी उसका जवाब दे दिया है। "मन्त्री ने आदर पूर्वक कहा "कहो, उन्होंने क्या कहा?"राजा ने हाथ मलते हुए निराश शब्दों में कहा। मन्त्री ने अपने अंग रक्षकों को तुरन्त उत्तर लाने का संकेत किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग रक्षक सिर झुकाकर चले गये। राजा की समझ में न आया कि यह कैसा उत्तर है जो मन्त्री स्वयं नहीं सुना रहा है अपितु लाने को कह रहा है।

राजाकी आंखें फटी की फटी रह गईं जब उन्होंने देखा कि सैनिक त्रिशूल लेकर आया और त्रिशूल की प्रत्येक शूली पर एक-एक सिर लटका था जो कि शत्रु सेना के राजा, सेनापति और मंत्री का था। राजा प्रसन्नता से झूम उठे और उन्होंने मन्त्री की प्रशंसा प्रारम्भ कर दी। मन्त्री बोले "महाराज प्रशंसा तो उसकी कीजिए, जिसे इसका श्रेय मिला है। जिसने इन तीनों को मार कर हमें विजयी बनाया है।" राजा चौंक उठे और बोले "कहां है वह वीर" तभी मन्त्री के संकेत पर दो सिपाही एक पलंग लेकर अंदर आए जिस पर एक शव सफेद चादर से लिपटा पड़ा था। मंत्री ने उसकी तरफ इशारा किया। राजा ने उत्सुकतावश दौड़ कर चादर खींच दी। पलंग पर बीरू का शव पड़ा था उसके शरीर पर सैनिक वर्दी नहीं थी परंतु आज वह वही पुराना पायजामा और सफेद कमीज पहने था।

राजा और दरबारी शव देखते ही स्तम्भित हो गए। उनके दिमाग में बिजली सी कौंधी तथा दो वर्ष पुरानी अतीत की घटना आंखों में छा गई। जब कि उसे मृत्यु दण्ड दिया गया था और राजा ने कहा था मैं इसका मुंह कभी न देखूं। राजा को यह समझते देर न लगी कि मन्त्री ने उस मृत्यु दण्ड प्राप्त कैदी को अपने घर छुपाकर रक्खा तथा पूर्ण रूप से सैनिक शिक्षा देकर एक वीर सैनिक बनाया। राजा ने सोचा जिसका मैंने घर उजाड़ा था; उसने ही आज मेरा राज्य बचा लिया। घोषणा की कि इस लाश को पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ जलाया जाय तथा इसकी बूढ़ी माँ को भारी मुआवजा दिया जाय। ●

यह उदारता

एक महाशय, देशभक्त सेठ जमनालाल बजाज के बड़े कटु अलोचक थे। यों कहिए, उनके विरोधी बन गए थे।

ये महाशय एक बार बीमार हो गए। जमनालाल उनसे मिलने एये। पूछा, "कहो भाई, इतने म्लान और दुखी क्यों लगते हो?"

"तुमसे नाराज हूँ।"

"सो क्योंकर? तुम्हारी नाराजगी किस प्रकार दूर हो सकती है?"

"तुम्हारे विरुद्ध मैं ने एक पुस्तक लिखी है। उसे छपाना चाहता हूं। परंतु पैसे नहीं हैं। वह छप जाए तो मुझे शांति मिले।"

"उसे छपवाने में कितना खर्च होगा?"

"पाँच सौ रुपये।"

घर जाकर जमानालाल जी ने अपन सुपुत्र कमलनयन द्वारा पाच सौ रुपये उन महाशय के पास पहुँचा दिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

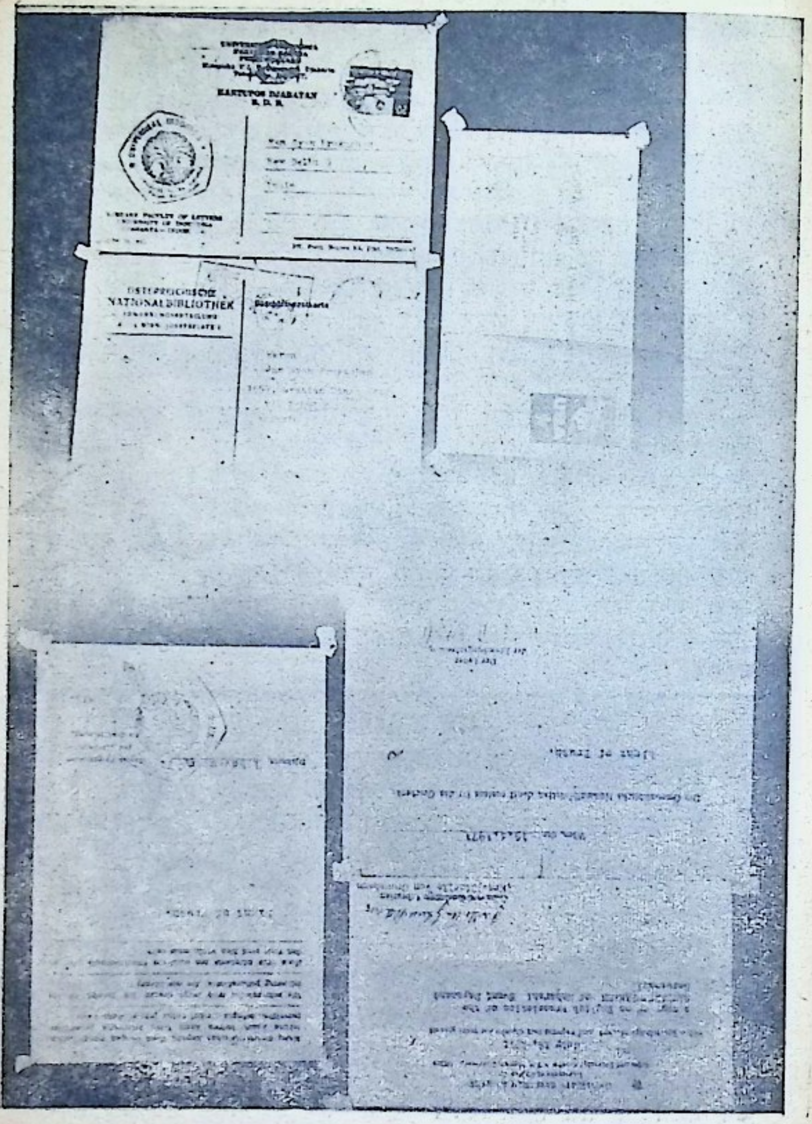

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों के पुस्तकालयों में
अँग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन
भेजना यदि आप उचित समझते हों तो
हमें एक पुस्तकालय के लिए
२८) भेज दीजिए।

हम आप की ओर से उपहार रूप में दोनों ग्रंथ रजिस्ट्री द्वारा भेज देंगे, और आप को सूचित कर दिया जाएगा कि कहां भेजा है।

अब तक—निम्न स्थानों पर भी हम यह उपहार भेज चुके हैं—
(मई अंक से आगे)

आप अधिक से अधिक पुस्तकालयों में भेजिए

39. University of california Berkeley (Calif) U. S. A.
40. University of Wisconsin Madison U.S.A,
41. Rice University Houstan Texas (U. S. A)
42. University of California Los Angels (Calif) S.A.U.)
43. University of Denver Denver (Colorade) U. S. A.
44. Library of University of Indonesia Djakarta.
45. Gozo Public library Gozo MALTA.
46. National Library MEXICO CITY.
47. Administrative Bibliotheek Stadhuis Amsterdam Netherlands.
48. Public Library Keizersgracht 444 Netherlands.
49. Central Library of the Country of Aurt Agder Narway.
50. Achive Nocional Panama city.
51. Library of the Fine Arts Academy, Warsaw Poland.

सामने के पृष्ठ पर विदेशों के पुस्तकालयों से प्राप्त पत्रों के चित्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

EMBASSY OF THE
UNITED STATES OF AMERICA
New Delhi, India

Jan Gyan Prakashan
1597 Hardian Singh Road
New Delhi 5

Gentlemen:

On behalf of Ambassador Keating, I am writing to thank you for your kindness in presenting him a copy of the book, "Light of Truth."

Sincerely,

R. Vich.

Richard H. Viets
Special Assistant
to the Ambassador

February [illegible], 1971.

Dear Sri Bhartendra Nath,

Dr. S. Radhakrishnan has asked me to acknowledge your letter of the [illegible] February, 1971 and the book "Light of Truth", an English translation of a renowned book by Swami Dayanand Saraswati and to thank you for sending it to him.

Yours sincerely,

[illegible signature]

P.S. to Dr. S. Radhakrishnan.

ACKNOWLEDGMENT

To the Ambassador
Embassy of France
New Delhi

ACKNOWLEDGMENT

To the Ambassador of German
Federal Republic
New Delhi

ACKNOWLEDGMENT

Smt. Indira Gandhi
New Delhi

ACKNOWLEDGMENT

Sri V. V. Giri
President
New Delhi

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

52. Ministry of Education Library Riyadh (Saudi Arabia)
53. Dur al Kitab Riyadh (Saudi Arabia)
54. General Directorate of Broadcasting Press Publication Jeddah, Saudi Arabia.
55. Library of Alhoram Mecca (Saudi Arabia)
56. Library of Islamic University, Medina (Saudi Arabia)
57. Gozo Public Library Victoria Gozo, MALTA.
58. Al Maktabah Al Wataniah (Syrian Arab Republic).
59. Dar ul Kuteb Al Zohiriah Damascus.
60. Chulalongkorn University Library Bangkok (Thailand).
6I. College of Education Library Bangkok (Thailand)
62- Library of the kesetsart University, Bengkhen, Bangkok
63. National Library Ta Wa Sugri, Bangkok (Thailand).
64. Carnegie Free Library, Trinidad and Tabago.
65. Central Library of Trinidad and Tobago,
66. Ankara University Library Turkey.
67. Beyazit Library Istanbul, Turkey.
68. General Ltbrary of Izmir Milli Cutuphane Turkey.
69. State V. I. Lenin Library of the U. S. S. R. Moscow
70. Library of the Centrae House of the Soviet Army, Moscow
71. K. D. Ushinsky State Educational Ltibrary: Moscow
72. All-Union State library of Foreign Literature, Moscow
73. State Public Historical Libraray of the R. S. F. S. R. Mosco
74. A. F. Myashrikyan State Public Lirary Erevan
75. Fumdamental Library of the Azerbaijan Baku

देश के महान नेताओं को भेंट में भेजे
अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश के प्राप्ति पत्र।

सामने के पृष्ठ पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के नियम

१. "जन-ज्ञान" दयानन्द संस्थान का मासिक मुख पत्र है। इसका उद्देश्य— (क) महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूर्ण करना (ख) संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद का पावन संदेश पहुँचाना और (ग) अज्ञान, पाखण्ड की समाप्ति के लिए प्रत्येक सम्भव पग उठाना है।

२. "जन-ज्ञान" में व्यक्तिगत राग-द्वेष और पार्टीबाजी के लेख व सूचनायें किसी भी स्थिति में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

३. वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध विज्ञापनों का प्रकाशन भी किसी स्थिति में नहीं होगा।

४. "जन-ज्ञान" का वार्षिक शुल्क दस रुपया, एक प्रति एक रु० है। सदस्यों को विशेषांक वार्षिक मूल्य में दिये जायेंगे।

५. प्रत्येक माह की दो-तीन तारीख को 'जन-ज्ञान' भेज दिया जाता है। यदि दस तक भी न मिले तो समझिये कि आपका 'जन-ज्ञान' कोई और पढ़ रहा है। दस तारीख तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो अपने पोस्ट आफिस को पत्र लिखें और उसकी एक प्रति हमें भेजें। पत्र प्राप्त होने पर 'जन-ज्ञान' दुबारा बिना टिकट लगाये बैरंग भेजा जायेगा। **बीस तारीख के बाद या बिना पोस्ट मास्टर के पत्र की प्रतिलिपि के किसी भी शिकायती पत्र पर ध्यान नहीं दिया जायेगा।**

६. विशेषांक सुरक्षित मंगाने के लिए १ रुपये के टिकट पन्द्रह दिन पूर्व आने चाहियें। विशेषांक किसी भी स्थिति में दुबारा न भेजे जायेंगे।

७. किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

८. समस्त चैक, मनीआर्डर आदि 'जन-ज्ञान' **Jan-Gyan** के नाम भेजें।

९. नये सदस्य धन भेजते समय **'नया सदस्य'** शब्द अवश्य लिखें और मनी-आर्डर कूपन पर पता अवश्य लिखें।

१०. "जन-ज्ञान" के सदस्यों को 'जन-ज्ञान प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य पौने मूल्य में दिया जायेगा।

प्रबन्धक

जन-ज्ञान (मासिक)

१५६७, हरध्यानसिंह रोड़, करौल बाग,
नई दिल्ली-५

फोन : ५६६६३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित

प्रचार के लिए

आकर्षक वैदिक साहित्य

1. Light of Truth : अंग्रेजी "सत्यार्थ-प्रकाश" —मूल्य १०)। कपड़े की जिल्द १२)।
2. Life and Teachings of Swami Dayanand — Rs. 10.00
3. Teachings of Swami Dayanand — Rs. 0.75
4. Ten Commandments — Rs. 1.00
5. Message of the Arya Samaj to the Universe — मूल्य ३० पैसे। २५) सैकड़ा
6. Vedic-Prayer — Rs. 2.50
7. Dayanand the Great (दूसरा नया संस्करण) — मूल्य १५ पैसे
8. An introduction to the Arya Samaj (नया संस्करण) — मू० १५ पैसे
9. The Great Gaytri — मूल्य २० पैसे १५) सैकड़ा
10. The Vedic Fundamentals — Rs. 2.50

११. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी नया सस्करण) — मूल्य ६० पैसे
१२. योगेश्वर कृष्ण — ४० पैसे
१३. क्रांतिकारी दयानन्द — ७५ पैसे
१४. धर्म ग्रन्थावलोकन — १.५०
१५. गीत-मंजरी—नया संस्करण — १.००
१६. ज्ञान प्रकाश — मूल्य १.५० पैसे
१७. वेद-ज्योति (४०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह) — मूल्य ३.०० पैसे
१८. प्रार्थना मंत्र व्याख्या — मूल्य ०. ४० पैसे
१९. भारत की अवनति के ७ कारण — मूल्य ५० पैसे। ३५. ०० सकड़ा
२०. वैदिक-अध्यात्म ज्योति — मूल्य २.००
२१. योग-जीवन — मूल्य २.००
२२. नीति-दोहावली — मूल्य ०.८० पैसे
२३. ज्ञान-ज्योति — मूल्य ३.००
२४. माँ-गायत्री — मूल्य १.००
२५. वैदिक-सिद्धान्त — मूल्य २.००

पौष संवत् २०२८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२६, आर्य-समाज के नियम — मूल्य ०.८० पैसे
२७. लाल-आंधी — मूल्य ०.८० पैसे
२८. धर्म-चिन्तन — मूल्य २.००
२९. दहला पागल हो गया — मूल्य ०.८० पैसे
३०. वैदिक विचारधारा — मूल्य ०.२५ पैसे
३१. वैदिक भक्तिवाद — मूल्य २५ पैसे । १५ सैकड़ा
३२. विश्व को आर्य समाज का सन्देश — १५ सैकड़ा
३३. उपनिषद-त्रयी — ८० पैसे
३४. स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र — पृष्ठ २६० ४० चित्र—१०० रु० सैकड़ा

१०) सैकड़ा के उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट

३५. आर्य समाज क्या मानता है ? —मदनमोहन विद्यासागर
३६. विश्व को वेद का सन्देश —भारतेन्द्र नाथ
३७. महर्षि दयांनन्द की विशेषताएँ =महात्मा नारायण स्वामी
३८. आर्य समाज की विचारधारा गंगा प्रसाद उपाध्याय
३९. आर्यसमाज की मान्यताएँ —पं० रामचन्द्र देहलवी
४०. आर्य कौन ? —रघुनाथ प्रसाद पाठक
४१. आर्यसमाज के दस नियम —रघुनाथ प्रसाद पाठक
४२. ईसाई पादरी उत्तर दें। —स्वामी श्रद्धानन्द
४३. A Challenge to the Christian Fait ३) सैकड़ा
४४. Bible in the Balance चार्ल्स स्मिथ १५ सैकड़ा
४५. ज्ञान विज्ञान का शत्रु ईसाई मत —ओम प्रकाश त्यागी १०) सैकड़ा
४६. पोप की सेना का भारत पर हमला —भारतेन्द्र नाथ १०) सैकड़ा
४७. ईसाइयों की प्रचार प्रणाली —जगत्कुमार शास्त्री १०) सैकडा
४८. पादरियों को चुनौती —स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती १०) सैकड़ा
४९. बाइबल को चुनौती —ओमप्रकाश त्यागी १५) सैकड़ा
५०. और पादरी भाग गया —ओमप्रकाश त्यागी १०) सैकड़ा
५१. ईसाइयत की वास्तविकता —शांतिप्रकाश महोपदेशक १०) सैकड़ा
५२. बाइवल कसौटी पर —चार्ल्स स्मिथ १५) सैकड़ा

●

जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल वाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

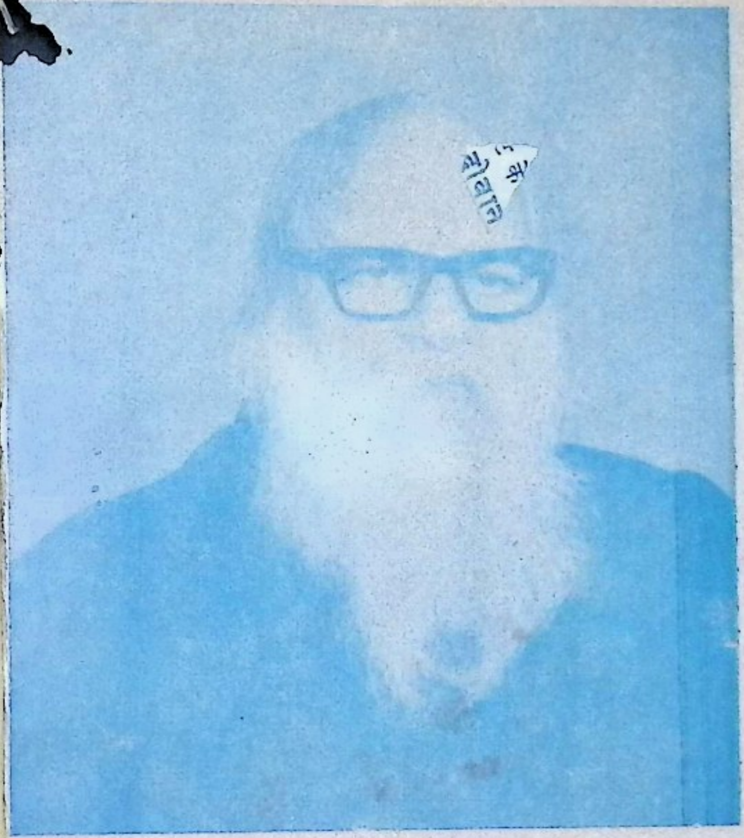

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा आयोजित मलकाना शुद्धि आन्दोलन के संचालक—आर्य समाज के गौरव और अद्भुत व्यक्तित्व के धनी—

श्री ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी महाराज

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण व महाभारत के उद्भट विद्वान् एवं व्याख्याता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) दिसम्बर १९७१ रजिस्टर्ड नं. डी. १६३१
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

टंकारा ट्रस्ट [illegible] कार्यकर्ता प्रधान

[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi